THE LARGEST CIRCULATED AND READ HINDI DAILY IN TELANGANA & ANDHRA PRADESH

स्वतंत्र वार्ता

epaper.vaartha.com

वर्ष-29 अंक : 250 (हैदराबाद, निजामाबाद, विशाखापट्टणम, तिरुपति से प्रकाशित) **मार्गशीर्ष शु.1 2081 सोमवार, 2 दिसंबर-2024**

प्रधान संपादक – **डॉ. गिरीश कुमार संघी** हैदराबाद नगर ❊ **पृष्ठ : 16 मूल्य : 8 रुपये**

आरबीआई/बैंकों/सरकारी एजेंसियों/कूरियर कंपनियों के अधिकारियों के नाम से आने वाले ऐसे **साइबर अपराधियों** के ऑडियो/वीडियो कॉल से सावधान रहें, जो कानूनी कार्रवाई करने की **धमकी देते हैं** या **तुरंत पैसे की मांग** करते हैं या आपके बैंक खाते या डेबिट/क्रेडिट कार्ड को **फ्रीज़** या **ब्लॉक** करने का डर दिखाते हैं।

क्या न करें

- **घबराएं नहीं –** धोखेबाज़ आपको फंसा सकते हैं
- कोई भी निजी/वित्तीय जानकारी **साझा न करें**
- भुगतान करने के लिए अज्ञात लिंक पर **क्लिक न करें**

क्या करें

- हमेशा कॉल करने वाले/फ़ंड अनुरोध की **वास्तविकता की पुष्टि** करें
- cybercrime.gov.in पर **तुरंत रिपोर्ट करें** या 1930 पर सहायता के लिए कॉल करें

अधिक जानकारी के लिए, **https://rbikehtahai.rbi.org.in/fraud** पर जाएं
फ़ीडबैक देने के लिए, **rbikehtahai@rbi.org.in** को लिखें

जनहित में जारी
भारतीय रिज़र्व बैंक
RESERVE BANK OF INDIA
www.rbi.org.in

ताजमहल, लाल किला, कुतुब मीनार

और चार मीनार भी तोड़ दो, सब मुसलमानों ने बनाए हैं: मल्लिकार्जुन खरगे

नई दिल्ली, 1 दिसंबर (एजेंसियां)। संभल मामले पर कांग्रेस नेता मल्लिकार्जुन खरगे का बयान सामने आया है। उन्होंने इस मुद्दे को लेकर सरकार पर करारा हमला बोला है। खरगे ने कहा कि ये लोग कह रहे हैं कि पहले मंदिर था और अब मस्जिद है। ये कह रहे हैं कि मस्जिद के नीचे मंदिर है। मोहन भागवत ने 2022 में कहा था कि हर मस्जिद में शिवालय ढूंढने का काम ना करें। आपके लोग ऐसा बोलते हैं फिर भी आप यह करते हैं। खरगे ने कहा कि 1947 से पहले धार्मिक स्थलों की यथास्तिथि रखने के लिए 1991 में कानून बनाया गया लेकिन उसको भी नहीं माना जा रहा है। मुझे लगता है कि मोहन भागवत का बयान सिर्फ दिखावे के लिए है। पीछे से कुछ और करते हैं। जाओ लाल किला तोड़ दो, कुतुब

मीनार को तोड़ दो, ताजमहल को तोड़ दो। जाओ हैदराबाद का चार मीनार भी तोड़ दो क्योंकि सब मुसलमानों ने बनाए हैं। खरगे ने कहा कि मैं खुद हिन्दू हूं। मेरा नाम मल्लिकार्जुन है। 12 ज्योतिर्लिंगों में से एक मेरा भी नाम है। मैं सेकुलर हिन्दू हूं। आप सेकुलर हिन्दू को नहीं मानते।

वक्फ बिल पर कही ये बात

खरगे ने वक्फ बिल पर कहा, 'हम वक्फ बिल का विरोध कर रहे हैं। कहीं गलती है तो सुधार हो सकता है। लेकिन तोड़ फोड़ करना, देश को बर्बादी की तरफ ले जाएगा।' हालही में कांग्रेस ने महाराष्ट्र और हरियाणा में हार की समीक्षा की थी। कांग्रेस वर्किंग कमेटी की मीटिंग में पार्टी अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे ने कांग्रेस के नेताओं से खरी-खरी बात की थी। खरगे ने कहा था कि जहां जहां चुनाव हुए हैं वहां इंडी. अलायंस की दूसरी पार्टियों ने चुनाव में अच्छा प्रदर्शन किया। जम्मू कश्मीर और झारखंड में सहयोगी दलों की सरकार भी बनी है लेकिन कांग्रेस का प्रदर्शन उम्मीद के मुताबिक नहीं रहा। खरगे ने कहा कि जब लोकसभा चुनाव में कांग्रेस का प्रदर्शन बेहतर हो सकता है तो फिर पांच महीने के बाद विधानसभा चुनाव में कांग्रेस की हालत खराब क्यों हुई, ये सोचने की जरूरत है।

पूर्व बीएसपी विधायक रामबाई के पति सहित 25 को आजीवन कैद

दमोह, 1 दिसंबर (एजेंसियां)। दमोह जिले के हटा निवासी कांग्रेस नेता देवेंद्र चौरसिया की हत्या के मामले में पथरिया से पूर्व बीएसपी विधायक रामबाई सिंह परिहार के पति गोविंद सिंह, देवर कौशलेंद्र सिंह सहित 25 आरोपियों को हटा अपर सत्र न्यायाधीश सुनील कुमार कौशिक ने शनिवार शाम आजीवन कारावास की सजा सुना दी। एक आरोपी को सबूतों के अभाव में दोष मुक्त किया गया है। वहीं, एक आरोपी फरार होने के कारण उसके मामले की सुनवाई नहीं हो सकी। इस हत्याकांड में कुल 27 लोगों को आरोपी बनाया गया था। सुबह से ही हटा न्यायालय में बड़ी संख्या में पुलिस बल तैनात किया गया था और इस मार्ग से वाहनों की आवाजाही भी बंद कर दी गई थी। 15 मार्च 2019 को कांग्रेस नेता देवेंद्र चौरसिया की हत्या हुई थी। इस मामले में मृतक देवेंद्र चौरसिया के भाई महेश चौरसिया की रिपोर्ट पर हटा पुलिस ने 27 आरोपियों के खिलाफ एफआईआर दर्ज की थी,

दिल्ली कूच के लिए किसानों का प्लान तैयार, छह से पैदल मार्च

चंडीगढ़, 1 दिसंबर (एजेंसियां)। 13 फरवरी से शंभू बॉर्डर पर बैठे किसान सभी फसलों पर एमएसपी दिए जाने की मांग को लेकर 6 दिसंबर को दिल्ली के लिए पैदल मार्च शुरू करेंगे। संयुक्त किसान मोर्चा की ओर से चंडीगढ़ में हुई बैठक के बाद आंदोलन को आगे बढ़ाने के लिए किसान जत्थेबंदियों ने यह फैसला किया है। हरियाणा में चार जगहों पर जत्था रुकेगा, जिसमें अंबाला, मोड मंडी, खानपुर जट्टा और पीपली शामिल है। संयुक्त किसान मोर्चा के नेता सरवन सिंह पंधेर ने इस संबंध में जानकारी दी। उन्होंने बताया कि सुबह 9 से लेकर 5 बजे तक उनका दिल्ली के लिए रोजाना मार्च जारी रहेगा। अगर रास्ते में समय पर वह तय जगह नहीं पहुंच पाए तो वह सड़क पर ही मोर्चा लगा देंगे। इसी तरह मोर्चे की तरफ से सोमवार से वॉलंटियर को जोड़ने के लिए मेंबरशिप ड्राइव भी शुरू की जाएगी। दोपहर 3 बजे के बाद मोर्चे के सोशल मीडिया अकाउंट पर इस संबंध में फार्म उपलब्ध करवाए जाएंगे।

'सरकार चर्चा करना नहीं चाहती'

संसद सत्र स्थगित होने पर कांग्रेस ने भाजपा को ठहराया जिम्मेदार

नई दिल्ली, 1 दिसंबर (एजेंसियां)। विपक्ष के हंगामे के बीच संसद के शीत सत्र के पहले हफ्ते में चर्चा न होने पाने पर कांग्रेस नेता जयराम रमेश ने प्रतिक्रिया दी। उन्होंने संसद में चर्चा न हो पाने के लिए केंद्र सरकार को जिम्मेदार ठहराया। कांग्रेस नेता ने आरोप लगाते हुए कहा कि सरकार नहीं चाहती कि संसद चले। उन्होंने कहा कि विपक्ष चाहता है कि संसद में अदाणी मुद्दा, मणिपुर में जारी हिंसा जैसे मुद्दों पर चर्चा हो, लेकिन सरकार बार बार संसद की कार्यवाही को स्थगित कराने में सहयोग कर रही है।

जयराम रमेश ने लगाए केंद्र पर आरोप

कांग्रेस नेता जयराम रमेश ने कहा, 'सरकार नहीं चाहती कि संसद चले। विपक्ष चाहता है कि संसद में अदाणी मुद्दे, मणिपुर में जारी हिंसा, संभल घटना पर चर्चा हो, लेकिन सरकार बार बार संसद की कार्यवाही को स्थगित कराने में सहयोग कर रही है। मैं पहली बार ऐसा देख रहा हूं कि जब भी हम कोई मुद्दा उठाते हैं तो संसद स्थगित हो जाती है। उन्होंने आगे कहा, सरकार अदाणी मुद्दे, मणिपुर हिंसा और संभल घटना पर चर्चा करना नहीं चाहती है। सरकार इन मुद्दों पर चर्चा करने से क्यों भाग रही है? भाजपा सांसद संसद सत्र स्थगित कराने आते हैं और हम मुद्दे उठाने जाते हैं।

लोगों के अधिकार अपने कारोबारी दोस्तों को सौंप रही सरकार, बीजेपी पर बरसीं प्रियंका

वायनाड, 1 दिसंबर (एजेंसियां)। संसद में वायनाड की सांसद के तौर पर शपथ लेने के बाद प्रियंका गांधी वाड्रा पहली बार केरल मननथावाडी पहुंची। वहां उन्होंने एक सार्वजनिक रैली के दौरान लोगों का धन्यवाद किया। उन्होंने कहा कि मैं आपके प्यार और सपोर्ट की वजह से ही केरल में सांसद तौर पर चुनी गई हूं। मुझे अपना संसद सदस्य बनाने के लिए आपको दिल की गहराई से धन्यवाद देती हूं। उन्होंने केंद्र सरकार पर तीखा हमला बोलते हुए कहा कि आज लड़ाई उस ताकत के खिलाफ है जो लोगों के अधिकारों को कमजोर कर रही है

और उन्हें अपने कुछ कारोबारी मित्रों को सौंप रही है। यूडीएफ कार्यकर्ताओं ने बहुत ही कड़ी मेहनत के साथ काम किया। आप सभी ने मेरी जीत के लिए बहुत मेहनत की है। इसके लिए भी आप सभी की बहुत शुक्रगुजार हूं। उन्होंने कहा कि इतने बड़े स्तर पर जीत तभी संभव जब ग्राउंड लेवल पर बहुत मेहनत के साथ काम किया गया हो। प्रियंका गांधी वाड्रा ने स्थानीय लोगों से बात की और वहां की समस्याओं के बारे में भी पूछा। आज हम अपने राष्ट्र की भावना और भारत की एकता के लिए लड़ रहे हैं।

सरकार से उठ रहा है लोगों का भरोसा

प्रियंका गांधी वाड्रा ने कहा कि देश को संभालने वाले लोगों से जनता का विश्वास उठता जा रहा है। उन्होंने लोगों को भरोसा दिलाया कि वो सांसद के तौर पर संसद में उनकी ही प्रतिनिधि हैं। जनता से जुड़ी मुश्किलों को वो संसद में जरूर उठाएंगी।उन्होंने कहा कि मैं आपकी समस्याओं का समाधान करने की पूरी कोशिश करूंगी। मैं आपके मुद्दों को लेकर हमेशा आपके साथ खड़ी रहूंगी। उन्होंने कहा कि हम एक ऐसी ताकत के खिलाफ लड़ रहे हैं जो उन संस्थानों को खत्म करने के लिए अपनी पूरी ताकत लगा रही है, जिन पर हमारा देश बना था। उन्होंने वायनाड के लोगों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर उनकी जरूरतों के लिए लड़ने का वादा किया। वायनाड से प्रियंका गांधी वाड्रा को 4.1 लाख वोटों के बड़े अंतर जीत हासिल हुई थी। जीत के बाद कांग्रेस महासचिव प्रियंका गांधी वाड्रा ने गुरुवार को सांसद के रूप में शपथ ली। शपथ के दौरान उन्होंने दाहिने हाथ में संविधान की किताब भी पकड़ रखी थी।

बेटी के साथ अकेले सोई थी महिला, पति के दोस्तों ने घर में घुसकर किया गैंगरेप

मुरैना, 1 दिसंबर (एजेंसियां)। मध्य प्रदेश के मुरैना से एक गैंगरेप का मामला सामने आया है। मनचलों ने महिला के घर में घुसकर इस घिनौने अपराध को अंजाम दिया। ये सभी मनचले महिला के पति के दोस्त थे। घटना जिले के पोरसा थाना क्षेत्र अंतर्गत ग्राम नंदपुरा में बीते 27 नवंबर की रात की है। पीड़ित महिला के परिजन पोरसा शहर में एक शादी समारोह में गए थे, तभी इन आरोपियों ने इस घिनौनी हरकत को अंजाम दिया। घर में महिला अकेली अपनी बच्ची के साथ सो रही थी। रात लगभग 11:30 बजे के बाद तीन युवक दीवार फांदकर घर में घुस गए। तीनों युवकों ने महिला को मुंह दबाकर पटक दिया और बारी-बारी से दुष्कर्म किया। इसी दौरान महिला के परिजन शादी समारोह से वापस आ गए। परिजनों को देखकर आरोपी फरार हो गए। ये सबकुछ देख परिजन भयभीत हो गए। अगले दिन महिला अपने परिजनों के साथ पोरसा थाने पहुंचकर शिकायत दर्ज कराई। पुलिस ने तीनों आरोपियों के खिलाफ घर में घुसकर गैंगरेप करने का मामला दर्ज किया।

महाराष्ट्र में सीएम पर सस्पेंस के बीच प्रियंका चतुर्वेदी का एनडीए पर तंज

मुंबई, 1 दिसंबर (एजेंसियां)। महाराष्ट्र में विधानसभा चुनाव का नतीजा आए आठ दिन हो गए हैं, लेकिन अभी भी मुख्यमंत्री पद पर सस्पेंस बरकरार है। ऐसे में विपक्ष के नेता लगातार महायुति गठबंधन पर हमलावर हो रहे हैं। इस बीच शिवसेना यूबीटी नेता प्रियंका चतुर्वेदी ने अब तक प्रदेश के नए मुख्यमंत्री का एलान न करने पर एनडीए पर तंज कसा है।

'सारे बराती आ रहे हैं, लेकिन दूल्हा सीएम कौन है?'

उन्होंने कहा, सारे बराती आ रहे हैं, लेकिन कोई नहीं जानता कि दूल्हा (सीएम) कौन है। शिवसेना यूबीटी नेता प्रियंका चतुर्वेदी ने न्यूज एजेंसी पीटीआई से बात करते हुए कहा, ₹राज्यपाल से सरकार बनाने के लिए कोई अनुरोध नहीं किया गया है। 25 नवंबर को विधानसभा का कार्यकाल समाप्त हो गया है। उन्हें इतना बड़ा बहुमत मिला है, आठ दिन बीत गए हैं और कोई संवाद नहीं है। हर कोई दिखा रहा है कि सब ठीक है, लेकिन सब ठीक नहीं है।

यह जनादेश का अपमान है- प्रियंका चतुर्वेदी

उन्होंने कहा, जो वादे किए गए थे, उन्हें पूरा किया जाना चाहिए था। काम शुरू किया जाना चाहिए था। उसी दिन झारखंड चुनाव के नतीजे आए, सरकार बन गई। यहां कोई स्पष्टता नहीं है। चंद्रशेखर बावनकुले ने बताया कि शपथ ग्रहण 5 दिसंबर को होगा। पीएम मोदी आ रहे हैं, सारे बराती आ रहे हैं, लेकिन कोई नहीं जानता कि दूल्हा (सीएम) कौन है, यह लोगों द्वारा दिए गए जनादेश का अपमान है।

5 दिसंबर को होगा शपथ ग्रहण

महाराष्ट्र में मुख्यमंत्री पद के उम्मीदवार की घोषणा पर सस्पेंस के बीच बीजेपी के प्रदेश अध्यक्ष चंद्रशेखर बावनकुले ने शनिवार को घोषणा की कि महायुति सरकार का शपथ ग्रहण समारोह 5 दिसंबर को शाम 5 बजे आजाद मैदान में होगा। बावनकुले ने यह भी बताया कार्यक्रम में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी शामिल होंगे। बता दें कि महाराष्ट्र विधानसभा चुनाव में महायुति गठबंधन ने 20 नवंबर को हुए विधानसभा चुनाव में शानदार जीत हासिल की। बीजेपी ने 132 सीट, शिवसेना ने 57 और अजित पवार गुट ने 41 सीटों पर जीत दर्ज की।

'एकनाथ शिंदे का बीजेपी ने किया इस्तेमाल, दूध से मक्खी की तरह निकाल फेंका', कांग्रेस ने कसा तंज

नई दिल्ली, 1 दिसंबर (एजेंसियां)। महाराष्ट्र में विधानसभा चुनाव का नतीजा आए 10 दिन होने वाले हैं, लेकिन अभी भी मुख्यमंत्री पद पर सस्पेंस बरकरार है। अब सीएम पद पर कांग्रेस सांसद प्रमोद तिवारी का बयान सामने आया है। उन्होंने कहा, 'महायुति गठबंधन की कहानी धोखे, राजनीतिक पतन की कहानी है। पहले एकनाथ शिंदे ने अपने राजनीतिक गुरु के परिवार को धोखा दिया।' कांग्रेस सांसद ने आगे कहा, 'बीजेपी ने उन्हें महाराष्ट्र का मुख्यमंत्री बनाया और अब उनका इस्तेमाल करने के बाद, इस्तेमाल करो और फेंक दो की नीति के तहत उन्हें मक्खी की तरह बाहर फेंक दिया।

एकनाथ शिंदे विश्वासघात की सजा भुगत रहे हैं। भाजपा की राजनीति में कोई विश्वसनीयता और विश्वास नहीं है।' कांग्रेस सांसद प्रमोद तिवारी ने भी यह कहा, 'अभी तक तो यही लगता है भाजपा संख्याबल के आधार पर मुख्यमंत्री चाहती है और अजित पवार के साथ भी ऐसा ही होगा।' वहीं फिलहाल कार्यवाहक सीएम एकनाथ शिंदे अस्वस्थ चल रहे हैं और उनके पैतृक गांव में इलाज करा रहे हैं। हालांकि, अब बताया जा रहा है कि वह धीरे-धीरे ठीक हो रहे हैं और रविवार शाम को मुंबई लौटेंगे। इस बीच शिवसेना नेता संजय शिरसाट ने खुलासा किया कि कार्यवाहक मुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे की ओर से रविवार तक एक महत्वपूर्ण निर्णय लेने की उम्मीद है।

सहयोगी दलों को मंत्रालयों के आवंटन के बारे में पूछे जाने पर शिरसाट ने कहा कि सोमवार शाम तक सब कुछ स्पष्ट हो जाएगा। शिरसाट ने एएनआई से कहा, 'मेरे विचार से, जब भी एकनाथ शिंदे को आत्मचिंतन के लिए समय की आवश्यकता महसूस होती है तो वह अपने पैतृक गांव चले जाते हैं। कल शाम तक वह कोई बड़ा फैसला लेंगे।'

अभी भी उलझा है राज कुंद्रा का मामला

ईडी ने समन जारी कर आज पूछताछ के लिए बुलाया

मुंबई, 1 दिसंबर (एजेंसियां)। प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) ने अभिनेत्री शिल्पा शेट्टी के पति और व्यवसायी राज कुंद्रा को अश्लील फिल्मों के कथित वितरण से जुड़े धनशोधन मामले में पूछताछ के लिए बुलाया है। आधिकारिक सूत्रों ने रविवार को यह जानकारी दी। उन्होंने बताया कि कुंद्रा को इस सप्ताह मामले के जांच अधिकारी के समक्ष पेश होने के लिए कहा गया है। सूत्रों ने कहा कि मामले में आरोपी कुछ अन्य लोगों को भी तलब किया गया है।

केंद्रीय एजेंसी ने 29 नवंबर को कुंद्रा के मुंबई और उत्तर प्रदेश के कुछ शहरों में स्थित अन्य व्यक्तियों के परिसरों पर छापे मारे थे। मई, 2022 का धनशोधन का यह मामला कुंद्रा और अन्य आरोपियों के खिलाफ दायर मुंबई पुलिस की कम से कम दो प्राथमिकियों और आरोपपत्र से जुड़ा है। इस मामले में कुंद्रा और कुछ दूसरे आरोपियों को पुलिस ने गिरफ्तार किया था तथा बाद में उन्हें जमानत मिल गई थी। कुंद्रा के खिलाफ यह धनशोधन का दूसरा मामला है। ईडी ने इस साल की शुरुआत में क्रिप्टो करंसी मामले में कुंद्रा और शेट्टी की 98 करोड़ रुपये की संपत्ति जब्त की थी लेकिन दंपति को ईडी के इस कुर्की आदेश के खिलाफ बंबई उच्च न्यायालय से राहत मिल गई थी।

लेकिन अब ईडी इस मामले की जांच कर रही है। बीते रोज राज कुंद्रा के कई ठिकानों पर छापेमार कार्रवाई की गई थी। बता दें कि ईडी के जारी नोटिस के मुताबिक राज कुंद्रा को सोमवार 2 दिसंबर को सुबह 11 बजे ईडी के दफ्तर में पूछताछ के लिए पहुंचना होगा। इससे पहले बीते रोज राज कुंद्रा ने अपने इंस्टाग्राम पर एक पोस्ट किया था। जिसमें राज कुंद्रा ने ये कहा था कि वे ईडी के साथ जांच में पूरा सहयोग कर रहे हैं। हालांकि अभी तक मामला सुलझा नहीं है। अब ईडी लगातार इस मामले की जांच कर रही है।

अब इस मंदिर के पास नहीं दे सकते राजनीतिक या नफरत फैलाने वाला भाषण

तिरुपति, 1 दिसंबर (एजेंसियां)। आंध्र प्रदेश के तिरुमला मंदिर को लेकर एक खास चेतावनी जारी की गई है। भगवान वेंकटेश्वर स्वामी मंदिर के संरक्षक तिरुमला तिरुपति देवस्थानम (टीटीडी) ने तिरुमला में राजनीतिक और नफरत फैलाने वाले भाषणों पर प्रतिबंध लगा दिया है। टीटीडी ने सोशल मीडिया पर एक पोस्ट में कहा कि यह निर्णय हाल की उन घटनाओं के मद्देनजर लिया गया है, जिनमें नेताओं सहित कुछ लोगों ने दर्शन के बाद मंदिर परिसर के पास मीडिया के सामने राजनीतिक या भड़काऊ बयान दिए हैं।

इससे आध्यात्मिक शांति भंग हुई है। इसके साथ ही टीटीडी ने सभी आगंतुकों से इस निर्णय का सम्मान करने का आग्रह किया और उल्लंघन करने वालों के खिलाफ कानूनी कार्रवाई की चेतावनी दी है। बोर्ड ने तिरुमला के दिव्य और शांत वातावरण को संरक्षित करने को लेकर अपनी प्रतिबद्धता पर जोर दिया है। आंध्र प्रदेश के पूर्व मुख्य सचिव एल.वी.सुब्रह्मण्यम ने बताया कि यह नियम लंबे समय से लागू है। कई ऐसे कई उदाहरण हैं, जहां उल्लंघन करने वालों को दंडित किया गया है। मालूम हो कि सुब्रमण्यम टीटीडी के कार्यकारी अधिकारी के रूप में भी काम कर चुके हैं।

भारत और बांग्लादेश में कोई फर्क नहीं है, पीडीपी चीफ महबूबा मुफ्ती ने क्यों दिया विवादास्पद बयान?

जम्मू, 1 दिसंबर (एजेंसियां)। पीडीपी चीफ महबूबा मुफ्ती ने बांग्लादेश और भारत को लेकर बड़ा बयान दिया है। महबूबा मुफ्ती ने कहा, अभी देखिए बांग्लादेश में बहुत बुरा हाल है। हमारे जो हिंदू भाई है उनके साथ बड़ी नाइंसाफी हो रही है, अत्याचार हो रहा है, तो यहां हम अल्पसंख्यकों के साथ नाइंसाफी कर रहे हैं तो फर्क क्या है? महबूबा मुफ्ती संभल हिंसा और अजमेर में मौजूद दरगाह में मंदिर के दावे को लेकर बात कर रही थी, इस बीच उन्होंने बांग्लादेश से इसको जोड़ते हुए कहा, हमारा इतना बड़ा देश है जोकि एक धर्मनिरपेक्ष देश है, तो जब हम में और बांग्लादेश में कोई फर्क ही नहीं रहेगा, हम अल्पसंख्यकों को तंग करेंगे, उनकी मस्जिदों को तोड़ कर शिवलिंग ढूंढेंगे, बांग्लादेश में अगर कोई हिंदू हमारा भाई वहां के अत्याचार के बारे में बात करता है तो उसको जेल में डाल देंगे, यहां उमर खालिद को जेल में डाल रखा है, तो फिर फर्क क्या है, उन्होंने कहा, मुझे तो लगता है कि भारत और बांग्लादेश में कुछ भी फर्क नहीं है।

"आपस में लड़ाया जा रहा है"

पीडीपी चीफ महबूबा मुफ्ती ने कहा, हालात अच्छे नहीं है, ऐसा है कि हमारे जो लीडर रहे हैं गांधी जी से लेकर जवाहर लाल नेहरू हो, जितने भी लीडर रहे हैं उन्होंने इस मुल्क को हिंदू, मुस्लिम, सिख , ईसाई सब का घर बनाया है। उन्होंने आगे कहा, जो यह हालात हो रहे हैं, आपस में लड़ाया जा रहा है और मुझे डर है, खौफ है कि यह जो हालात है वो 1947 में जो हालात थे यह कहीं न कहीं हमें उसी तरफ लेकर जा रहे हैं।

संभल हिंसा पर जताया अफसोस

महबूबा मुफ्ती ने आगे कहा, जब नौजवान नौकरी की डिमांड करता है तो उनको नौकरी नहीं मिलती है, अच्छे अस्पतालों की डिमांड करते हैं लोग तो अच्छे अस्पताल नहीं है, अच्छी शिक्षा नहीं है। हमारी गलियां, हमारी सड़कें आप ठीक नहीं करते हो, तो आप क्या करते हो कि मस्जिद को गिरा कर इसमें मंदिर ढूंढ लो। यही हो रहा है। संभल का जिक्र करते हुए महबूबा मुफ्ती ने कहा, अभी देखिए संभल में कितना बुरा हादसा हो गया है। वो बेचारे जिनका कोई लेना-देना नहीं, कोई दुकान पर काम करता था, कोई रेड़ी पर काम करता था उन्हें गोली मार दी। उन्होंने आगे कहा, आप इस पर बात करोगे तो आप को ही जेल में डाल देंगे।

बीजेपी ने किया पलटवार

महबूबा मुफ्ती के बयान पर बीजेपी नेता रविंदर रैना ने पलटवार किया है। उन्होंने कहा, महबूबा मुफ्ती का बांग्लादेश के साथ भारत की तुलना करने वाला बयान बहुत विवादास्पद, दुर्भाग्यपूर्ण है। बांग्लादेश में इस वक्त अल्पसंख्यक समुदायों को चुन-चुनकर निशाना बनाया जा रहा है। महबूबा मुफ्ती का बांग्लादेश को लेकर भारत के खिलाफ दिया गया बयान राष्ट्रद्रोह है। भारत में हिंदू, मुस्लिम, सिख, ईसाई सब सुरक्षित हैं। साथ ही उन्होंने कहा, महबूबा मुफ्ती का बयान गैर जिम्मेदाराना है, इसे राष्ट्रद्रोह की नजर से देखा जाना चाहिए और उनके खिलाफ कानूनी कार्रवाई होनी चाहिए।

अजमेर को लेकर क्या कहा?

महबूबा मुफ्ती ने अजमेर की दरगाह का जिक्र करते हुए कहा, अब देखिए अजमेर शरीफ दरगाह 800 साल पुरानी जहां हिंदू, मुस्लिम, सिख सब जाते हैं और वो हमारे भाई चारे की गंगा जमना तहजीब की निशानी है। उसके पीछे भी पड़ गए हैं। उनको भी खोदो, उसके नीचे भी देखो शायद मंदिर निकल आए। उन्होंने आगे कहा, मुझे समझ नहीं आता है यह कब तक चलेगा। महबूबा मुफ्ती ने चुनाव की वोटिंग को लेकर भी निशाना साधा। उन्होंने कहा, वोटिंग के दौरान चुनाव का प्रतिशत अलग होता है और नतीजों के दौरान अलग, इसे लेकर भी हमारे मन में संदेह है। वो एक राज्य को छोड़ देते हैं जिससे विपक्ष बोल न सके। अगर 6 बजे वोटिंग बंद हुई और 58 फीसदी वोट पड़ा था तो 3 घंटे बाद वो 68 कैसे हो गई और काउंटिंग से पहले वो 70 कैसे हो गई।

केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्री जेपी नड्डा ने कहा- भारत अब लेने वाला नहीं देने वाला देश है

इंदौर, 1 दिसंबर (एजेंसियां)। विश्व एड्स दिवस पर देवी अहिल्या विश्व विद्यालय सभागृह में आयोजित कार्यक्रम में भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष व केंद्रीय स्वास्थ्य व परिवार कल्याण मंत्री जगत प्रकाश नड्डा शामिल हुए। इस मौके पर उन्होंने कहा कि भारत देश में टिटनेस की दवा आने में 40 साल लगे। क्षय रोग की दवा आने में 25 साल लगे, लेकिन कोरोना के दो टीके 9 माह में आ गए। जिन्होंने कई लोगों की जिंदगी बचाई। हमने चालीस देशों को मुफ्त कोरोना की दवा दी।अब भारत लेने वाला नहीं देने वाला भारत बन चुका है। कोरोना के समय डेढ़ माह में देश तैयार हुआ। पीपीई किट,आईसीयू बेड, टेस्टिंग किट बनाई गई। कोरोना का मैनेजेमेंट देश में प्रभावी रहा। नड्डा ने कहा कि नए उम्र के लोगों ने काला दौर नहीं देखा, जो 80 के दशक में रहा। एड्स की बीमारी को डेथ वारंट माना जाता था। पूरा परिवार तबाह हो जाता था। तब जागृति के लिए कोई अभियान भी नहीं चलते थे। अभी तक इस तरह की दवा नहीं आई कि मरीज उसे खाकर पूरी तरह ठीक हो जाए। मरीज को आजीवन दवा खाना पड़ेगी और जीवन भर वह ठीक रह सकता है। अब हमारा विज्ञान इतना विकसित हो चुका है कि इस बीमारी के साथ भी लोग लंबी जिंदगी जी रही है। सामान्य संतानों को जन्म दे रहे है। इसकी चर्चा से हमें भागना नहीं चाहिए। बच्चों को इस बीमारी के लिए एज्यूकेट करना चाहिए। उन्होंने कहा कि एड्स के साथ जो लोग जी रहे है, उनकी स्थित को समझे और उनके प्रति संवेदनशील रहे और उनके अधिकारों का हनन न हो, इस बात का भी ध्यान रखा जाना चाहिए। एड्स की लंबी लड़ाई समाज ने और देश ने लड़ी है। पहले एड्स की दवा नहीं थी। जब दवा आई तो वह इतनी महंगी थी कि वह गरीब आदमी खरीद नहीं सकता था। वह दवाई भारत सरकार अब फ्री में दी जाती है। देश में 17 लाख लोग एड्स पीड़ित है। भारतीय कंपनियों ने सबसे सस्ती और असरकारक दवाएं बनाई। जो विश्व के लिए मददगार साबित हो रही है। अफ्रीका, साउथ अफ्रीका जैसे देशों को हम जोड़ पाए है। समारोह में मुख्यमंत्री मोहन यादव ने कहा कि एड्स रोगी को अच्छा इलाज और समाज से मदद मिले तो रोगी इस बीमारी पर जीत हासिल कर जीवन यापन कर सकते है। उन्होंने कहा कि कोविड महामारी के बाद देश का स्वास्थ्य विभाग पर विश्वास और पक्का हुआ है। भारत ने तब दूसरे देशों की भी मदद की। मुख्यमंत्री यादव ने कहा कि पहले मेडिकल कॉलेज खोलने में परेशानी आती थी, लेकिन केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्री नड्डा ने व्यवस्था में काफी बदलाव किए और नए मेडिकल कॉलेज खुलने का रास्ता साफ हुआ। प्रदेश में मेडिकल कॉलेजों की संख्या दोगुनी हुई है। प्रदेश में तीन मेडिकल कॉलेज संचालित हो रहे है। दो साल में इनकी संख्या पचास हो जाएगी।

THE LARGEST CIRCULATED AND READ HINDI DAILY IN TELANGANA & ANDHRA PRADESH

स्वतंत्र वार्ता

epaper.vaartha.com

स्वतंत्रता के बाद की कहानियों में हुआ हेरफेर: धनखड़

नई दिल्ली, 1 दिसंबर (एजेंसियां)। उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़ ने रविवार को दुख जताया कि भारत की इतिहास की किताबों में स्वतंत्रता संग्राम के कुछ नायकों के साथ अन्याय हुआ है, क्योंकि स्वतंत्रता के बाद की कहानियों में हेरफेर करके केवल चुनिंदा व्यक्तियों को श्रेय दिया गया। उन्होंने कहा कि भावी पीढ़ियों में देशभक्ति की भावना जगाने के लिए बिना किसी लाग-लपेट के ऐतिहासिक विवरण प्रस्तुत करना अनिवार्य है। उपराष्ट्रपति ने किसानों से बातचीत और समझ के माध्यम से समस्याओं के समाधान के लिए काम करने का भी आह्वान किया।

वर्ष-29 अंक : 250 (हैदराबाद, निजामाबाद, विशाखापट्टणम, तिरुपति से प्रकाशित) **मार्गशीर्ष शु.1 2081 सोमवार, 2 दिसंबर-2024**

प्रधान संपादक - **डॉ. गिरीश कुमार संघी** हैदराबाद नगर ❊ **पृष्ठ : 16 मूल्य : 8 रुपये**

दिल्ली में नशे की बड़ी खेप बरामद

तीन करोड़ की चरस के साथ पांच गिरफ्तार, नेपाल-हिमाचल से आता था 'माल'

नई दिल्ली, 1 दिसंबर (एजेंसियां)। दिल्ली पुलिस की अपराध शाखा ने मादक पदार्थों की तस्करी करने वाले एक अतंर्राष्ट्रीय गिरोह का पर्दाफाश कर नेपाल के तीन नागरिकों सहित पांच प्रमुख आरोपियों को गिरफ्तार किया है। इनकी पहचान नेपाली नागरिक प्रेम थापा, गंगा गुरुंग थापा व अंकित बुद्ध, प्रदीप कुमार और मोहम्मद जमाल के रूप में हुई है।

इनके कब्जे से 15.670 किलोग्राम चरस बरामद की गई है। अंतर्राष्ट्रीय बाजार में बरामद चरस की कीमत करीब तीन करोड़ रुपये बताई जा रही है। आरोपी चरस नेपाल और हिमाचल प्रदेश के कसोल से मंगाते थे। बरामद चरस भी यहीं से मंगाई गई थी।

तीन बच्चे पैदा करें : भागवत

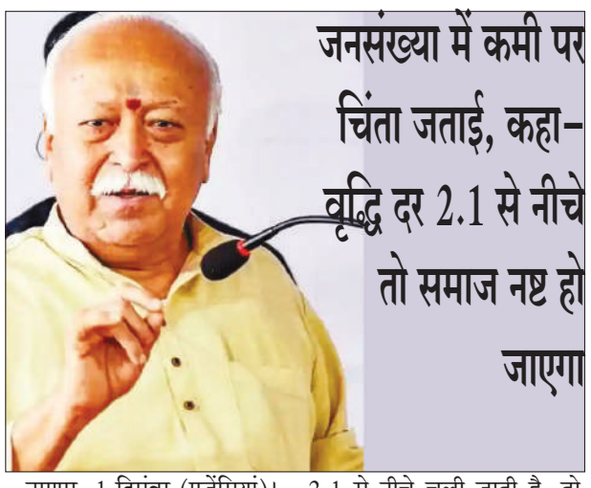

जनसंख्या में कमी पर चिंता जताई, कहा- वृद्धि दर 2.1 से नीचे तो समाज नष्ट हो जाएगा

नागपुर, 1 दिसंबर (एजेंसियां)। राष्ट्रीय स्वयंस सेवक संघ प्रमुख मोहन भागवत ने जनसंख्या में कमी को चिंता का विषय बताया। भागवत ने कहा कि अगर किसी समाज की जनसंख्या वृद्धि दर 2.1 से नीचे चली जाती है, तो वह समाज अपने आप नष्ट हो जाएगा। भागवत रविवार को नागपुर में कठले कुल सम्मेलन में एक सभा में बोल रहे थे। उन्होंने कहा, कुटुंब समाज का हिस्सा है और हर परिवार एक इकाई है। लोकसंख्या शास्त्र कहता है कि अगर इस आकड़े से नीचे जाते हैं, तो समाज नष्ट हो जाता है।

आरएसएस प्रमुख बोले कि देश की जनसंख्या नीति 1998-2002 में तय की गई थी। उसके मुताबिक वृद्धि दर 2.1 से नीचे नहीं होनी चाहिए। इसके लिए 2 की बजाय 3 बच्चे पैदा करें। यह संख्या इसलिए जरूरी है, ताकि समाज जिंदा रहे।

अक्टूबर 2021 में कहा था, जनसंख्या दर में अंतर के कारण मुस्लिम आबादी बढ़ी :

विजयादशमी उत्सव के दौरान संघ प्रमुख ने कहा कि वर्ष 1951 से 2011 के बीच जनसंख्या वृद्धि दर में भारी अंतर के कारण देश की जनसंख्या में जहां भारत में उत्पन्न मत पंथों के अनुयायियों का अनुपात 88 प्रतिशत से घटकर 83.8 प्रतिशत रह गया है। वहीं मुस्लिम जनसंख्या का अनुपात 9.8 प्रतिशत से बढ़कर 14.24 प्रतिशत हो गया है। असंतुलन पर चिंता जताते हुए उन्होंने कहा था कि जनसंख्या नीति होनी चाहिए।

जुलाई 2022 में कहा था- फर्टिलिटी रेट 2.1 से नीचे आना खतरनाक हो सकता है :

भागवत ने एक साल बाद फिर कहा- एक व्यापक जनसंख्या नियंत्रण नीति की जरूरत है। जो सभी पर बराबरी से लागू होती हो। जनसंख्या असंतुलन पर हमें नजर रखनी होगी। जब सभी पर बराबरी से एक नीति लागू होगी तो किसी को भी रियायतें नहीं मिलेंगी। कुछ साल पहले फर्टिलिटी रेट 2.1 था। दुनिया की आशंकाओं से उलट हमने बेहतर किया और इसे 2 तक लेकर आए। लेकिन और नीचे आना खतरनाक हो सकता है।

महायुति में मतभेद नहीं, गृह मंत्रालय पर चुप्पी : शिंदे

आराम करने गांव आया था, महाराष्ट्र का अगला सीएम आज तय होगा

मुंबई, 1 दिसंबर (एजेंसियां)। महाराष्ट्र में नतीजे आए 8 दिन हो गए हैं लेकिन मुख्यमंत्री के चेहरे का आधिकारिक ऐलान बाकी है। शपथ ग्रहण समारोह प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की मौजूदगी में 5 दिसंबर को शाम 5 बजे मुंबई के आजाद मैदान में होगा।

महायुति सरकार में मंत्रालय बंटवारे को लेकर पेंच फंसा है। दिल्ली में बैठक करके लौटे एकनाथ शिंदे सभी कार्यक्रम रद्द कर अचानक 29 नवंबर को सातारा स्थित पैतृक गांव चले गए थे। एक दिन बाद उनकी तबीयत बिगड़ गई थी।

रविवार को शिंदे ने अपने गांव सातारा में प्रेस कांफ्रेंस करके कहा, मैं अब ठीक हूं। व्यस्त चुनावी कार्यक्रम के बाद मैं यहां आराम करने आया था। महायुति में कोई मतभेद नहीं है। मेरा पूरा समर्थन है।

सीएम पर फैसला पीएम मोदी और अमित शाह लेंगे। इस दौरान उनसे गृह मंत्रालय पर चल रही खींचतान को लेकर तीन बार सवाल किया गया। शिंदे ने कोई जवाब नहीं दिया।

3 दिसंबर को भाजपा विधायक दल की बैठक होगी। हालांकि शिंदे ने कहा है कि 2 दिसंबर को सीएम तय हो जाएगा। दिल्ली से दो ऑब्जर्वर मुंबई आएंगे और विधायकों से चर्चा के बाद आधिकारिक रूप से सीएम फेस अनाउंस करेंगे। वहीं, डिप्टी सीएम अजित पवार ने शनिवार को कहा- सीएम भाजपा का होगा, यह तय हो गया है और शिवसेना-एनसीपी से 1-1 डिप्टी सीएम होगा।

बीएसएफ के स्थापना दिवस पर पीएम मोदी, राहुल गांधी ने दी बधाई

नई दिल्ली, 1 दिसंबर (एजेंसियां)। सीमा सुरक्षा बल (बीएसएफ) अपना 60वां स्थापना दिवस मना रहा है। इस अवसर पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने रविवार को सोशल मीडिया मंच एक्स पर बीएसएफ कर्मियों को शुभकामनाएं दी हैं। कांग्रेस नेता राहुल गांधी, कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे समते तमाम नेताओं ने भी बीएसएफ कर्मियों को बधाई दी है। पीएम मोदी एक्स पर बीएसएफ की तस्वीरें शेयर करते हुए लिखा कि सीमा सुरक्षा बल को उसके स्थापना दिवस पर हार्दिक शुभकामनाएं। बीएसएफ साहस, समर्पण और असाधारण सेवा का प्रतीक और रक्षा की एक महत्वपूर्ण पंक्ति के रूप में खड़ा है। उनकी सतर्कता और साहस हमारे राष्ट्र की सुरक्षा में योगदान करते हैं।

राहुल गांधी ने एक्स पर लिखा कि बीएसएफ स्थापना दिवस पर मैं सभी बहादुर कर्मियों को हार्दिक बधाई देता हूं और उन्हें सलाम करता हूं, जो हमारे देश की सीमाओं की रक्षा करते हैं। आपकी अटूट प्रतिबद्धता, साहस, सेवा और बलिदान हमें हर दिन प्रेरित करते हैं। जय हिन्द्।

मुठभेड़ में माओवादी नेता समेत 7 लोग मारे गए

20 लाख रुपये का इनामी भी मारा गया ❊ साथ में एके-47 राइफल रखता था पपन्ना

मुलुगु, 1 दिसंबर (स्वतंत्र वार्ता)। रविवार को तेलंगाना के मुलुगु जिले के इटुरनगरम मंडल के चलपाका-कोंडई जंगलों में हुई मुठभेड़ में मारे गए सात नक्सलियों में दो माओवादी क्षेत्र समितियों के सचिव भी शामिल थे। मुठभेड़ में एक प्रमुख नेता, छत्तीसगढ़ के बीजापुर जिले के चेरामंगी गांव के कुरसम मंगू उर्फ भद्रू उर्फ पपन्ना को मार गिराया गया। वह माओवादी राज्य समिति का सदस्य था और येलांडु-नरसंपेट क्षेत्र समिति सचिव

के रूप में कार्य करता था और अपने साथ एक एके-47 राइफल रखता था। उसके सिर पर 20 लाख रुपये का इनाम था।

पेद्दापल्ली जिले के रामगिरी मंडल के राजापुर गांव के एक डिविजनल कमेटी सदस्य एगोलापु मल्लैया उर्फ मधु मुठभेड़ में मारे गए। वह एतुर्नगरम-महादेवपुर क्षेत्र समिति का सचिव था और उसके पास एके-47 राइफल है। मुठभेड़ में मारे गए अन्य नक्सलियों में एरिया कमेटी के सदस्य मुसकी देवल उर्फ करुणाकर और मुसकी जमुना, जयसिंह, किशोर और कामेश शामिल हैं। वे छत्तीसगढ़ के अलग-अलग इलाकों से हैं। मुठभेड़ खत्म होने के बाद पुलिस ने शव और हथियार बरामद किए। रविवार को हुई मुठभेड़ का स्थान वही है, जहां 21 जून 1991 को माओवादियों ने बारूदी सुरंग में विस्फोट कर पुलिस जीप को उड़ा दिया था। इस घटना में तत्कालीन एतुरूनगरम के सीआई संतोष कुमार, एसआई किशोर और पांच अन्य पुलिसकर्मी मारे गए थे और विस्फोट के कारण उनके शरीर के अंग पेड़ों पर बिखर गए थे।

ईवीएम हैक करने का दावा करने वाले युवक के खिलाफ एफआईआर

चुनाव आयोग ने कहा- सख्त कार्रवाई करेंगे

मुंबई, 1 दिसंबर (एजेंसियां)। एक व्यक्ति ने ईवीएम हैक करने का दावा किया है। ईवीएम हैक करने का दावा करने वाला व्यक्ति विदेश में रहता है। हालांकि ईवीएम हैक करने के दावे को चुनाव आयोग ने गलत और भ्रामक बताया है और दावा करने वाले व्यक्ति के खिलाफ एफआईआर दर्ज कराई है। आरोपी की पहचान सैयद शुजा के रूप में हुई है। पुलिस और जांच एजेंसियां आरोपी की पहचान और उसे पकड़ने के लिए आवश्यक कदम उठा रही हैं। साथ ही पुलिस ऐसे लोगों की भी पहचान करने की कोशिश कर रही है, जो सैयद शुजा के संपर्क में हैं और इस भ्रामक दावे को सोशल मीडिया पर प्रसारित कर रहे हैं।

चुनाव आयोग ने कहा कि कोई भी व्यक्ति जो ईवीएम को लेकर झूठे दावे करने, गलत सूचना फैलाने के प्रयास में शामिल है, उसके खिलाफ कानून के अनुसार सख्त कार्रवाई की जाएगी। चुनाव आयोग ने ईवीएम हैक करने का दावा करने वाले व्यक्ति के खिलाफ पुलिस में शिकायत दर्ज कराई है।

त्रिपुरा के मंत्री का आरोप

बांग्लादेश में भारतीय बस पर हुआ हमला

सोशल मीडिया पर साझा की तस्वीरें

अगरतला, 1 दिसंबर (एजेंसियां)। त्रिपुरा के परिवहन मंत्री सुशांत चौधरी ने आरोप लगाया कि अगरतला से कोलकाता जा रही एक बस पर बांग्लादेश में हमला किया गया। उन्होंने बताया कि यह घटना बांग्लादेश के ब्राह्मणबारिया जिले के विश्व रोड पर घटी। राज्य मंत्री ने सोशल मीडिया पर बस की तस्वीरें साझा की। उन्होंने बताया कि इस घटना से बस में सवार भारतीय यात्री सहम गए। मुख्यमंत्री माणिक साहा ने कहा कि उन्हें बस पर हमले की सूचना मिली और वे इस घटना के बारे में जानकारी जुटा रहे हैं। राज्य परिवहन मंत्री सुशांत चौधरी ने कहा, त्रिपुरा से कोलकाता जा रही श्यामोली परिवहन बस पर बांग्लादेश के ब्राह्मणबारिया में विश्व रोड पर हमला किया गया। इस घटना से बस में सवार भारतीय यात्री सहम

गए। बस अपनी लेन में चल रही थी, तभी एक ट्रक ने जानबूझकर उसे टक्कर मार दी। इस दौरान एक ऑटोरिक्शा बस के सामने आ गया और बस एवं ऑटोरिक्शा की टक्कर हो गई। उन्होंने आगे कहा, इस घटना के बाद स्थानीय लोगों ने बस में सवार भारतीयों को धमकाना शुरू किया। उन्होंने भारत विरोधी नारे भी लगाए। इस दौरान बस में सवार यात्रियों के साथ दुर्व्यवहार भी किया गया और उन्हें जान से मारने की धमकी भी दी गई। सुशांत चौधरी ने आगे कहा, मैं इस घटना की कड़ी निंदा करता हूं। इसके साथ ही मैं पड़ोसी देश (बांग्लादेश) के प्रशासन से भारतीय यात्रियों की सुरक्षा सुनिश्चित करने की अपील करता हूं।

मुख्यमंत्री ने हमले पर दी प्रतिक्रिया

इस घटना पर त्रिपुरा के मुख्यमंत्री माणिक साहा ने प्रतिक्रिया दी। उन्होंने कहा, मुझे जानकारी मिली है कि अगरतला से यात्रियों को लेकर कोलकाता जा रही बस पर शनिवार को ब्राह्मणबरिया में विश्व रोड पर हमला हुआ। मैं इस मामले में ठोस जानकारी जुटाने का प्रयास कर रहा हूं। उन्होंने आगे कहा, बांग्लादेश में हालात अच्छे नहीं हैं। बांग्लादेश की सरकार कैसे काम कर रही है? देश में अल्पसंख्यकों पर अत्याचार हो रहे हैं।

पति के लापता होने पर सेना के सामने धरने पर बैठी महिला

25 नवंबर से है गायब

इंफाल, 1 दिसंबर (एजेंसियां)। मणिपुर के कांगपोकपी जिले के लेइमाखोंग मिलिट्री स्टेशन पर एक ठेकेदार के पर्यवेक्षक, लैशराम कमलबाबू सिंह के 25 नवंबर को लापता होने के बाद शनिवार शाम उनकी पत्नी ने सुरक्षा कर्मियों के सामने बैरिकेड्स के पास धरना दिया। लैशराम कमलबाबू सिंह (56 वर्ष) की पत्नी, अकोइजाम निंगोल लैशराम ओंओबी बेलरानी ने कहा, मैं यहां से तब तक नहीं जाऊंगी जब तक मेरे पति मुझे सौंपे नहीं जाते।

धरने पर बैठी बेलरानी ने क्या कहा :

यह विरोध प्रदर्शन तब शुरू हुआ जब लैशराम लापता हो गए थे। बेलरानी ने बताया कि सोमवार दोपहर से बाबू का फोन बंद था, जिससे उनकी चिंता और बढ़ गई थी। उन्होंने कहा, मैंने 25 नवंबर को उनसे संपर्क करने की कोशिश की थी, लेकिन उनका फोन बंद था। मैंने आज ही काछार से सुना कि वह लापता हो गए हैं। लैशराम असम के काछार जिले के निवासी थे। अपने भाई के घर लैतांग खुंओ में रहकर मिलिट्री कैंप में काम कर रहे थे। बेलरानी ने कहा कि सेना को उनके पति को जीवित और सुरक्षित खोजने की जिम्मेदारी लेनी चाहिए।

मणिपुर में यह घटना व्यापक विरोध का कारण बनी है और इंफाल घाटी में सरकारी अधिकारियों से तत्काल कार्रवाई की मांग की जा रही है। सार्वजनिक आक्रोश के बाद सेना ने लैशराम के लिए तलाशी अभियान तेज करने की पुष्टि की है।

मणिपुर के मुख्यमंत्री एन बीरेन सिंह ने भी सेना से लापता व्यक्ति को खोजने की जिम्मेदारी ली है।

आंध्र प्रदेश में वक्फ बोर्ड भंग

पुरानी जगन सरकार का आदेश बदला

अमरावती,1 दिसंबर (एजेंसियां)। आंध्र प्रदेश के सीएम चंद्रबाबू नायुडू ने स्टेट वक्फ बोर्ड को भंग करने की घोषणा की है। इसका गठन पिछली जगन मोहन की सरकार ने किया था। 30 नवंबर को जारी आदेश में मौजूदा सरकार ने पिछली सरकार के दौरान अल्पसंख्यक कल्याण विभाग के जारी आदेश को रद्द कर दिया।

आदेश में कहा गया कि, आंध्र प्रदेश वक्फ बोर्ड के अध्यक्ष के चुनाव पर हाईकोर्ट ने रोक लगा दी थी। उसी समय राज्य वक्फ बोर्ड के गठन के 2023 के सरकारी आदेश की संवैधानिकता को चुनौती देने वाले पेंडिंग केस के कारण एक प्रशासनिक शून्यता पैदा हो गई थी। अब राज्य में नए सिरे से वक्फ बोर्ड का गठन किया जाएगा।

आंध्र प्रदेश के कानून एवं न्याय, अल्पसंख्यक कल्याण मंत्री एन मोहम्मद फारूक ने कहा, नए आदेश जीओ-75 का उद्देश्य वक्फ बोर्ड में शासन संबंधी शून्यता

को दूर करना है। सरकार के नए निर्देश के तहत वक्फ प्रोपर्टी की सेफ्टी और अल्पसंख्यक कल्याण को बढ़ावा देने के लिए जिम्मेदार है।

जगन सरकार में 21 अक्टूबर 2023 को वक्फ बोर्ड का गठन हुआ था। शेख खाजा (मुतवल्ली), विधायक हफीज खान और एमएलसी रूहुल्लाह को वक्फ बोर्ड का सदस्य बनाया गया था। 8 अन्य को वक्फ बोर्ड का मेंबर नॉमिनेट किया गया था। हालांकि, शेख खाजा के चुनाव और वक्फ बोर्ड के गठन के लिए जारी किए गए गर्वमेंट ऑर्डर (जीओ) 47 की वैधता को कई रिट याचिकाओं में हाईकोर्ट में चुनौती दी गई थी।

जीओ को चुनौती देने वाली और नॉमिनेट मेंबर्स में एक के खिलाफ विशेष विवाद उठाने वाली याचिकाओं पर विचार करते हुए हाईकोर्ट ने अध्यक्ष के चुनाव पर रोक लगा दी थी। अदालत ने ये भी स्पष्ट किया है कि सदस्य का चुनाव रिट याचिकाओं के अंतिम फैसले आने पर तय होगा। जब तक याचिकाएं पेंडिंग रहेंगी, वक्फ बोर्ड बिना अध्यक्ष के रहेगा।

आंध्र प्रदेश बीजेपी के उपाध्यक्ष विष्णु वर्धन ने कहा कि आंध्र प्रदेश सरकार ने भारत जैसे धर्मनिरपेक्ष राष्ट्र में ऐसी संस्थाओं के लिए संवैधानिक प्रावधानों की कमी का हवाला देते हुए वक्फ बोर्ड को भंग कर दिया है। आंध्र प्रदेश अल्पसंख्यक कल्याण विभाग का नेतृत्व एनडीए सरकार के मंत्री एन.एम.डी. फारूक कर रहे हैं, जो सुनिश्चित करते हैं कि अल्पसंख्यक कल्याण प्राथमिकता बनी रहे।

संभल एसपी ने न्यायिक आयोग को बताया हिंसा का सीन

कहा- भीड़ सामने से पथराव कर रही थी, गाड़ियां जलाईं, छतों से पत्थर फेंके

संभल, 1 दिसंबर (एजेंसियां)। संभल हिंसा की जांच के लिए न्यायिक आयोग की टीम रविवार को जामा मस्जिद पहुंच गई है। 3 मेंबर्स की टीम में हाईकोर्ट के रिटायर्ड जस्टिस डीके अरोड़ा, यूपी के पूर्व डीजीपी अरविंद कुमार जैन और रिटायर्ड प्रमुख सचिव अमित मोहन प्रसाद हैं। अमित मोहन आज नहीं पहुंच पाए।

टीम ने सबसे पहले हिंसा प्रभावित जामा मस्जिद के बाहर का निरीक्षण किया और फिर मस्जिद के अंदर गई। एसपी कृष्ण विश्नोई ने टीम को ब्रीफ किया। उन्होंने बताया कि 24 नवंबर के दिन किन घरों से पथराव हुआ और कहां से हिंसा की शुरूआत हुई। कमिश्नर, डीआईजी और डीएम भी साथ हैं।

शनिवार को शाही जामा मस्जिद मामले में भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (एएसआई) ने चंदौसी कोर्ट में हलफनामा दाखिल किया। एएसआई के वकील विष्णु शर्मा ने कहा, यहां प्राचीन इमारत और पुरातत्व अवशेषों के संरक्षण अधिनियम का उल्लंघन किया गया। मस्जिद के बाहर सीढ़ियों पर जो निर्माण करवाया गया है, उसके खिलाफ पहले से एफआईआर दर्ज है।

डिप्टी सीएम केशव मौर्य ने कहा, उपचुनाव में करारी हार के बाद पूरी तरह से निराश और बौखलाए हैं। राजनीतिक आधार खोने के बाद अब सपा ने प्रदेश में अशांति फैलाने और अराजकता पैदा करने की साजिशें शुरू कर दी हैं। संभल में हुआ दंगा सपा की इसी साजिश का हिस्सा है।

अपनी चुनावी विफलता छुपाने के लिए इस तरह के प्रयास कर प्रदेश की प्रगति को बाधित करने की कोशिश की जा रही है। लेकिन सपाई गुंडों और दंगाई तत्वों को यह समझ लेना चाहिए कि उनकी चालें अब सफल नहीं होंगी। अराजकता फैलाने वालों के लिए यहां कोई स्थान नहीं है।

साहसिक सपने देखने पर दुनिया परीक्षा लेती है : गौतम अदाणी

चुनौतियां हमें कभी तोड़ नहीं पाईं, बल्कि उन्होंने और मजबूत बनाया

जयपुर, 1 दिसंबर (एजेंसियां)। अदाणी ग्रुप के चेयरमैन गौतम अदाणी ने हिंडनबर्ग विवाद और अमेरिका में लगे रिश्वत देने के आरोपों पर पहली बार सार्वजनिक बयान दिया। उन्होंने कहा, अदाणी ग्रुप के रास्ते में आई हर बाधा उसकी सफलता की सीढ़ी बनी है। आपके सपने जितने बड़े होंगे, दुनिया उतनी ज्यादा आपकी परीक्षा लेती है।

उन्होंने कहा कि चुनौतियां हमें कभी तोड़ नहीं पाई, बल्कि उन्होंने हमें और मजबूत बनाया। हमारे अंदर ये भरोसा बढ़ाया कि हर गिरावट के बाद हम और मजबूत तरीके से ऊपर उठेंगे। गौतम अदाणी शनिवार शाम को जयपुर में 51वें इंडिया जेम्स एंड ज्वेलरी अवॉर्ड (आईजीजेए) समारोह में बोल रहे थे।

साल 2010 में जब हमने ऑस्ट्रेलिया में कोल माइनिंग शुरू की थी, तो हमारा उद्देश्य था कि हमें भारत को एनर्जी सेक्टर में और मजबूत करना है। हमारा उद्देश्य था कि भारत में होने वाले 2 टन खराब कोयले को ऑस्ट्रेलिया से 1 टन अच्छी क्वालिटी के कोयले से रिप्लेस करेंगे। हालांकि गैर सरकारी संगठनों ने इसका बहुत ज्यादा विरोध किया और ये 10 साल तक चला।

ये विरोध इतना ज्यादा था कि 10 बिलियन डॉलर के पूरे प्रोजेक्ट की फंडिंग हमने अपने इक्विटी शेयर से की। आज हमारे पास ऑस्ट्रेलिया में वर्ल्ड क्लास कोल माइन है। यह हमारे लचीलेपन को दिखाता है।

जनवरी 2023 में जब हम फॉलोऑन पब्लिक ऑफर

(एफपीओ) लॉन्च करने जा रहे थे, तो हमने विदेश से कंपनी के खिलाफ शॉर्ट सेलिंग (शेयर बाजार में कंपनी के शेयर की बिकवाली) अटैक का सामना किया।

ये सिर्फ आर्थिक हमला नहीं था, ये डबल अटैक था। हमारी आर्थिक स्थिरता को तो टारगेट किया ही, हमें राजनीतिक विवाद में भी फंसाया गया। कई मीडिया संस्थानों ने इसे अपने स्वार्थों की पूर्ति के लिए और बढ़ाया।

उन विपरीत हालातों में भी हमने हमारे सिद्धांतों के प्रति प्रतिबद्धता दिखाई। 20 हजार करोड़ रुपये का देश का सबसे बड़ा एफपीओ लाने के बाद हमने कुछ असाधारण फैसले लिए। हमने कई अंतर्राष्ट्रीय स्रोतों से पैसा जुटाया और हमारा डेब्ट टू एबिटडा रेश्यो 2.5 गुना से कम कर दिया। ग्लोबल इंफ्रास्ट्रक्चर स्पेस में यह मैट्रिक अनमैच है।

इसी साल हमारे फाइनेंशियल रिजल्ट ने हमारी श्रेष्ठता की प्रतिबद्धता को दिखाया। एक भी भारतीय और विदेशी रेटिंग एजेंसी ने हमें डाउन ग्रेड नहीं किया और आखिरकार सुप्रीम कोर्ट ने भी हमारे कार्य को सही ठहराया और दृष्टिकोण को वैधता दी।

तीसरा उदाहरण हाल ही का है। 2 सप्ताह पहले हमने अमेरिका से अदाणी ग्रीन एनर्जी के कामों को लेकर कुछ आरोपों को फेस किया। सच ये है कि अदाणी कंपनी के किसी भी व्यक्ति के ऊपर अमेरिका के फॉरेन करप्ट प्रैक्टिस एक्ट (एफसीपीए) के उल्लंघन या साजिश के आरोप तय नहीं हुए हैं। आज की दुनिया में नकारात्मकता तथ्यों से ज्यादा तेजी से फैलती है।

अदाणी ने कहा कि ऐसी चुनौती हमने पहली बार फेस नहीं की है। हर आक्रमण आपको मजबूत बनाता है। हर बाधा अदाणी ग्रुप की सीढ़ी बन जाती है। हमने जो बाधाएं फेस की है, वो हमारे लीडर बनने की कीमत है।

कौन हैं आईपीएस हरिनाथ मिश्र ?

संभालेंगे पीएम मोदी की सुरक्षा व्यवस्था, बैंक कर्मचारी से सिक्युरिटी चीफ तक का सफर

भागलपुर, 1 दिसंबर (एजेंसियां)। भागलपुर के भीखनपुर में जन्मे आईपीएस हरिनाथ मिश्र पिता भोला मिश्रा, माता दिव्या मिश्रा के सानिध्य में दुर्गा स्थान स्थान के समीप पुश्तैनी घर में बचपन से जवान हुए। कैबिनेट सचिवालय में सुरक्षा सचिव पद पर जाने के पूर्व हरिनाथ मिश्र के करियर का संघर्ष निचले पायदान से आरंभ हुआ और अब सुरक्षा सचिव पद पर पहुंच प्रधानमंत्री की सिक्युरिटी संभालेंगे। मेहनत के पहले पड़ाव में मिश्र स्टेट बैंक की नौकरी हासिल की थी। उनकी पहली तैनाती स्टेट बैंक की कहलगांव शाखा में हुई थी, उसके बाद उन्हें बहुत जल्द जोनल कार्यालय, भागलपुर बुला लिया गया। जोनल कार्यालय में काम करते हुए बड़े मुकाम का लक्ष्य भेदने को तैयारी भी करते रहे। नतीजा हुआ कि चंद माह के अंदर ही वह आईपीएस बनने का लक्ष्य हासिल कर लिया। फिर हरिनाथ पीछे मुड़ कर नहीं देखे। पिता भोला मिश्र एनई रेलवे बरारी में तब ट्रेन गार्ड फिर स्टेशन मास्टर पद पर तैनात थे। भीखनपुर में तब छोटी लाइन का रेलवे स्टेशन भी था। वहां से वह बरारी-भागलपुर और लत्तीपुर तक नौकरी करते रहे और अपने पांचों बेटों की परवरिश में कोई कसर नहीं छोड़ी थी। पांच बेटों में सबसे बड़े ओंकारनाथ मिश्र, हरिनाथ मिश्रा, उमानाथ मिश्रा, रविंद्र नाथ मिश्रा और अमरनाथ मिश्रा पारिवारिक संस्कार और लगन के बूते अच्छे मुकाम पर गए। बड़े भाई ओंकारनाथ मिश्र रेडियो स्टेशन में उदघोषक के रूप में काफी ख्याति पाई तो दूसरे नंबर पर हरिनाथ ने भारतीय पुलिस सेवा का मुकाम हासिल किया। तीसरे नंबर के उमानाथ बैंक में बड़े अधिकारी का पद हासिल किया। चौथे नंबर के रविंद्र नाथ मिश्रा ने आइआरएस सेवा का मुकाम पाया तो छोटे भाई अमरनाथ मिश्रा शिक्षा जगत का मुकाम हासिल किया। पारिवारिक संस्कार और लगन के बूते हरिनाथ के भतीजे नीलोत्पल मिश्रा भी आईपीएस बनने में सफल हुए। वर्तमान में महराष्ट्र कैडर में तैनात हैं।

मलयालम भाषा पर भी रही बेहतर पकड़

हिंदी भाषी हरिनाथ मिश्र केरल काडर में तैनाती बाद से वहां की मलयालम भाषा पर काफी पकड़ बना रखी है। मलयालम भाषा में किताबें भी लिखी हैं। राजीव कांत मिश्र कहते हैं कि अंग नगरी में अंगिका से नाता रखने वाले हरिनाथ मिश्र ने मलयालम जैसे कठिन भाषा पर अपनी पकड़ बनाई। यह अंगक्षेत्र के लोगों के लिए भी गौरव की बात है।

बेहतर मुकाम हासिल करने के बाद भी जमीनी पहचान नहीं छोड़ी

हरिनाथ मिश्र को करीब से जानने वाले उनकी मिलनसारिता की खूब चर्चा करते हैं। जिस तरह तरह स्टेट बैंक में किरानी रहते सहजता से रहा करते और किसी से मिला करते थे, उसी तरह भारतीय पुलिस सेवा में आने के बाद भी हरिनाथ के स्वभाव में कोई तब्दीली नहीं आई। केरल काडर में आईपीएस बने हरिनाथ मिश्रा और उनके सभी भाइयों के लगन से गोल हासिल होने पर भीखनपुर में बेहतर शिक्षा का माहौल बना। पारिवारिक मित्रों में एक शिक्षाविद राजीव कांत मिश्रा कहते हैं कि भोला बाबू के पांचों लड़कों के बेहतर मुकाम तक पहुंचने से माहौल बदला। मोहल्ले में पढ़ाई की जो लौ हरिनाथ मिश्र ने जगाई तो फिर उस परिवार से ही आईपीएस और आईआरएस सेवा में चयन हुआ। भीखनपुर और आसपास के कई युवाओं ने बेहतर मुकाम हासिल किया। उन भाइयों में किसी को कोई अहम नहीं किसी को घमंड छुआ नहीं। आज भी हर साल अपने घर में प्रतिष्ठापित कुल देवी माता काली महारानी की पूजा में पूरे परिवार का जुटान होता है। यहां जब भी हरिनाथ मिश्र होते या परिवार के अन्य सदस्य, मिलने वालों से बड़े सादगी से मिलते। वरीय अधिवक्ता रामकुमार मिश्र, बैंककर्मी फुच्चो पांडेय, लखन लाल पाठक आदि भी हरिनाथ मिश्र की सादगी को याद कर यही कहते हैं कि सिर्फ वही नहीं बल्कि उनका पूरा परिवार सादगी को नहीं भूला है।

दिसंबर का महीना शुरू होते ही यूपी में बढ़ी सर्दी, कई जिलों में छाया घना कोहरा

लखनऊ, 1 दिसंबर (एजेंसियां)। दिसंबर का महीना शुरू हो गया है, और ठंड ने भी अपने तेवर तेज कर लिये हैं। आईएमडी फॉरकास्ट के मुताबिक, उत्तर प्रदेश में मौसम शुष्क रहने और कहीं-कहीं पर सुबह के समय छिछला से मध्यम कोहरा छाए रहने की संभावना है। मौसम विभाग ने एक दिसंबर को राज्य के तराई क्षेत्र में अलग-अलग स्थानों पर देर रात और सुबह के समय घना कोहरा छाए रहने की संभावना जताई हैं। मौसम विभाग के मुताबिक, 6 दिसंबर तक अधिकतम तापमान और न्यूनतम तापमान में कोई बड़ा परिवर्तन नहीं होने की संभावना जताई हैं। मौसम विभाग के मुताबिक, सहारनपुर, शामली, मुजफ्फरनगर, बिजनौर, ज्योतिबाफुले नगर, मुरादाबाद, रामपुर, बरेली, पीलीभीत, खेरी, बहराइच, श्रवस्ती, बलरामपुर, गोंडा, अयोध्या, सिद्धार्थनगर, बस्ती, अम्बेडकरनगर, संतकबीरनगर, महराजगंज, गोरखपुर, कुशीनगर और देवरिया में एक दिसंबर को देर रात कोहरा छाए रहने की संभावना है। मौसम विभाग के अनुसार, पिछले 24 घंटे के दौरान उत्तर प्रदेश में मौसम शुष्क रहा। यूपी के दोनों मौसम मंडलों में छिटपुट स्थानों पर हल्का मध्यम कोहरा तथा पश्चिम यूपी के एक दो स्थानों पर घना कोहरा छाया रहा। आईएमडी फॉरकास्ट के मुताबिक, प्रयागराज का तापमान 12 डिग्री सेल्सियस, बहराइच का 11.8 डिग्री सेल्सियस, फुर्सतगंज का 21.8 डिग्री सेल्सियस, गोरखपुर का 12 डिग्री सेल्सियस, झांसी 11 डिग्री सेल्सियस, वाराणसी में 12.4 डिग्री सेल्सियस, लखनऊ का 12 डिग्री सेल्सियस और मेरठ का 20.6 डिग्री सेल्सियस तापमान रिकॉर्ड किया गया है। आने वाले दिनों में पड़ने वाली ठंड को देखते हुए लोगों से गर्म कपड़े पहनने और ठंड से बचाव की सलाह दी गई है।

गाजियाबाद में डेंटल कॉलेज की छात्रा का फंदे से लटका मिला शव

निवाड़ी, 1 दिसंबर (एजेंसियां)। गाजियाबाद के थाना निवाड़ी क्षेत्र में पड़ने वाले डीजे डेंटल कॉलेज में एमडीएस प्रथम वर्ष की छात्रा रेणुका यादव ने सुसाइड कर लिया, रेणुका ने पंखे से लटक कर सुसाइड किया है। बता दें कि दिव्य ज्योति ग्रुप ऑफ इंस्टीट्यूशंस के छात्रावास में दंत चिकित्सा में मास्टर कर रही 26 वर्षीय छात्रा ने कथित रूप से आत्महत्या कर ली। पुलिस ने यह जानकारी दी। पुलिस ने शव को पोस्टमार्टम के लिए भेज जांच में जुटी हुई है। मोदीनगर के सहायक पुलिस आयुक्त (एसीपी) ज्ञान प्रकाश राय ने बताया कि विस्तृत जांच के लिए उसके फोन कॉल का विवरण सुरक्षित कर लिया गया है। पुलिस को उसके कमरे से सुसाइड नोट मिला है, जिसमें रेणुका ने लिखा है कि इस कदम के लिए वह ही जिम्मेदार है। कॉलेज के प्रिंसिपल डॉक्टर प्रदीप शुक्ला ने बताया की रेणुका करीब 10 दिन पहले हॉस्टल आई थी। उसके बाद उसकी तबीयत खराब चल रही थी, उसने आज से कॉलेज ज्वाइन करने के लिए कहा था। लेकिन जब वह नहीं आई तो कुछ विद्यार्थियों को उसे देखने के लिए भेजा गया। उन्होंने बताया कि दरवाज़े पर की गई दस्तक पर कोई प्रतिक्रिया न मिलने पर छात्रावास वार्डन को सूचित किया गया,

बुढ़ापे में भसिया गए हैं लालू यादव

सहरसा में पीएचईडी मंत्री नीरज बबलू बोले-उपचुनाव विधानसभा चुनाव का ट्रेलर था, 2025 में एनडीए की बनेगी

सहरसा, 1 दिसंबर (एजेंसियां)। बिहार सरकार के पीएचईडी मंत्री और छातापुर विधानसभा से बीजेपी विधायक नीरज कुमार बबलू ने पूर्व मुख्यमंत्री लालू प्रसाद यादव पर तंज कसते हुए कहा कि वो बुढ़ापे में भसिया गए है। यह बयान उन्होंने सहरसा के नयाबाजार स्थित अपने आवास पर आयोजित प्रेस वार्ता के दौरान दिया। प्रेस वार्ता में बीजेपी के सैकड़ों कार्यकर्ता मौजूद थे। नीरज कुमार बबलू ने लालू यादव के 2025 के विधानसभा चुनाव में महागठबंधन की जीत के दावे पर प्रतिक्रिया देते हुए कहा कि लालू यादव अब बुजुर्ग हो गए हैं और भसिया गए हैं। उन्होंने कहा, गांव में लोग कहते हैं कि जब कोई बूढ़ा भसिया जाता है तो वह इसी तरह की बातें करता है। उन्होंने हाल ही में बिहार में चार सीटों पर हुए उपचुनाव का जिक्र करते हुए कहा कि एनडीए ने सभी चारों सीटों पर जीत हासिल की है, जो यह बताता है कि जनता का समर्थन किस ओर है। उन्होंने कहा कि यह उपचुनाव आगामी विधानसभा चुनाव का ट्रेलर था, जिसमें एनडीए को भारी बहुमत से जीत मिलेगी।

2025 में बनेगी एनडीए की सरकार

बबलू ने दावा किया कि बिहार की जनता ने 2025 में एनडीए की सरकार बनाने का मन बना लिया है। उन्होंने महागठबंधन पर कटाक्ष करते हुए कहा कि उनके पास अब कोई ठोस मुद्दा नहीं बचा है। उनकी बातों को जनता गंभीरता से नहीं ले रही है। नीरज कुमार बबलू की इस टिप्पणी से राजनीतिक हलकों में हलचल मच गई है, और इसे आगामी चुनावों से पहले एनडीए की रणनीति का हिस्सा माना जा रहा है।

आधार कार्ड के मिस यूज की धमकी देकर 4 लाख की ठगी, पीड़ित ने ढाई महीने बाद दर्ज कराया मुकदमा

प्रयागराज, 1 दिसंबर (एजेंसियां)। प्रयागराज में साइबर अरेस्ट की धमकी देकर एक और शख्स के साथ साइबर ठगी किए जाने का सनसनीखेज मामला सामने आया है। यहां आधार कार्ड के दुरुपयोग की धमकी देकर शख्स के साथ करीब पौने चार लाख रूपये की ठगी की गई है। यह मामला प्रयागराज के धूमनगंज थाना क्षेत्र के कालिंदीपुरम इलाके का है। प्रयागराज पुलिस ने इस मामले में केस दर्ज करने के बाद अपनी तफ्तीश शुरू कर दी है। इस मामले के मुताबिक ठगी की यह वारदात रतन कुमार कुलश्रेष्ठ नाम के शख्स के साथ की गई है। रतन कुलश्रेष्ठ के मोबाइल फोन पर 3 सितंबर को अंजान नंबर से फोन कॉल आया। फोन करने वाले ने खुद को सीबीआई का कमिश्नर बताया और हैदराबाद से कॉल करने की बात कही। फोन पर कहा गया कि उनके आधार कार्ड का गलत उपयोग हो रहा है। ऐसे में उनके खिलाफ कार्रवाई कर उन्हें जेल भेजा जाएगा। इस पर रतन कुलश्रेष्ठ डर गए। एफआईआर के मुताबिक फोन पर ही अगले दिन यानी चार सितंबर को एक अकाउंट नंबर दिया गया और कहा गया कि उसमें तीन लाख अस्सी हजार रुपए ट्रांसफर करने पर उन्हें जेल नहीं भेजा जाएगा। पीड़ित रतन कुलश्रेष्ठ ने अगले दिन दिए गए अकाउंट नंबर पर पूरे पैसे ट्रांसफर कर दिए।

यूपी में जमीनों पर कब्जा करने वाले दबंगों पर सीएम योगी सख्त

अधिकारियों को कार्रवाई के निर्देश

गोरखपुर, 1 दिसंबर (एजेंसियां)। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने गोरखपुर प्रवास के दौरान रविवार सुबह गोरखनाथ मंदिर में जनता दर्शन में आए लोगों से मुलाकात की। सीएम योगी ने लोगों की समस्या सुनने के बाद कहा कि वह किसी के भी साथ अन्याय नहीं होने देंगे। हर पीड़ित की समस्या का निराकरण किया जाएगा, सबको न्याय मिलेगा। इस बारे में सीएम योगी आदित्यनाथ ने संबंधित अधिकारियों को निर्देशित किया। उन्होंने कहा कि सभी की समस्या का शीघ्रता से गुणवत्तापूर्ण और पारदर्शी निस्तारण सुनिश्चित किया जाए। दरअसल, रविवार सुबह गोरखनाथ मंदिर परिसर में जनता दर्शन के लिए दरबार लगाया गया। इस दौरान महंत दिग्विजयनाथ स्मृति भवन के सामने बैठे लोगों से मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने मुलाकात की और एक-एक करके सबकी समस्याएं सुनीं। उन्होंने करीब 300 लोगों से मुलाकात की। लोगों के प्रार्थना पत्रों को संबंधित अधिकारियों को संदर्भित करते हुए त्वरित और संतुष्टिपरक निस्तारण का निर्देश देने के साथ लोगों को भरोसा दिलाया।

सीएम योगी ने दी अधिकारियों को हिदायत

उन्होंने कहा कि सरकार हर पीड़ित की समस्या का समाधान कराने के लिए तत्पर और प्रतिबद्ध है। इस दौरान उन्होंने अधिकारियों से कहा कि हर पीड़ित के साथ संवेदनशील रवैया अपनाएं और उनकी समस्याओं का समाधान कर उसे संतुष्ट करें। इसमें किसी भी तरह की कोताही बर्दाश्त नहीं की जाएगी।

जमीनों पर कब्जा करने वाले दबंगों पर हो सख्त कार्रवाई

जमीनी विवाद की शिकायतों पर सीएम योगी ने कहा कि अगर विवाद पारिवारिक हो तो संबंधित पक्षों के बीच वार्ता कराई जाए और बात न बनने पर विधिक कार्रवाई की जाए। यदि कोई दबंग किसी की जमीन पर अवैध कब्जा कर रहा हो तो उसके खिलाफ कड़ी कार्रवाई की जाए। मुख्यमंत्री के समक्ष जनता दर्शन में कई लोग इलाज के लिए आर्थिक सहायता की गुहार लेकर पहुंचे थे। सीएम योगी ने उन्हें आश्वस्त किया कि सरकार इलाज के लिए भरपूर मदद करेगी। उनके प्रार्थना पत्रों को अधिकारियों को हस्तगत करते हुए मुख्यमंत्री ने निर्देश दिया कि इलाज से जुड़ी इस्टीमेट की प्रक्रिया को जल्द से जल्द पूर्ण कराकर शासन में उपलब्ध कराया जाए। राजस्व व पुलिस से जुड़े मामलों को उन्होंने पूरी पारदर्शिता तथा निष्पक्षता के साथ निस्तारित करने का निर्देश देते हुए कहा कि किसी के साथ भी नाइंसाफी नहीं होनी चाहिए।

सीएम योगी ने बच्चों से किया दुलार

रविवार सुबह गोरखनाथ मंदिर परिसर का भ्रमण करने के दौरान मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने परिजनों के साथ मंदिर आए बच्चों को प्यार, दुलार और आशीर्वाद दिया। बच्चों को अपने पास बुलाकर उनसे बातचीत की। नाम पूछने के साथ हंसी ठिठोली की। उनसे पढ़ाई के बारे में जानकारी ली और खूब पढ़ने के लिए प्रेरित किया। सीएम ने बच्चों को चॉकलेट गिफ्ट देकर विदा किया।

भाजपा का समर्थन करने पर जेई उखाड़ ले गए मीटर गाली-गलौज और मारपीट का भी आरोप

मैनपुरी, 1 दिसंबर (एजेंसियां)। करहल थाना क्षेत्र के गांव रुरिया निवासी महिला ने विद्युत विभाग के जेई पर भाजपा समर्थक होने के कारण जातिसूचक शब्दों के उपयोग, गाली-गलौज, मारपीट करने और मीटर उखाड़ने का आरोप लगाया है। विरोध करने पर जेई ने प्राथमिकी दर्ज कराने की धमकी दी। थाने में सुनवाई न होने पर पीड़िता ने पर्यटन मंत्री से शिकायत कर जेई खिलाफ कार्रवाई की मांग की है। करहल थाना क्षेत्र के गांव रुरिया निवासी विधवा महारानी देवी जाटव ने शनिवार को पर्यटन एवं संस्कृति मंत्री जयवीर सिंह को शिकायती पत्र दिया है। जिसमें बताया कि वह गांव में अकेली रहती हैं। उनका पुत्र ध्रुव सिंह दिल्ली में रहकर प्राइवेट कंपनी में नौकरी करता है।

नहीं जमा किया था बिजली बिल

परिवार की आर्थिक स्थिति खराब होने के कारण वह बिजली का बिल जमा नहीं कर सकी। उन पर बिजली विभाग का 30745 से अधिक का बिल बकाया है। कुछ दिन पूर्व बकाया वसूली को आई टीम से उन्होंने जल्द जमा करने की अपील की तो अधिकारी मार गए। इसके बाद भी उपखंड अंडनी पर तैनात जेई मनीष यादव लाइनमैन रजनेश उर्फ केसी 27 नवंबर को उनके घर पर पहुंचे। जहां जेई ने उनसे रुपये जमा करने को कहा तो पीड़िता ने कहा कि उनका पुत्र दिल्ली से लौट आए तो वह पूरा बिल जमा करा देंगी। इस पर जेई ने जातिसूचक गालियां देते हुए कहा कि बहुत बड़ी भाजपा की समर्थक बनती है, तूने सपा को वोट नहीं दिया इसलिए आज ही बिल जमा करना पड़ेगा। जेई पर गाली देने का आरोप महिला के गाली देने से मना करने पर जेई मनीष यादव ने धक्का देते हुए परिसर में लगे मीटर को उखाड़ लिया।

जब पीडिता ने शिकायत करने की बात कही तो जेई ने प्राथमिकी दर्ज कराने की धमकी दी। जब पीड़िता थाने में शिकायत करने गई तो पुलिस ने कोई सुनवाई नहीं की। शिकायत पर मंत्री ने बिजली विभाग के अधिकारियों और सीओ करहल से मामले की जांच कर कार्रवाई के निर्देश दिए हैं। इस संबंध में सीओ करहल संतोष कुमार सिंह ने बताया कि मामले की शिकायत पर जांच की जा रही है। जांच के बाद आवश्यक कार्रवाई की जाएगी।

संभल जामा मस्जिद को लेकर हुए बवाल के बाद अब कांग्रेस ने उठाया बड़ा कदम, अजय राय को सौंपा गया खास जिम्मा

संभल, 1 दिसंबर (एजेंसियां)। जामा मस्जिद के दौरान भड़की हिंसा पर खूब सियासत हो रही है। कल सुबह से लेकर दोपहर तक समाजवादी पार्टी का प्रतिनिधि मंडल संभल जाने की कोशिशों में लगा रहा। मगर पुलिस-प्रशासन ने सपा प्रतिनिधि मंडल में शामिल किसी भी नेता को संभल जाने नहीं दिया। इसी बीच अब कांग्रेस ने भी संभल मामले को लेकर योजना बनाई है। बता दें कि समाजवादी पार्टी के बाद अब कांग्रेस ने भी अपना प्रतिनिधि मंडल संभल भेजने का ऐलान किया है। मिली जानकारी के मुताबिक, 2 दिसंबर को कांग्रेस का ये प्रतिनिधि मंडल संभल जाएगा। इस प्रतिनिधि मंडल का नेतृत्व उत्तर प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष अजय राय करेंगे। माना जा रहा है कि इस प्रतिनिधि मंडल में कांग्रेस के राष्ट्रीय नेता भी शामिल हो सकते हैं।

संभल डीएम ने 10 दिसंबर तक बढ़ाई रोक

आपको बता दें कि कल ही संभल जिलाधिकारी ने 10 दिसंबर तक बाहरी व्यक्ति और किसी भी जनप्रतिनिधि के संभल प्रवेश पर रोक लगा दी है। इसी के साथ एक साथ 5 लोगों के जमा होने पर भी संभल में रोक लगा दी गई है। दरअसल प्रशासन संभल हिंसा को देखते हुए अलर्ट पर बना हुआ है। अब देखना ये होगा कि कांग्रेस प्रतिनिधि मंडल संभल जाने में कामयाब हो पाता है या नहीं?

संभल हिंसा में हुई थी 4 की मौत

बता दें कि बीते 24 नवंबर के दिन जामा मस्जिद में सर्वे को लेकर संभल में हिंसा भड़क गई थी। इस दौरान यहां खूब पथराव और आगजनी की गई थी। कई घंटों तक संभल में हालात बेकाबू रहे थे। हिंसा को काबू करने की कोशिश करते समय संभल डिप्टी एसपी तक के पैर में गोली लग गई थी। इस हिंसा में 4 लोग मारे गए थे।

जाम छलकाते 40 बाराती अरेस्ट

मुजफ्फरपुर, 1 दिसंबर (एजेंसियां)। बिहार में शराब पर प्रतिबंध है। बाबजूद इसके शादी समारोह में बारातियों को जाम छलकाते देखा जा रहा है। मुजफ्फरपुर में पुलिस ने अभियान चलाकर शराब के नशे में धुत 40 बारातियों को गिरफ्तार किया है। पुलिस अभियान में सात शराब कारोबारी शराब की बोतलों के साथ दबोचे गए हैं। गिरफ्तार किए गए बारातियों को उत्पाद थाने लाया गया, जहां से उन्हें कोर्ट में पेश किया गया। पुलिस के अधिकारियों का कहना है कि उत्पाद विभाग शराब तस्कर और शराबियों को लेकर लगातार अभियान चला रहा है। पुलिस ने दो वाहनों को भी जब्त किया है। पुलिस के जवान सादा वर्दी में लोगों पर नजर रखे हुए हैं। शादी समारोहों पर भी पुलिस की नजर बनी हुई है। जिले के विभिन्न थाना क्षेत्रों से शराब की डिलीवरी और शराबियों पर अंकुश लगाने को लेकर उत्पाद विभाग विशेष अभियान चला रहा है। उत्पाद विभाग की टीम ने विशेष अभियान चलाते हुए सड़क पर गाड़ियों को रोका और उनकी तलाशी की। मुजफ्फरपुर जिले के दो अलग-अलग थाना क्षेत्रों में पुलिस ने अभियान चलाकर शराबियों के खिलाफ कार्रवाई को अंजाम दिया। शराब के नशे में 40 बारातियों को उत्पाद विभाग की पुलिस ने गिरफ्तार किया है।

बरेली के स्कूल में क्या हुआ ? बच्चे करने लगे अजीबोगरीब हरकतें, खुद का दबाने लगे गला

बरेली, 1 दिसंबर (एजेंसियां)। उत्तर प्रदेश के बरेली के थाना नवाबगंज क्षेत्र के ग्राम ईंध जागीर के जूनियर हाई स्कूल में शनिवार को जो हुआ, उसने सभी को हैरान कर दिया। स्कूल के कुछ बच्चे अचानक अजीब हरकतें करने लगे। कोई अपनी गर्दन दबाने लगा तो कोई डर से चीखने लगा। बच्चों के इस व्यवहार ने पूरे स्कूल को दहशत में डाल दिया। हालात इतने बिगड़ गए कि पुलिस, डॉक्टर और प्रशासन को तुरंत बुलाना पड़ा। बच्चों के मुताबिक उन्हें लंबे नाखून और डरावने चेहरे ने डराया। घटना को लेकर गांव और आसपास के इलाकों में चर्चा गरमाई है। दरअसल ये घटना शनिवार दोपहर ढाई बजे के करीब की है। कक्षा 6 की छात्रा शबनूर अचानक गश खाकर गिर पड़ी और अपने हाथों से गला दबाने लगी। यह देखकर उसके साथ के बच्चे और टीचर चौंक गए। इसके तुरंत बाद और बच्चे दीप्ति, लता, फरीन, सोहेल, इंद्रजीत, और अंजुम भी उसी तरह की हरकतें करने लगे। सभी के चेहरों पर डर और दहशत साफ झलक रही थी। सभी जीमन पर गिर पड़े और चीखने लगे। जानकारी मिलने पर पुलिस और डॉक्टरों की टीम तुरंत स्कूल पहुंची और बच्चों की जांच की। हालांकि, किसी भी तरह की बीमारी या किसी जहरीले पदार्थ के संकेत नहीं मिले। बच्चों के इस अजीब व्यवहार को लेकर डॉक्टरों ने इसे मानसिक दबाव, सर्दी या सामूहिक डर का नतीजा बताया। यह सब छुट्टी से कुछ समय पहले हुआ, जब बच्चे स्कूल में अपनी कक्षाओं में थे। बच्चों के मुताबिक उन्हें ऐसा महसूस हुआ, जैसे कोई लंबे-लंबे नाखून और डरावने चेहरे वाला उनका गला दबा रहा था। कुछ बच्चों ने यह भी कहा कि उन्होंने भूत जैसा कुछ देखा।

स्कूल टीचर सुषमा और सायम सहरा ने तुरंत स्कूल प्रशासन और ग्राम प्रधान प्रेमशंकर गंगवार को इस बात की जानकारी दी। ग्राम प्रधान के साथ डॉक्टर विजय और उनकी टीम मौके पर पहुंचे। बच्चों की हालत देखकर तुरंत उन्हें प्राथमिक उपचार दिया गया। घटना के समय बच्चों ने दोपहर एक बजे मिड-डे मील में आलू-टमाटर की सब्जी और चावल खाए थे। हालांकि खाने को लेकर किसी भी छात्र ने कोई शिकायत नहीं की। यह संभावना भी जताई जा रही थी कि खाने से कोई रिएक्शन हो सकता है, लेकिन जांच में ऐसी कोई बात सामने नहीं आई।

21 साल पहले विदेश गया, वहां बेचता था कपड़े-मच्छरदानी, कंबोडिया के जेल में कैद है गोरखपुर का अभय?

गोरखपुर, 1 दिसंबर (एजेंसियां)। उत्तर प्रदेश के गोरखपुर के खजनी थाना क्षेत्र के एक गांव में मानव तस्करी के आरोपों की जांच करने पटना एनआईए की टीम सुबह धमक पहुंची। इस गांव का रहने वाला अभय नाथ दुबे करीब 21 साल पहले नौकरी की तलाश में कंबोडिया गया था। उस पर हाल ही में टूरिस्ट वीजा के नाम पर मानव तस्करी और विदेश से धन भेजने व साइबर फ्रॉड के आरोप लगे हैं। उसे कंबोडिया पुलिस ने जेल में बंद कर रखा है। उसी मामले में शिकायत मिलने पर एनआईए की टीम पहुंची। उसके साथ स्थानीय पुलिस और तहसील प्रशासन मौजूद रहा। आरोपी के परिवार के लोगों से पूछताछ व अन्य जानकारी लेकर टीम अयोध्या के लिए चली गई। खजनी थाना क्षेत्र के सतुआभार गांव निवासी अभय नाथ दुबे के घरवालों ने टीम के सदस्यों को बताया कि वह करीब 21 साल पहले कंबोडिया गया था। वहां पर वह फेरी लगाकर कपड़ा व मच्छरदानी बेचता था। घर पर पैसा भी भेजता था। टीम को अभय के भाई सिद्धनाथ दुबे ने बताया कि कुछ दिन पहले वह गलत संगत में पड़ गया था।

गोरखपुर से लौट रहे मंत्री नंदी का स्कोर्ट वाहन ट्रैक्टर से टकराया, बाल-बाल टला बड़ा हादसा

संतकबीर नगर, 1 दिसंबर (एजेंसियां)। औद्योगिक विकास प्राधिकरण गोरखपुर (गीडा) के स्थापना दिवस समारोह में भाग लेकर मंत्री नंदगोपाल नंदी लखनऊ लौट रहे थे। इसी बीच उनके पुलिस स्कोर्ट वाहन रात लगभग नौ बजे कांटे इंडियन ऑयल पेट्रोल पंप के पास ट्रैक्टर से हल्की टक्कर हो गई। घटना के बाद मौके पर हड़कंप मच गया। हालांकि किसी अप्रिय घटना की सूचना नहीं है। कांटे चौकी प्रभारी दिलीप सिंह ने बताया कि स्कोर्ट में चल रहे कुछ पुलिसकर्मियों को हल्की चोट आई है। दुर्घटना के बाद सभी वाहन बस्ती की ओर रवाना हो गये।

गीडा के स्थापना दिवस समारोह को संबोधित करते हुए प्रदेश के औद्योगिक विकास मंत्री नंदगोपाल गुप्ता नंदी ने कहा कि मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ उत्तर प्रदेश के औद्योगिक और आर्थिक प्रगति के सूत्रधार व शिल्पकार हैं। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के मार्गदर्शन और मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के नेतृत्व में हम सभी ने उत्तर प्रदेश को बदहाली के अतीत से खुशहाली के नए दौर में प्रवेश करते देखा है। उन्होंने कहा कि मुख्यमंत्री योगी की अगुवाई में समाज का प्रत्येक वर्ग, जनपद परिवर्तन का साक्षी बना है। आज उनके मार्गदर्शन में यूपी की पहचान उस संगम के रूप में हुई है जहां सांस्कृतिक, आर्थिक और औद्योगिक प्रगति का मिलन हो रहा है। उन्होंने कहा कि मुख्यमंत्री के सतत मार्गदर्शन में गीडा औद्योगिक विकास के पथ पर बढ़ते हुए नित नई उपलब्धियों को हासिल कर रहा है। वहीं एक दूसरे मामले में सड़क हादसे में महिला की मृत्यु के मामले में महुली पुलिस ने अज्ञात टेंपो चालक के खिलाफ मुकदमा दर्ज किया है।

महुली थाना के बनियाभार गांव निवासी इंद्रावती देवी अपने भाई शंभू पुत्र राम नारायण के साथ मायके से गत 24 नवंबर को बाइक से शाम के करीब 5:30 बजे अपने घर आ रही थी। वह महुली थाना के मैनसिर चौराहे के निकट पहुंची थी। इसी दौरान टेंपो की चपेट में आने से वह व उनके भाई घायल हो गए। इंद्रावती देवी के सिर में अधिक चोट लगने के कारण जिला अस्पताल ले जाते समय उनकी रास्ते में मृत्यु हो गयी थी।

THE LARGEST CIRCULATED AND READ HINDI DAILY IN TELANGANA & ANDHRA PRADESH

स्वतंत्र वार्ता

मेरा हैदराबाद

सोमवार, 2 दिसंबर, 2024 5

सुविचार

आज से बेहतर कुछ नहीं क्योंकि कल कभी आता नहीं और आज कभी जाता नहीं!

मुख्यमंत्री ने संक्रांति के बाद रैतु भरोसा के कार्यान्वयन की घोषणा की

हैदराबाद, 1 दिसंबर (स्वतंत्र वार्ता)। मुख्यमंत्री रेवंत रेड्डी ने संक्रांति त्योहार के बाद रैतु भरोसा निधि के वितरण की घोषणा करके किसानों के प्रति अपनी सरकार की प्रतिबद्धता की पुष्टि की है। रविवार को यहां अपने आवास पर मीडिया से बात करते हुए, मुख्यमंत्री ने किसानों को धान खरीद के लिए 500 रुपये के बोनस के माध्यम से निरंतर समर्थन का आश्वासन दिया और उनसे बीआरएस और भाजपा जैसे विपक्षी दलों के "भ्रामक वादों" की उपेक्षा करने का आग्रह किया। उन्होंने खुलासा किया कि रैतु भरोसा योजना के तौर-तरीकों को अंतिम रूप देने के लिए उपमुख्यमंत्री भट्टी विक्रमार्क के नेतृत्व में एक कैबिनेट उप-समिति का गठन किया गया है। रेवंत रेड्डी ने कहा कि नीति के क्रियान्वयन से पहले विधानसभा में इस पर चर्चा की जाएगी। उन्होंने कांग्रेस सरकार के किसान-केंद्रित एजेंडे पर जोर देते हुए किसानों को बीपीटी, एचएमटी और तेलंगाना सोना जैसी उच्च उपज वाली किस्मों की खेती करने के लिए प्रोत्साहित किया। मुख्यमंत्री ने राज्य पर 7 लाख करोड़ रुपये के कर्ज का बोझ डालने के लिए पिछली बीआरएस सरकार की भी आलोचना की। उन्होंने कहा, इतनी बड़ी देनदारियों के बावजूद, हमने पदभार ग्रहण करने के तुरंत बाद 7,625 करोड़ रुपये के लंबित रायथु बंधु बकाया को चुकाने सहित अपने वादों को पूरा किया है। उपलब्धियों पर प्रकाश डालते हुए मुख्यमंत्री ने कहा, तेलंगाना में 25.35,964 किसानों को लाभ पहुंचाते हुए 20,616 करोड़ रुपये के ऋण माफ किए गए हैं।

रेवंत रेड्डी ने बीआरएस सरकार की किसानों के साथ दशकों से चल रहे "विश्वासघात" की आलोचना की, जिसमें अधूरे वादे और सिंचाई परियोजनाओं के कथित कुप्रबंधन शामिल हैं। उन्होंने भाजपा नेता किशन रेड्डी की आलोचना को खारिज करते हुए उन्हें "गुजरात गुलाम" कहा, जिन्हें तेलंगाना के मुद्दों पर टिप्पणी करने का कोई अधिकार नहीं है। मुख्यमंत्री ने पूर्व प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू से लेकर आंध्र प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री वाईएस राजशेखर रेड्डी तक किसानों को प्राथमिकता देने की कांग्रेस की विरासत की पुष्टि करते हुए कहा, कांग्रेस ने हमेशा किसानों को सशक्त बनाने के लिए काम किया है।

तेलंगाना के हर किसान के लिए वित्तीय सुरक्षा सुनिश्चित करते हुए हमारा रैतु भरोसा निर्बाध रूप से जारी रहेगा। मुख्यमंत्री ने किसानों से विपक्षी दलों के झूठ को खारिज करने और कांग्रेस सरकार पर भरोसा रखने की भी अपील की।

कनकलम्मा जतारा में 30,000 श्रद्धालु एकत्र हुए

कुमराम भीम/आसिफाबाद, 1 दिसंबर (स्वतंत्र वार्ता)। प्राचीन श्री कंकलम्मा-कौथेश्वर स्वामी मंदिर में रविवार को पांच दिवसीय वार्षिक उत्सव के तहत बड़ी संख्या में श्रद्धालु उमड़े। यह उत्सव कौतला मंडल केंद्र में रंगारंग तरीके से मनाया गया। कुमराम भीम आसिफाबाद जिले, मंचेरियल जिलों और पड़ोसी महाराष्ट्र के कई इलाकों से करीब 30,000 श्रद्धालु सुबह से शाम तक पवित्र स्थान पर पहुंचे। उन्होंने कतारों में खड़े होकर मंदिर में दर्शन किए और विशेष पूजा-अर्चना की। उन्होंने अपनी खुशहाली और मनोकामना पूरी होने के लिए देवताओं को धन्यवाद देने के लिए नारियल फोड़े।

श्रद्धालुओं की उपस्थिति के बाद से कोटाला मंडल केंद्र में चहल-पहल बढ़ गई है। श्रद्धालु वैन, ऑटो-रिक्शा और बैलगाड़ी सहित विभिन्न साधनों से पवित्र स्थान पर पहुंचे हैं। अप्रिय घटनाओं को रोकने के लिए करीब 120 पुलिसकर्मियों को तैनात किया गया था। कागजनगर के डीएसपी रामानुजम ने सुरक्षा व्यवस्था की निगरानी की। मेले के सुचारू संचालन के लिए आयोजन समिति ने व्यापक प्रबंध किए हैं। आपातकालीन स्थिति से निपटने के लिए चिकित्सा शिविर लगाया गया है। श्रद्धालुओं की सुविधा के लिए अस्थायी शौचालय, पेयजल, प्रकाश व्यवस्था और अन्य बुनियादी सुविधाएं उपलब्ध कराई गई हैं। अप्रिय घटनाओं को रोकने के लिए सुरक्षा के भी प्रबंध किए गए हैं। मेदारी या बांस बुनकर समुदाय के सदस्य हिंदू कैलेंडर वर्ष के माघ महीने में देवताओं की पूजा करते हैं।

कांग्रेस ने एक साल में झूठे वादे किए : रेड्डी

हैदराबाद, 1 दिसंबर (स्वतंत्र वार्ता)। केंद्रीय कोयला मंत्री और भाजपा की राज्य इकाई के अध्यक्ष जी किशन रेड्डी ने कांग्रेस सरकार पर समाज के सभी वर्गों को धोखा देने का आरोप लगाते हुए कहा कि कांग्रेस सरकार ने पिछले एक साल में कुछ भी हासिल नहीं किया है और उसने तेलंगाना के लोगों का विश्वास खो दिया है।

किशन रेड्डी ने रविवार को कांग्रेस सरकार के एक साल के शासन पर आरोपपत्र जारी करते हुए कहा कि कांग्रेस पार्टी ने सत्ता में आने के 100 दिनों के भीतर अपने चुनावी वादों को पूरा करने की कसम खाई थी, लेकिन एक साल बाद भी एक भी वादा पूरा नहीं किया गया। उन्होंने किसानों और बेरोजगार युवाओं और महिलाओं सहित समाज के अन्य वर्गों से किए गए वादों की अनदेखी करने के लिए सरकार की आलोचना की।

उन्होंने आरोप लगाया कि कांग्रेस ने 2 लाख रुपये की कृषि

ऋण माफी और 15,000 रुपये के निवेश समर्थन का वादा किया था और मुख्यमंत्री ए रेवंत रेड्डी ने विधानसभा चुनाव से पहले किसानों से ऋण लेने को कहा था और अब बैंक उन्हें नया ऋण नहीं दे रहे हैं।

उन्होंने कहा कि तेलंगाना के लोगों से किए गए चुनावी वादों में 10 ग्राम सोना, एक स्कूटर और पात्र महिलाओं के लिए 2,500 रुपये मासिक पेंशन का आश्वासन दिया गया था, लेकिन कोई भी पूरा नहीं हुआ।

उन्होंने कहा कि कांग्रेस ने बेरोजगार युवाओं को 4,000 रुपये प्रति माह देने और सरकार गठन के पहले वर्ष में दो लाख नौकरियों का सृजन करने का भी वादा किया था, लेकिन अभी तक कुछ भी नहीं हुआ।

उन्होंने आरोप लगाया कि कांग्रेस ने फार्मा सिटी का विरोध किया और सत्ता में आने के बाद इस परियोजना को रद्द करने का वादा भी किया, लेकिन उसने परियोजना को आगे बढ़ाया और किसानों से जबरन जमीन हासिल करने की कोशिश की।

उन्होंने आरोप लगाया कि कांग्रेस सरकारी आवासीय स्कूल के छात्रों को स्वच्छ भोजन उपलब्ध कराने में सक्षम नहीं है और इन स्कूलों में नियमित रूप से फूड पॉइजनिंग की घटनाएं हो रही हैं।

ग्रामीणों को वितरित किए फेस मास्क

कुमराम भीम/आसिफाबाद, 1 दिसंबर (स्वतंत्र वार्ता)। मुख्य वन्यजीव वार्डन एलुजिंग मेरु ने लोगों से जंगल में घूम रहे बाघों से सावधान रहने का आग्रह किया। उन्होंने कवाल टाइगर रिजर्व के फील्ड डायरेक्टर एस शांताराम के साथ मिलकर रविवार को सिरपुर (टी) मंडल के इटिकालापहाड़ गांव के निवासियों को फेस मास्क बांटे।

मेरु ने कहा कि स्थानीय और पारगमन बाघ दोनों ही क्षेत्र और संभोग के लिए साथी की तलाश में जंगलों और कृषि क्षेत्रों में घूम रहे हैं।

साइबर धोखाधड़ी में शामिल दो गिरफ्तार

हैदराबाद, 1 दिसंबर (स्वतंत्र वार्ता)। तेलंगाना साइबर सुरक्षा ब्यूरो (टीजीएससीबी) ने करोड़ों रुपये की साइबर धोखाधड़ी से जुड़े दो लोगों को गिरफ्तार किया है। गिरफ्तार किए गए लोगों में राजस्थान के रहने वाले राहुल डांगी और राहुल भोई शामिल हैं। टीजीएससीबी अधिकारियों के अनुसार राहुल डांगी ने राहुल भोई की मदद से बैंक खाते खोले और साइबर जालसाजों को क्रेडेंशियल प्रदान किए। साइबर जालसाजों ने इस खाते का इस्तेमाल पीड़ित से 75 लाख रुपये की राशि ट्रांसफर करने के लिए किया।

शहर के निवासी पीड़ित को शेयर बाजार में निवेश से भारी मुनाफे का झांसा देकर जालसाजों ने 8.14 करोड़ रुपये ठग लिए। पीड़ित ने जालसाजों के निर्देश पर राहुल डांगी के बैंक खाते में 75 लाख रुपये ट्रांसफर किए। खाते में रकम जमा होने के बाद राहुल ने इसे अलग-अलग बैंक खातों में ट्रांसफर कर दिया। पीड़िता की शिकायत के बाद पुलिस ने मामला दर्ज किया और पाया कि इनमें से एक खाता राहुल डांगी का है।

टीजीसीएसबी की निदेशक शिखा गोयल ने कहा कि राहुल डांगी द्वारा संचालित खाते का इस्तेमाल 32 साइबर अपराध मामलों में किया गया और खाते में 3.7 करोड़ रुपये की राशि स्थानांतरित की गई। पुलिस ने कहा कि राहुल भोई ने धोखेबाजों के लिए पांच और खातों की व्यवस्था की थी और इन खातों का इस्तेमाल 20 साइबर अपराध मामलों में किया गया था।

धोखेबाजों ने फिर दिया धोखा

धोखाधड़ी में गिरफ्तार हुए फर्जी दस्तावेज से रिहा

हैदराबाद, 1 दिसंबर (स्वतंत्र वार्ता)। धोखाधड़ी के एक मामले में गिरफ्तार और चंचलगुडा केंद्रीय कारागार में बंद एक व्यक्ति ने जेल अधिकारियों को धोखा दिया और जाली जमानत दस्तावेज जमा करके रिहा हो गया। मीर शुजात अली को नरसिंगी पुलिस ने धोखाधड़ी के मामले में गिरफ्तार किया था और नवंबर में पुलिस ने उसे रिमांड पर लिया था। उसे चंचलगुडा केंद्रीय कारागार में रखा गया था।

पिछले सप्ताह शुजात अली ने जाली जमानत दस्तावेज प्रस्तुत किए, जेल से रिहा हुआ और फरार हो गया। सनसनीखेज फरारी का खुलासा तब हुआ जब नरसिंगी पुलिस ने एक अन्य मामले में कैदी ट्रांजिट (पीटी) वारंट दाखिल किया और संबंधित अदालत ने अनुरोध स्वीकार कर लिया। जब पुलिस टीम शुजात अली को हिरासत में लेने के लिए जेल पहुंची, तो उन्होंने पाया कि वह व्यक्ति जमानत पर रिहा हो चुका है। पुलिस को यह देखकर आश्चर्य हुआ कि जब उन्होंने अदालत से दोबारा पूछताछ की तो पता चला कि अदालत ने उन्हें जमानत नहीं दी है।

जेल अधिकारियों ने शुजात अली द्वारा प्रस्तुत दस्तावेजों की जांच की और पाया कि उसने जाली दस्तावेज प्रस्तुत किए थे। उस व्यक्ति ने पुराने जमानत के कागजात में छेड़छाड़ करके उसे अदालत में प्रस्तुत कर दिया था। सूत्रों ने बताया कि शुजात अली ने एक विचाराधीन कैदी रामू की मदद से दूसरे मामले में जमानत से संबंधित पुराने दस्तावेजों को जाली बनाकर जमा करवाया। उन दस्तावेजों के आधार पर वह जेल से रिहा होने में कामयाब हो गया। वरिष्ठ अधिकारियों ने इस चूक की जांच के आदेश दिए हैं। जेल अधिकारियों ने डबीरपुरा पुलिस में शिकायत दर्ज कराई, जिसके बाद मामला दर्ज किया गया। विशेष टीमें शुजात अली को पकड़ने की कोशिश कर रही हैं, जो पहले भी राज्य में कई मामलों में शामिल रहा है और गिरफ्तार भी हुआ है।

राजभवन में नागालैंड राज्य का स्थापना दिवस मनाया गया

हैदराबाद, 1 दिसंबर (स्वतंत्र वार्ता)। एक भारत श्रेष्ठ भारत पहल के तहत राज्यपाल जिष्णु देव वर्मा ने आज नागालैंड राज्य के स्थापना दिवस के अवसर पर राजभवन के प्रतिष्ठित दरबार हॉल में विशेष समारोह आयोजित किया।

भारतीय संघ का 16वां राज्य नागालैंड आधिकारिक तौर पर 1 दिसंबर, 1963 को बना था। इस महत्वपूर्ण अवसर पर राज्यपाल ने नागालैंड के लोगों को हार्दिक बधाई और शुभकामनाएं दीं। उन्होंने राज्य के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाले दूरदर्शी नेताओं और नागरिकों को श्रद्धांजलि दी। सभा को संबोधित करते हुए राज्यपाल ने विभिन्न राज्यों के स्थापना दिवस मनाने के महत्व पर प्रकाश डाला और इस बात पर जोर दिया कि ऐसे आयोजनों से विभिन्न संस्कृतियों और विरासतों के प्रति आपसी समझ और प्रशंसा बढ़ती है। समारोह में नागालैंड का प्रतिनिधित्व करने वाले प्रतिभाशाली कलाकारों द्वारा पारंपरिक गीतों और नृत्यों सहित जीवंत सांस्कृतिक प्रदर्शन किए गए। कार्यक्रम में हैदराबाद में बसे नागालैंड के निवासियों के साथ-साथ राजभवन के अधिकारियों और कर्मचारियों ने भी उत्साहपूर्वक भाग लिया। इस कार्यक्रम में एक भारत श्रेष्ठ भारत पहल द्वारा समर्थित राष्ट्रीय एकता और सांस्कृतिक सद्भाव की भावना को रेखांकित किया गया।

आईआईटी-हैदराबाद ने की हाफ मैराथन की मेजबानी

संगारेड्डी, 1 दिसंबर (स्वतंत्र वार्ता)। आईआईटी-हैदराबाद रनर्स क्लब ने रविवार को संगारेड्डी जिले के कंडी में प्रमुख संस्थान के परिसर में फिटनेस, लचीलापन और सामुदायिक भावना का जश्न मनाने वाले एक ऐतिहासिक कार्यक्रम आईआईटी-हैदराबाद हाफ मैराथन 2024 की मेजबानी की।

तीन दौड़ श्रेणियों मैराथन 21.1 किमी, 10 किमी दौड़ और 5 किमी फन रन में 1,500 से अधिक प्रतिभागियों ने भाग लिया। इस अवसर को और अधिक प्रेरणादायी बनाते हुए माउंट एवरेस्ट पर चढ़ने वाली सबसे कम उम्र की महिला पूर्णा मालवथ ने मुख्य अतिथि के रूप में कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई।

संगारेड्डी के एसपी सीएच रूपेश मुख्य अतिथि के रूप में शामिल हुए। उन्होंने फिटनेस और अनुशासन के महत्व पर जोर दिया और आईआईटी हैदराबाद की सराहना की, जिसने अकादमिक उत्कृष्टता के साथ-साथ स्वास्थ्य और तंदुरूस्ती को बढ़ावा देने वाला एक मंच तैयार किया है। आईआईटी-एच के निदेशक प्रोफेसर बीएस मूर्ति और अन्य लोग भी मौजूद थे।

भारी मात्रा में गांजा के साथ तीन गिरफ्तार

हैदराबाद, 1 दिसंबर (स्वतंत्र वार्ता)। साइबराबाद की चंदाननगर पुलिस ने गांजा आपूर्ति करने वाले एक गिरोह का खुलासा किया है। बीती रात हनुमान मंदिर के पास गंगाराम गांव में एन.एच. नंबर 65 पर पुलिस ने तीन आरोपियों को गिरफतार किया। गिरफ्तार आरोपियों में चमन, निवासी धीवानी जिला हरियाणा, शिवमपेटा उमाकांत उर्फ चिन्नू, अर्जुन साई कृष्णा बोवनपल्ली हैदराबाद शामिल हैं। जबकि राकेश मूल निवासी हरियाणा फरार है। मिली जानकारी के अनुसार विश्वसनीय सूचना पर चंदननगर थाने के एसआईपी एम.अंजनेयुलु अपने कर्मचारियों के साथ बीती रात हनुमान मंदिर गंगाराम के पास वाहनों की जांच कर रहे थे। उन्होंने एक महिंद्रा एक्सयूवी वाहन को रोका, क्योंकि उसका चालक संदिग्ध तरीके से गाड़ी चला रहा था। कार में तीन व्यक्ति मौजूद थे। कार की बारीकी से तलाशी लेने पर उसमें (60) भूरे रंग के बंडल मिले, जिनमें से गांजे की तीखी गंध आ रही थी। उन्हें तुरंत थाने लाया गया और पूछताछ करने पर चमन ने स्वीकार किया कि वह ड्राइवर है और हैदराबाद में बेचने के लिए ओडिशा राज्य से कम कीमत पर सूखा गांजा ला रहा है। उच्च दरों पर फरार आरोपी राकेश मूल निवासी हरियाणा ने कार की व्यवस्था की। 29 नवंबर को ओडिशा से हैदराबाद आते समय ओआरआर पठानचेरूवु के रास्ते रास्ते में दो आरोपी शामिल हो गए और मोटर साइकिल पल्सर 125 पर उसका पीछा किया। दो आरोपी जुड़वां शहरों में परिवहन किए गए गांजा की डिलीवरी कर रहे हैं। आरोपियों से 57 किलोग्राम गांजा बरामद हुआ है। बरामद गांजा का मूल्य 18 लाख बताया जा रहा है।

बाघ हमला : पत्नी की सूझबूझ से बची सुरेश की जान

पत्नी की बहादुरी की हो रही प्रशंसा

कुमराम भीम/आसिफाबाद, 1 दिसंबर (स्वतंत्र वार्ता)। शनिवार को बाघ द्वारा हमला किए गए किसान सुरेश की पत्नी राउतु सुजाता ने दावा किया कि शनिवार को सुबह करीब 11 बजे सिरपुर (टी) मंडल के डुब्बागुडेम गांव में जब बाघ ने उनके पति पर हमला किया तो उन्होंने बाघ पर पत्थर फेंके और शोर मचाया।

सुजाता ने उस भयावह घटना को याद करते हुए कहा कि मैं एक छोर पर कपास के गोले चुन रही थी, जबकि सुरेश दूसरी तरफ हमारे खेत में था। जब बाघ सुरेश की गर्दन पर झपटा तो मैंने शोर मचाया। मैंने तुरंत उस पर पत्थर फेंके। इस बीच, सुरेश ने कुल्हाड़ी से उस पर हमला करके बाघ को रोका, जिससे वह उसे छोड़कर जंगल में भाग गया।

महिला ने आगे बताया कि कपास की फसल काट रहे दो अन्य किसान दंपत्ति तुरंत मौके पर पहुंचे और शोर मचाकर उन्हें बचाया। उसने बताया कि बाद में उसने अपने रिश्तेदारों को घटना के बारे में बताया, जिन्होंने सुरेश को पहले सिरपुर (टी) के एक अस्पताल और फिर कागजनगर के एक निजी अस्पताल में भर्ती कराया।

स्थानीय लोगों का मानना है कि महिला की बहादुरी की वजह से सुरेश की जान बच गई। उन्होंने कहा कि अगर सुजाता घबरा जाती और मौके से भाग जाती तो बाघ किसान को मार देता। उन्होंने तर्क दिया कि सुजाता की सहजता और बहादुरी ने किसान की जान बचाने में अहम भूमिका निभाई।

वन अधिकारियों ने बताया कि कागजनगर मंडल के ईसगांव गांव में गननाराम गांव की मोरले लक्ष्मी (21) को मौत के घाट उतारने वाले बाघ ने करीब 20 किलोमीटर की यात्रा करने के बाद सुरेश पर हमला किया। उन्होंने बताया कि घटनास्थल से बाघ के पैरों के निशान मिले हैं। उन्होंने बताया कि बाघ एक दिन में करीब 50 किलोमीटर की यात्रा कर सकता है।

किसान ने सफलतापूर्वक की काला नमक चावल की खेती

सिद्दीपेट, 1 दिसंबर (स्वतंत्र वार्ता)। तेलंगाना के लोगों को चावल की सबसे स्वस्थ किस्मों में से एक पेश करने के उद्देश्य से, जैविक किसान जक्कुला तिरुपति यादव (33) ने चेरियाल मंडल के नागापुरी गांव में अपने कृषि क्षेत्र में कालानमक चावल की खेती की है। माना जाता है कि कालानमक को भगवान बुद्ध ने उत्तर प्रदेश के सिद्धार्थ नगर के किसानों के लिए पेश किया था, जिसे 2012 में भौगोलिक संकेत टैग मिला था। भारत सरकार ने माना कि चावल की प्राचीन किस्म अभी भी उत्तर प्रदेश के 11 जिलों में उगाई जा रही है। तिरुपति (जिन्होंने 2019 में अपने पिता राजैया को चौथे चरण के कैंसर का पता चलने के बाद जैविक खेती में कदम रखा था) ने अपने पिता को स्वस्थ चावल परोसने के उद्देश्य से काले चावल और लाल चावल की कई किस्मों सहित कई प्रकार के धान की खेती की थी। हालांकि वह अपने पिता को नहीं बचा सके, जो कैंसर से पीड़ित थे, लेकिन तिरुपति ने जैविक खेती में अपने जुनून को आगे बढ़ाया।

हालांकि, उन्होंने पाया कि कई किसान काले और लाल रंग के चावल में रुचि नहीं दिखा रहे हैं। हालांकि, कालानमक, जिसका छिलका काला रहता है, सामान्य सफेद चावल की तरह ही दिखेगा। इसमें बाजरे से बेहतर प्रोटीन होगा और इसका ग्लाइसेमिक इंडेक्स भी बहुत कम होगा। तिरुपति ने कहा कि मधुमेह के रोगी भी बिना किसी डर के इस चावल का सेवन कर सकते हैं। चावल में ओमेगा वसा 3 और 6 था जो आम तौर पर मछली में पाया जाता है। चूंकि कई भारतीय आम तौर पर आयरन और जिंक की कमी से पीड़ित होते हैं, तिरुपति ने देखा कि यह निश्चित रूप से इस समस्या का समाधान करेगा क्योंकि कालानमक में जिंक और आयरन प्रचुर मात्रा में होगा। तिरुपति (जिन्होंने वनकालम सीजन के दौरान 1 एकड़ और 10 गुंटा पर कालानमक की खेती की) ने दावा किया कि वह तेलंगाना और आंध्र प्रदेश में इस किस्म की खेती करने वाले पहले किसान थे। उन्हें लगभग 12 क्विंटल फसल मिली। हालांकि, उन्होंने यासांगी के दौरान इसकी मांग को देखते हुए खेती के तहत क्षेत्र को दो से तीन एकड़ तक बढ़ाने का फैसला किया।

किसान उत्पादक संगठन नागपुरी रायथु सेवा की स्थापना करने वाले इस किसान ने क्षेत्र के किसानों को कालानमक और अन्य प्राचीन और स्वस्थ धान की किस्मों की खेती के लिए प्रोत्साहित करने का फैसला किया। वह चावल को 100 रुपये प्रति किलोग्राम से लेकर 150 रुपये प्रति किलोग्राम की न्यूनतम कीमत पर बेच रहे थे।

पकड़ा गया जेबकतरों का कुख्यात गिरोह

हैदराबाद, 1 दिसंबर (स्वतंत्र वार्ता)। साइबराबाद पुलिस ने जेबकतरों के कुख्यात गिरोह के 5 सदस्यों को गिरफ्तार किया है, जो सार्वजनिक परिवहन बसों में पर्स और सोने की चेन चोरी के दर्जनों मामलों में कथित रूप से शामिल थे। गिरफ्तार किए गए लोगों में उपदी बोलेनाथ (42), अब्दुल मन्नान (29), मोहम्मद खादीर (26), कांबले सिकंदर (50) और उप्पादा सुनील (28) शामिल हैं, जो मल्लेपल्ली के अफजलसागर के निवासी हैं। दो अन्य सदस्य कांबले सिकंदर और मक्कन कसाब फरार हैं।

पुलिस के अनुसार, यह गिरोह भीड़-भाड़ वाली बसों में घूमता था और मौका पाकर यात्रियों से पर्स और सोने की चेन झपट लेता था। इसके बाद गिरोह के सदस्य सामान लेकर फरार हो जाते थे। डीसीपी (माधापुर) डॉ.जी विनीत ने कहा कि यह गिरोह मियापुर, आरसी पुरम, रायदुर्गम, हुमायूंनगर, चंदनगर, केपीएचबी, फिल्मनगर, माधापुर और बंजारा हिल्स पुलिस स्टेशनों में दर्ज 30 मामलों में शामिल था।

स्वतंत्र वार्ता

सोमवार, 2 दिसंबर- 2024

सब अर्बन ट्रेनों का परिचालन : निजीकरण की ओर बढ़ता कदम

रघु ठाकुर

कुछ समाचार पत्रों में इस आशय के समाचार आए हैं कि सब-अर्बन ट्रेनों को रेल-नेटवर्क से अलग करके राज्यों को सौंपने का प्रस्ताव नीति आयोग की ओर से सरकार के पास पहुंचाया गया है। इस प्रस्ताव के अनुसार रेलवे की माली हालत सुधारने के लिए यह आवश्यक है। नीति आयोग ने सुझाव दिया है कि ईएमयू-डीएमयू सहित 200 किलोमीटर तक चलने वाली लोकल रेल गाड़ियां राज्य सरकारों को दी जा सकती हैं। यद्यपि इनका परिचालन रेलवे के अधीन रहेगा तथा रेलों के फेरे, किराया, स्टॉपेज आदि राज्य सरकार तय कर सकेंगी। नीति आयोग ने इस प्रस्ताव का आधार रेलवे की जर्जर आर्थिक स्थिति को बताया है और यह प्रचार निरंतर रेलवे के द्वारा चलाया जा रहा है कि यात्री किराए में 56 प्रतिशत अनुदान रेलवे देता है। यह प्रचार है कि भारतीय रेल घाटे में है और सरकार 56 प्रतिशत अनुदान दे रही है। मात्र नीति आयोग के प्रस्ताव का ही नहीं, यह प्रचार रेलवे अपने टिकटों के पीछे पिछले कई वर्षों से निरंतर छाप कर भी कर रही है। टिकट के पीछे लिखा जाता है कि क्या आपको पता है कि आपके टिकट में 56 प्रतिशत का अनुदान है? हालांकि हमारा समाज इतना सहनशील हो चुका है कि वह इस झूठ के प्रति विरोध तो दूर की बात कोई प्रतिक्रिया भी व्यक्त नहीं करता। हालांकि, कभी भी रेलवे ने या नीति आयोग ने इस जानकारी के विवरण को प्रकाशित नहीं किया कि आखिर यह 56 प्रतिशत घाटा,जो रेलवे को हो रहा है, उसका आधार क्या है? जबकि, वर्तमान यात्री किराए से लगभग 40 से 50 प्रतिशत कम किराए पर यात्री रेलगाड़ियां चलती रही हैं। 2014 में केंद्र में भाजपा सरकार बनने के बाद यात्री किराए में काफी वृद्धि हुई है। यहां तक कि सामाजिक दायित्व के आधार पर जो सुविधा यात्रियों के विभिन्न वर्गों को मिलती थी उन्हें भी इस सरकार ने बंद कर दिया है। 2014 के पहले वरिष्ठ नागरिकों को यात्री किराए में 40 प्रतिशत तक की छूट थी, महिलाओं को तो 50 प्रतिशत तक की छूट थी और इसी प्रकार अन्य कई श्रेणी के यात्रियों को भी यात्री किराये में छूट मिलती थी। ये रियायतें को रेलवे ने बंद कर दिया। कोरोना काल का बहाना बनाकर भारत सरकार ने जो रियायतें बंद करने के निर्णय लिए थे उन्हें फिर शुरू भी नहीं किया। यद्यपि कोरोना काल भी समाप्त हो गया। मतलब साफ है कि कोरोना सरकार के लिए एक बहाना मात्र ही था।

कोरोना काल में ही सरकार ने टिकटों के निरस्तीकरण (रद्द करने) की दरें भी काफी बढ़ा दीं थी। अब स्थिति यह है कि स्लीपर क्लास के टिकट को कैंसिल (रद्दनिरस्त) करने पर न्यूनतम 65 रुपया कटता है, एसी 3 टीयर का 120 रुपया कटता है और अन्य उच्च श्रेणी का तो 200 रुपया तथा कुछ गाड़ियों में तो लगभग आधा पैसा कट जाता है। जबकि गाड़ियों में इतनी भीड़ है कि दो-दो तीन-तीन माह तक यात्री गाड़ियों में आरक्षण नहीं मिलता और कोई सीट खाली भी नहीं जाती। यानि अगर एक टिकट निरस्त होता है तो दूसरे 10 उसको लेने वाले खड़े रहते हैं। रेलवे के लिए यह निरस्तीकरण मुनाफे का धंधा हो गया है।

अगर नीति आयोग या रेलवे इसका आंकड़ा जारी करें कि पूरे देश में टिकटों के निरस्तीकरण से उसे कितनी कमाई हुई है तो यह राशि अरबों रूपयों में पहुंचेगी। ब्रिटिश काल से यात्रियों को श्रेत्रेक-जर्नीय की सुविधा दी जाती थी। पहले तो 300 किलोमीटर पर श्रेत्रेक-जर्नीय मिलती थी, फिर 500 किलोमीटर पर हुई और अब उसे बंद ही कर दिया गया है। इस सुविधा को बंद करके भी रेलवे अरबों रूपयों का मुनाफा कमा रही है। गरीब-रथ के नाम पर जो मजाक हुआ था, उसे कौन भूल सकता है और कुछ गरीब रथों में तो शायिकायों की संख्या एक बोगी में बढ़ाकर 80 कर दी गई थी। जिसका परिणाम हुआ था कि साइड लोअर, साइड मिडल और साइड अपर शायिका (बर्थ) का यात्री ना बैठ सकता था और ना ही सो सकता था। बेड-रोल के पैसे अलग लिए जाते हैं यानि एक अर्थ में किराया कम नहीं हुआ था बल्कि सीटों की संख्या बढाकर रेलवे की कमाई में वृद्धि की गई थी। अब वर्तमान सरकार ने भी एसी-3 टीयर में एक नई इकोनॉमी क्लास शुरू की है, ज0सिकी बोगी में सीटों की संख्या 72 से बढ़ाकर 80 से 90 के बीच कर दी है। किराए में कमी मात्र 50 रुपये की है परंतु दो शायिकायों के बीच का अंतर इतना कम कर दिया है कि यात्री पांव फैलाकर भी नहीं बैठ सकता। दरवाजे के पास जो स्थान अटेंडेंट और बैड-रोल आदि रखने के लिए रखा जाता था, उसे खत्म कर दिया है। हालत यह है कि बोगी के प्रवेश द्वार पर बेड-रोल के बड़े-बड़े बंडल पड़े रहते हैं तथा यात्रियों को इससे भारी असुविधा का सामना करना पड़ता है। शताब्दी ट्रेन का किराया तो बढा ही है। परंतु, बोगियों की हालत बदतर हो गई है। 45 वर्ष पूर्व की बोगियां यानि शताब्दी जब बनी थी उन्ही बोगियों में आज भी यात्रा यात्रा कर रहे हैं। प्रधानमंत्री जी ने वंदे भारत ट्रेन को अपनी प्रिय गाड़ी घोषित किया है परंतु उसका किराया शताब्दी से भी लगभग डेढ़ गुना ज्यादा है। यह भी प्रचारित किया जा रहा है कि अब वंदे भारत गाड़ियों में स्लीपर लगाकर स्लीपर वंदे भारत ट्रेनें चलाई जायेंगी। परंतु, इनका किराया कितना होगा यह आने पर ही मालूम होगा। यह बहुत प्रचार किया जाता है कि वंदे भारत हाई स्पीड ट्रेन है जिसकी अधिकतम गति 200 कि.मी.॰ घंटा की है। दरअसल, यह 200 कि.मी.॰घंटे की गति नहीं है बल्कि गति की अधिकतम क्षमता है। परंतु, यह चलती किस रफ्तार से है यह भी समझना होगा!! वंदे भारत भोपाल से नई दिल्ली आने में 7 घंटे 36 मिनट का समय लेती है और शताब्दी एक्सप्रेस 8 घंटे 25 मिनट तथा राजधानी एक्सप्रेस 8 घंटे 30 मिनट का समय लेती है। वंदे भारत और शताब्दी एक्सप्रेस के समय के बीच 49 मिनट का फर्क है। परंतु, वंदे भारत के स्टॉपेज भोपाल से दिल्ली के बीच मात्र तीन हैं-वीरांगना लक्ष्मीबाई झांसी, ग्वालियर तथा आगरा कैंट। जबकि शताब्दी एक0स्प्रेस के स्टॉपेज बढ़ाकर अब 9 कर दिए गए हैं। अगर एक स्टेशन पर ट्रेन 2 मिनट भी रुकती है तो गति को कम करने और फिर से गति को पकड़ने में 5 से 7 मिनट लग ही जाते हैं। कुछ जगह तो 10 मिनट तक भी लग जाते हैं। अगर आप औसत 7 मिनट भी मान लें तो 9 स्टॉपेज के 63 मिनट होते हैं। जबकि वंदे भारत और शताब्दी एक्सप्रेस के बीच पहुंचने का अंतर मात्र 49 मिनट है यानी अगर शताब्दी के भी उतने ही स्टॉपेज हो जितने वंदे भारत के या वंदे भारत के भी उतने ही स्टॉपेज हो तो वंदे भारत, शताब्दी एक्सप्रेस से लगभग 14 मिनट ज्यादा समय लेगी। यह भारत सरकार के हाई स्पीड ट्रेनों की गति की असलियत है। वंदे भारत अगर 200 किलोमीटर की रफ्तार से लगातार चलती है तो उसे दिल्ली पहुंचने में मुश्किल से 3रु30 घंटे का समय लेना चाहिए। परंतु, वंदे भारत 705 किलोमीटर का सफर तय करने में 7 घंटे 36 मिनट लेती है यानि लगभग 90 किलोमीटर प्रति घंटा और शताब्दी एक्सप्रेस लगभग 85 किलोमीटर प्रति घंटा। लगभग, ऐसी ही रफ्तार से राजधानी एक्सप्रेस भी चलती है। अब प्रधानमंत्री जी की ड्रीम हाई स्पीड ट्रेन और कांग्रेस के जमाने की शताब्दी एक्सप्रेस में वास्तव में कोई अंतर नहीं है। बल्कि, कई बार तो ऐसा महसूस होता है कि भारत सरकार के इशारे पर शताब्दी एक्सप्रेस को रेलवे के तंत्र में उपेक्षित किया जाता है ताकि वंदे भारत को महत्वपूर्ण बनाया जा सके। 0ऐसे भी समाचार आए हैं कि भारत अब स्वदेशी बुलेट ट्रेन जिसकी टॉप स्पीड 280 किलोमीटर प्रति घंटा होगी चलाने की तैयारी में है। इस योजना पर भारत सरकार 867 करोड़ रुपया 16 कोच बनाने पर खर्च कर रही है। यानि एक कोच की कीमत लगभग 55 करोड़ रुपए होगी। जबकि, अभी जो कोच तैयार हो रहे हैं उनमें पैसेंजर गाड़ियों के डिब्बे तो 10 से 15 करोड़ में बन जाते हैं। शताब्दी और वंदे भारत एक्सप्रेस के कोच भी 20 से 30 करोड़ में बन जाते हैं। इस सब चर्चा का निष्कर्ष यही है कि, सरकार कुछ नया नहीं कर पा रही है।

पुलिस पावर का दुरुपयोग ?

सुप्रीम कोर्ट ने जिस तरह से यूपी पुलिस पर कड़ी टिप्पणी की है उससे एक बार फिर देश के पुलिस सिस्टम की हालत को उजागर कर दिया है। सुप्रीम अदालत ने स्पष्ट कहा कि पुलिस पावर का दुरुपयोग कर रही है, जबकि उसे अधिक संवेदनशील होने की जरूरत है। यह टिप्पणी इस बात का प्रमाण है कि पुलिसिया व्यवस्था में सुधार की कितनी आवश्यकता है। सुप्रीम कोर्ट ने एक याचिका पर सुनवाई के दौरान यूपी पुलिस को जैसी फटकार लगाई है, वह यह कहने के लिए काफी है कि मर्ज काफी पुराना और गंभीर है। शीर्ष अदालत को अगर यह कहना पड़े कि पुलिस पावर का आनंद ले रही है और उसे संवेदनशील होने की जरूरत है, तो इसका मतलब है कि खाकी को जितनी शक्तियां दी गई हैं वह उन अपेक्षाओं पर खरी नहीं उतर पा रही है। जाहिर है पुलिस सिस्टम में कितनी सुधार की जरूरत है। समाज के बड़े तबके में अब पुलिस के लिए आदर नहीं बल्कि डर का भाव रहता है। उसे थाने में जाकर अपनी बात कहने से डर लगता है। कहा जाता है कि पुलिस के साथ सहयोग करें, लेकिन ऐसा तब तक संभव नहीं है जब तक कि आम जन का पुलिस पर भरोसा नहीं होगा। अभी तक औपनिवेशिक मानसिकता की जकड से बाहर न निकलने वाली पुलिसिया कार्यप्रणाली ने लोगों के मन में आदर की बजाय डर बैठा दिया है। इसकी वजह से थाने में कानून का नहीं, डर का शासन ज्यादा दिखता है। ऐसे में सवाल लाजमी है कि पुलिस इस मानसिकता से निकलेगी कैसे? देखा जाए, तो उसकी बुनियाद में अब भी 1861 का वही पुलिस एक्ट है, जो अंग्रेजों ने हिंदुस्तानियों पर राज करने के लिए बनाया था। डेढ़ सौ बरस से ज्यादा हो गए और इस दौरान देश-समाज ने इतनी तरक्की कर ली, लेकिन उसकी तुलना में पुलिस सिस्टम वहीं जडवत ठहरा हुआ लगता है। कहने को सिस्टम में सुधार के लिए 1977 में नेशनल पुलिस कमिशन बना, रिबेरो समिति, पद्मनाभैया समिति, मलिमथ समिति आई, लेकिन किसी के भी सुझावों पर अमल करना जरूरी नहीं समझा गया। सुप्रीम कोर्ट ने एक याचिका पर सुनवाई करते हुए 2006 में पुलिस सुधारों के लिए कुछ दिशा-निर्देश दिए थे। इसमें कहा गया था कि स्टेट सिक्योरिटी कमिशन का गठन हो और डीजीपी समेत दूसरे अफसरों को भी कम से कम दो साल तक पदस्थापना का मौका मिले। इसका मकसद था कि पुलिस को राजनीतिक दबाव से निकाला जाए, ताकि वह स्वतंत्र रूप से काम कर सके। लेकिन इन पर अमल कितना हुआ, यह कहने की जरूरत नहीं है। मार्च 2023 में सरकार ने संसद में जानकारी दी थी कि देश में प्रति एक लाख आबादी पर औसतन केवल 152.80 पुलिसकर्मी हैं। यूपी में तो यह आंकड़ा और भी कम था, महज 133.86। इसमें कोई दो राय नहीं कि पूरे देश की पुलिस दबाव में है। सीनियर्स का प्रेशर, काम के घंटे, छुट्टियों की कमी- कुल मिलाकर यह स्थिति उस डिपार्टमेंट के लिए सही नहीं कही जा सकती, जिस पर सुरक्षा जैसी अहम जिम्मेदारी है। सभी सोचते हैं कि पुलिस सुधर जाए, लेकिन यह भी सोचना होगा कि उनके काम का माहौल सुधरे। दोनों चीजें साथ होंगी, तभी परिणाम बेहतर आने की उम्मीद की जानी चाहिए।

यह डेमोक्रेसी है

डॉ टी महादेव राव

"क्यों चाचा! सुबह-सुबह घर के आगे खड़े होकर कर क्या रहे हो? ऊपर से थरथर कांपे भी जा रहे हो। इतनी ज्यादा ठंड लग रही है क्या ?""ना ना ऐसा कुछ नहीं है। कोई विधायक आकर चांटा न लगा दे, कोई नेता आकर कसके लात न मार दे बस इसी डर से कंपकंपी छूट रही है बेटा!""गजब है! हम जैसे आम लोगों पर वार करने के लिए वे ऐरे गैरे लोग थोड़े ही हैं। राजनेता हैं! उनसे लड़ने भिड़ने जैसा हमारा स्तर कहां? हमारी औकात क्या? हम तो अकिंचन हैं। फिर डर कैसा चाचा?""देखो बेटे! शायद इन दिनों समाचारों से तुम्हारा वास्ता छूट गया है। सड़क के किनारे अपने दोस्त से बातें करता हुआ एक व्यक्ति अपने विधायक के आने को नजरअंदाज कर दिया। फिर क्या था उस भोले मानस का गाल तमाचों से लाल हो उठा।

""लेकिन बिना वजह उसे किसने मारा?""और कौन? अपने वोट देकर जिसे जिताया वही विधायक। जब उसने कारण पूछा तो विधायक उस पर बिगड़ते हुए बोले 'मेरे जैसा विधायक यहां आया, तुमने मुझे प्रणाम नहीं किया?' ""ऐसा क्या? देखते ही हाथ जोड़ने जैसा कौन सा महान काम किया उस शख्स ने?""कहता है पच्चीस वर्षों से विधायकगिरी चला रहा है। उसका कहना है कि राह चलते सारे लोग उसे प्रणाम करें। उसके लिए इससे बड़ी योग्यता क्या हो सकती है कहकर लोगों पर बौखला रहा है।""अच्छा! कितनी जनसेवा किया इससे अधिक कितने सालों से राजनीति में है - इसे योग्यता का प्रमाण माना जाए? ऐसे अहंकारी, ईगोवाले बहुत बिरले ही होते हैं चाचा!""नहीं! ऐसा नहीं है। परसों के परसों हैदराबाद के मुख्य सड़क पर आंध्र के एक विधायक ने अपना विराट रूप दिखाया, क्या तुम्हें मालूम नहीं? उसने आम जनता पर अपना गुस्सा नहीं उतारा, बल्कि सीधे सीधे पुलिस पर चढ़ाई कर दी। ऊपर से गाली गलोच करने लगा। विधायक के वाहन को पुलिस ने रोका बस विधायक ने आसमान सिर पर उठा लिया। कहा मैं ही सरकार हूं, भले ही इस राज्य का नहीं हूं। तो क्या इतनी बेज्जती करोगे मेरी गाड़ी रोक कर? तुम सबकी नौकरियां जब तक नहीं खा लूंगा, तब तक मैं चैन की सांस नहीं लूंगा कहकर वह सड़क पर सांड की तरह बैठ गया।""हां चाचा! उस बीच मीडिया में यह खबर देख चुका हूं मैं। विधायक की गाड़ी अगर जानबूझकर रोकी गई हो तो बुरा ही हुआ न?""मेरी बात पूरी नहीं हुई है बेटा! पिछले दिनों कन्नड राज्य में एक नेता जी ने आम व्यक्ति को इसलिए चांटा मारा कि उसने नेताजी के कंधे पर हाथ रखने की कोशिश की। मैं और मेरा ओहदा क्या है और तुम क्या हो?इस तरह उसने जमीन आसमान को एक कर डाला। बाद में जब बहुत शोर मचा तो उसने सफाई दी कि कोविड के नियमों के अंतर्गत दूरी बनाए रखना चाहता था, इसलिए उसने ऐसा किया।"ऐसे लोगों को उनकी किस्मत पर छोड़ दें। तर्क यह है कि हमने वोट डाले तभी न इन नेताओं को राजयोग आया। अब तमिलनाडु के मुख्यमंत्री को ही उदाहरण स्वरूप देखें, जिन्होंने अपने कॉन्वॉय सड़क के किनारे रोककर एंबुलेंस को रास्ता दिया। सड़क पर अर्जी लेकर खड़ी एक निर्धन औरत की समस्या का समाधान वहीं अधिकारियों से बात करके किया। ऐसे बर्ताव की जनता तारीफ कर रही है। ऐसे लोगों को आदर्श के रूप में लेकर इन नेताओं को कुछ सीखना चाहिए।""क्या चाचा! आदर्श और आलू का क्या औचित्य है इन दिनों। जब तक कुर्सी पर हैं राज चलाएं, लोगों पर अधिकार जताएँ, जब तक पैसा आता है - उसे बचाएं, भविष्य के लिए रखें।

अब भाजपा का मिशन दिल्ली

अशोक भाटिया

अगले दो-तीन महीने में दिल्ली में विधानसभा का चुनाव होना है। दिल्ली में विधानसभा चुनाव के लिए भारतीय जनता पार्टी और कांग्रेस से मुख्यमंत्री का चेहरा कौन होगा, यह राजनीतिक हलकों में बड़ा सवाल है। दोनों ही दलों में इस सवाल को ही हर बार लगातार हो रहे नुकसान की वजह भी माना जा रहा है। कांग्रेस पूर्व मुख्यमंत्री शीला दीक्षित के कामकाज को आधार बना रही है और आम आदमी पार्टी पर हमलावर भी है। यहां भी इस पद के दावेदार का चेहरा गायब है। इसका संकट यह भी है कि अगर अंत में चुनावी गठबंधन हो जाता है तो इस स्थिति में कांग्रेस का पूरा गणित बिगड़ जाएगा क्योंकि हाल ही में हुए लोकसभा चुनाव में इसका नुकसान उठा चुकी है। अंदरखाने पार्टी में अभी भी गठबंधन में चुनाव मैदान में जाने का बड़ा डर भी चुनौती बना हुआ है। इस समय राजधानी की सबसे हॉट सीटों में से एक सबकी नजर 'नई दिल्ली सीट' पर टिकी हुई है। यहां से दिल्ली के पूर्व सीएम और आम आदमी पार्टी के राष्ट्रीय संयोजक अरविंद केजरीवाल चुनाव लड़ते हैं।ऐसे में इस बार भाजपा उन्हें कड़ी टक्कर देने की तैयारी कर रही है। इन्हीं तैयारियों के बीच भाजपा सूत्रों से जो खबर आ रही है कि पार्टी इस बार केजरीवाल के सामने एक कद्दावर और हिंदूवादी चेहरे को उतारने की तैयारी में है। यह पूर्व में विधायक और लोकसभा सांसद भी रहे हैं। इनके पिता राजधानी दिल्ली के पूर्व सीएम रहे हैं।सूत्रों के अनुसार पश्चिमी दिल्ली से दो बार सांसद रहे प्रवेश वर्मा विस चुनाव में नई दिल्ली क्षेत्र से केजरीवाल को चुनौती दे सकते हैं। नई दिल्ली विस क्षेत्र में उनकी सक्रियता से ऐसे संकेत मिल रहे हैं। सूत्रों के मुताबिक, पूर्व सांसद प्रवेश वर्मा को भाजपा नई दिल्ली से केजरीवाल के सामने चुनाव मैदान में उतार सकती है।वर्मा ने नई दिल्ली विधानसभा क्षेत्र में कार्यकर्ताओं और नागरिकों के साथ बैठक और संवाद शुरू किया है। बीते कुछ दिनों में वो ऐसे चार-पांच कार्यक्रम कर चुके हैं। वर्मा पांचवीं विधानसभा में भी महरौली से विधायक चुने गए थे, लेकिन 2014 में भाजपा ने उन्हें पश्चिमी दिल्ली से लोकसभा प्रत्याशी बनाया था और वह जीते थे। सूत्र बताते है कि केजरीवाल के सामने कोई भी चेहरा उतरे पर उसे मुख्यमंत्री का चेहरा घोषित नहीं किया जा सकता । देखने वाली बात यह है कि भाजपा ने एक साल के भीतर संपन्न हुए महाराष्ट्र, झारखंड, हरियाणा, तेलंगाना, राजस्थान, मध्य प्रदेश और छत्तीसगढ़ विधानसभा चुनावों में भी मुख्यमंत्री पद का उम्मीदवार घोषित नहीं किया था। इनमें से 5 राज्यों में भाजपा को बड़ी जीत मिली जिसमें महाराष्ट्र भी शामिल है। पार्टी के सूत्रों का कहना है कि मुख्यमंत्री पद का उम्मीदवार घोषित न करने के पीछे कई कारण हैं। यह रणनीति अन्य राज्यों में लागू की गई सफल रणनीति के जैसे ही है। इससे आंतरिक मतभेदों को रोकने में मदद मिलती है और चुनावी फोकस व्यक्ति-केंद्रित अभियानों के बजाय नीतिगत मुद्दों पर रहता है। भाजपा ने 2015 के दिल्ली विधानसभा चुनाव में पूर्व आईपीएस अधिकारी किरण बेदी को मुख्यमंत्री पद का उम्मीदवार बनाया था। लेकिन पार्टी को सिर्फ तीन सीटों पर ही जीत मिली थी। 2013 में, भाजपा ने हर्षवर्धन को मुख्यमंत्री पद का उम्मीदवार बनाया था। पार्टी 32 सीटों के साथ सबसे बड़ी पार्टी बनकर उभरी थी, लेकिन बहुमत से दूर रह गई थी। 28 सीटें जीतने वाली आम आदमी पार्टी ने कांग्रेस के आठ विधायकों के समर्थन से सरकार बनाई थी। हालांकि, यह सरकार सिर्फ 49 दिन ही चल पाई थी। पिछले विधानसभा चुनाव में भाजपा बिना मुख्यमंत्री का चेहरा घोषित किए ही चुनाव मैदान में उतरी थी, लेकिन उसे केवल आठ सीटें ही मिली थीं। स्पष्ट है कि महाराष्ट्र चुनाव जीतने बाद भाजपा दिल्ली विधानसभा चुनाव में पूरी ताकत झोंकने जा रही है। ये ठीक है कि भाजपा को झारखंड में झटका लगा है, लेकिन हरियाणा के बाद महाराष्ट्र जीत लेने के बाद जोश बढ़ना तो स्वाभाविक ही है। लोकसभा चुनाव में मिले जख्मों के लिए लगातार दो चुनावों की जीत तो भाजपा के लिए बाम का ही काम कर रही होगी। लोकसभा चुनाव की बात करें, तो महाराष्ट्र में तो हरियाणा के मुकाबले काफी बुरा हाल हुआ था, लेकिन महाराष्ट्र की ऐतिहासिक जीत ने तो भाजपा नेतृत्व, नेताओं और कार्यकर्ताओं का हौसला बढ़ाकर नेक्स्ट लेवल पर पहुंचा दिया होगा। दिल्ली की बात करें तो लोकसभा चुनाव में भाजपा ने लगातार तीसरी बार एक जैसी ही कामयाबी हासिल की है। दिल्ली की सभी सात लोकसभा सीटें भाजपा के पास ही हैं, और विधानसभा चुनाव का सबसे ज्यादा दबाव तो दिल्ली के सातों सांसदों पर ही है। गौरतलब है कि लोकसभा चुनाव के विपरीत विधानसभा चुनाव में भाजपा लगातार पिछड़ रही है। 2013 में भाजपा सबसे बड़ी पार्टी बनकर उभरी जरूर थी, लेकिन उसने सरकार नहीं बनाने का फैसला किया था। तब भाजपा को 32 विधानसभा सीटें मिली थीं, लेकिन 2015 में दिल्ली की 70 विधानसभा सीटों में से वो 3 ही जीत पाई थी, 2020 में भाजपा के प्रदर्शन में सुधार जरूर आया लेकिन उसके 8 विधायक ही विधानसभा पहुंच पाये। आप पार्टी के ग्राफ की बात करें तो और 2015 के नतीजों पर नजर डालें तो 70 में से 67 विधानसभा सीटें जीतने वाली अरविंद केजरीवाल की आम आदमी पार्टी ने 2020 में भी 62 सीटें जीती थी। बीते प्रदर्शनों के हिसाब से देखें तो सीटें घटने की सूरत में भी आम आदमी पार्टी के सत्ता में वापसी के चांस तो हैं, लेकिन जिस तरह जेल से छूट कर चुनाव कैंपेन का अरविंद केजरीवाल को कोई फायदा नहीं मिला, फिर से सरकार बनाना आसान नहीं लगता। पिछले दो चुनावों में भाजपा भले ही फिसड्डी साबित हुई हो, लेकिन उसकी तरकश में कैलाश गहलोत जैसे तीर शामिल चुके हैं, जिसे अरविंद केजरीवाल के खिलाफ ही इस्तेमाल किया जाना है। और उसी खेमे से निकलीं स्वाति मालीवाल की मुहिम भी तो भाजपा के पक्ष में ही देखी जा सकती है। स्वाति मालीवाल भले ही भाजपा के साथ न आई हों, उसकी तकनीकी वजह भी हो सकती है क्योंकि वो आप की ही राज्यसभा सदस्य हैं, लेकिन उनका अभियान तो भाजपा के लिए मददगार ही माना जाएगा। स्वाति मालीवाल की मुहिम में भाजपा के कैंपेन की झलक देखी जा सकती है। मीडिया से बातचीत में भी भाजपा नेता बता रहे हैं, हम माइक्रो-लेवल पर मुद्दों को ध्यान से देख रहे हैं - और उन मुद्दों को ही बड़े स्तर पर उठाएंगे। अरविंद केजरीवाल का साथ छोड़ कर आये कैलाश गहलोत ने खुद ही मोर्चा संभाल लिया है, और भाजपा ने भी जिम्मेदारियां देनी शुरू कर दी है। कैलाश गहलोत चुनाव समन्वय समिति और भाजपा की चुनाव घोषणा पत्र समिति का सदस्य बनाया गया है।

एमपी उपचुनाव का परिणाम और मोहन सरकार का कामकाज

नरेंद्र तिवारी

एमपी की मोहन यादव सरकार को 13 दिसंबर को सालभर पूर्ण हो जाएगा। बीते वर्ष की इसी तारीख को भाजपा के केंद्रीय नेतृत्व ने एमपी में उज्जैन के विधायक मोहन यादव को प्रदेश के मुख्यमंत्री का दायित्व सौंपा था। अब जबकि मोहन यादव की सरकार को सालभर हुआ जाता है। यह जानना बहुत जरूरी हो जाता है कि मोहन यादव के नेतृत्व में प्रदेश की सरकार कैसा काम कर रही है। इस लिहाज से प्रदेश की भाजपा सरकार के कामकाज की समीक्षा होना चाहिए। यह समीक्षा खुद सरकार ने भी कराना चाहिए और केंद्रीय नेतृत्व ने भी कराना चाहिए, ताकि प्रदेश की जनता का हाल क्या है, यह जाना जा सके। वैसे किसी भी राज्य सरकार के कामकाज की समीक्षा का कोई निश्चित और निर्धारित पैमाना नहीं है। राजनीति के लिहाज से तो सरकार के कामकाज की समीक्षा करना बहुत ही कठिन है, याने आप सत्ताधारी दल में है तो आपको आपकी सरकार के हर कार्य की तारीफ करना ही है। फिर चाहे उस कार्य या योजना से जनता को लाभ मिल रहा है या नहीं, इसके उलट आप विपक्षी दल है तो आपको आलोचनाओं का सहारा लेना होता है।

सरकार के अच्छे कार्यों को जो जनता के लिए लाभकारी है, या प्रदेश की खुशहाली और बेहतरी में सहायक है तब भी आलोचना ही करना पड़ती है। आजकल राजनीति के कारखाने में ऐसे नेताओं का निर्माण बंद हो गया जो अपनी ही सरकार की आलोचना कर दे या जो विपक्ष में रहते हुए भी सरकार के कामकाज की तारीफ कर सके। कुलमिलाकर राज्य सरकारों के कामकाज की समीक्षा का हाल टीवी पर चलती पार्टी प्रवक्ताओं की अंतहीन और बेनतीजा बहस की तरह ही दिखाई पड़ता है। सही मायने में सरकार के कामकाज की असली समीक्षक राज्य की जनता ही होती है। जनता जो चुनाव के माध्यम से अपने मताधिकार की ताकत से राज्य सरकार के कामकाज पर अपनी मोहर लगाती है। महाराष्ट्र में भाजपानीत महायुति की प्रचंड विजयी राज्य की सत्ताधारी सरकार के मुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे के कामकाज पर जनता की मोहर है। झारखंड राज्य में हेमंत सोरेन की वापसी राज्य की जनता का मुख्यमंत्री के कामकाज को आशीर्वाद प्रदान करना ही माना जाएगा। सरकार के कामकाज की असली समीक्षक प्रदेश की जनता है। इस लिहाज से मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री मोहन यादव के कामकाज की समीक्षा को एमपी के दो विधानसभा क्षेत्र में हुए उपचनाव के परिणामों से जोड़कर देखा जा रहा है। वैसे इतने बड़े प्रदेश में जहां 230 विधानसभा की सीटें हो महज दो विधानसभाओं के नतीजे को सरकार के मूल्यांकन का आधार बनाना न्यायसंगत तो नहीं माना जा सकता है, किन्तु एक नजरिया तो पेश किया ही जा सकता है। मध्यप्रदेश में दो विधानसभा में उपचुनाव हुआ एक बुधनी जो प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री, वर्तमान में केंदीय कृषि मंत्री, राष्ट्रीय राजनीति में मध्यप्रदेश का प्रमुख चेहरा शिवराजसिंह चौहान के सांसद बन जाने से खाली हुई। दूसरी रामनिवास रावत के कांग्रेस से भाजपा में शामिल होने से रिक्त हुई विजयपुर विधानसभा जिन्हें भाजपा में शामिल होने पर सरकार में वन मंत्री बनाया गया। इन दो सीटों पर हुआ चुनाव भाजपा की प्रदेश सरकार के कामकाज पर जनता की मोहर है। पहले बुधनी की बात कर लेते है। यह विधानसभा भाजपा का गढ़ कही जाती है। अब तक 17 चुनावों में 11 बार भाजपा तो मात्र 6 बार कांग्रेस ने जीत दर्ज की है। 13 नवंबर 2024 को हुए उपचुनाव में यहां भाजपा के रमाकांत भार्गव और कांग्रेस के राजकुमार पटेल के मध्य मुकाबले में भाजपा ने इस सीट पर 13848 मतों के अंतर से जीत दर्ज की है। यह अंतर विधानसभा चुनाव 2023 के मुकाबले काफी कम है। बुधनी से शिवराज चौहान ने एक लाख से अधिक मतों से विजय दर्ज की थी।

उसके मुकाबले यह विजय बेहद कमजोर है। बुधनी में सरकार के कामकाज से प्रभावित ओर खुशी जाहिर करने वाले मतदाताओं को संख्या में कमी हुई है। उपचुनाव श्योपुर जिले की विजयपुर विधानसभा में भी हुआ जहां का परिणाम प्रदेश की सरकार और मुखिया मोहन यादव के कामकाज से जनता की नाराजी व्यक्त करता प्रतीत हो रहा है। यहां हुए चुनाव में कांग्रेस से भाजपा में शामिल हुए रामनिवास रावत को भाजपा ने अपना उम्मीदवार बनाया था। कांग्रेस ने मुकेश मल्होत्रा पर दांव खेला था। रामनिवास रावत जो भाजपा की सरकार में वन मंत्री बना दिए गए थे। चुनावी रण में कांग्रेस उम्मीदवार से 7000 मतों से पराजित हो गए। आमतौर पर माना जाता है कि उपचुनाव में सत्ताधारी दल के विजय रहने की संभावना बहुत अधिक रहती है।

चाय का बिल और बजट की बिसात

डॉ. सुरेश कुमार मिश्रा

एक छोटा-सा गाँव था, जहाँ हर सुबह चाय की एक छोटी दुकान पर गाँव के बड़े-बुजुर्ग, नेता, अधिकारी और मीडियाकर्मी चाय की चुस्की लेते और देश के मसलों पर बड़ी-बड़ी बातें करते। एक दिन की बात है कि गाँव के प्रधानजी ने वहाँ घोषणा कर दी कि सरकार गाँव के विकास के लिए बड़ा बजट भेजने वाली है। यह खबर सुनते ही चाय की दुकान पर भीड़ उमड़ पड़ी। सब अपने-अपने हिसाब से बजट का हिस्सा मांगने लगे।

और यहीं से शुरू हुआ बहस का दौर।पहले बुजुर्ग रामलाल चाचा, जो हर बहस में शांति से तर्क प्रस्तुत करने के लिए जाने जाते थे, ने चाय का गिलास उठाते हुए कहा, "मेरा मानना है कि इस बजट का बड़ा हिस्सा शिक्षा पर खर्च होना चाहिए। जब तक हमारे बच्चों को अच्छे स्कूल और पढ़ाई की सुविधाएँ नहीं मिलेंगी, विकास कैसे होगा?"दूसरे सज्जन, जो सदा विरोध में बोलने के लिए प्रसिद्ध थे, बोले, "अरे चाचा, किस शिक्षा की बात कर रहे हो? पहले सड़कें बनवाओ। यहाँ तो इतनी खराब सड़कें हैं कि अगर किसी का एक्सीडेंट हो जाए, तो सीधे अस्पताल जाने की जरूरत भी नहीं पड़ती—रास्ते में ही पूरा इलाज हो जाता है!" प्रधानजी, जो एक कुशल राजनीतिज्ञ थे, ने समझदारी से मुस्कुराते हुए कहा, "बजट तो सबके लिए है। थोड़ा-थोड़ा हर विभाग में लगाया जाएगा।" तभी प्रधानजी का एक ख़ास सहायक उनके कान में फुसफुसाया, "सर, यह चाय का बिल बहुत बढ़ गया है।

रोज-रोज की इन बैठकों का हिसाब लगाना मुश्किल हो गया है।"इस बात को सुनकर प्रधानजी को मानो मिर्ची लग गई। उन्होंने सोचा कि चाय का बिल ही इतनी बड़ी रकम का हो गया, तो बजट कैसे संभाला जाएगा। वे बोले, "भाई, सबसे पहले तो इस चाय के बजट को कम करना पड़ेगा। जब तक गाँव में बजट का काम ठीक से नहीं हो जाता, तब तक सबको अपने पैसे से ही चाय पीनी होगी।" तभी, गाँव के एक बुद्धिजीवी किस्म के व्यक्ति, पंडितजी, जो हमेशा गाँव के ज्ञानकोष कहे जाते थे, बोले, "तो इसका मतलब ये है कि गाँव का पूरा बजट चाय में ही उड़ाने का इरादा है! देखिए, यह जनता का पैसा है। इसे ऐसे बर्बाद करने का क्या मतलब है?" मीडियाकर्मी, जो इस बहस में और मसाला तलाश रहे थे, तुरंत अपना कैमरा निकालकर बोले, "प्रधानजी, क्या आप सच में मानते हैं कि गाँव का विकास चाय के बजट पर निर्भर है?"प्रधानजी थोड़े झेंप गए। बोले, "नहीं-नहीं, ऐसा नहीं है। मेरा मतलब था कि हमें विकास के हर पहलू पर ध्यान देना चाहिए।"

शकुनि दुर्योधन के साथ था लेकिन

काम पांडवों के लिए कर रहा था, क्या ये सच है?

महाभारत के पात्रों में शकुनि मामा का रोल सबसे अहम रहा, जिसके कारण महाभारत का युद्ध हुआ। कौरवों के मामा शकुनि कुटिल बुद्धि के लिए विख्यात थे। छल, कपट, प्रतिशोध और दुष्कृत्यों में माहिर शकुनि युद्ध के अंत तक कौरवों के साथ रहे। आइये जानते हैं कैसे कौरवों के मामाश्री शकुनि दुर्योधन के साथ होकर पांडवों के लिए काम कर रहे थे।

शकुनि के ईर्द-गिर्द घूमती है महाभारत की कहानी

प्रतिशोध की आग में जल रहे शकुनि ने पांडवों और कौरवों के बीच भी प्रतिशोध की ऐसी आग लगाई जिसके आखिर में वह खुद भी खत्म हो गया। पांडवों के विनाश के लिए शकुनि की चली चाल में वह स्वयं भी नष्ट हो गया। यही कारण है कि महाभारत की कहानी कौरवों और पांडवों के ईर्द-गिर्द जितनी घूमती है, उतनी ही शकुनि के आसपास भी घूमती है।

दुर्योधन के साथ रहकर पांडवों के लिए काम कर रहा है शकुनि

यह बात सच है कि शकुनि था तो दुर्योधन के साथ लेकिन काम पांडवों के लिए कर रहा है था। यह काम था पांडवों के विनाश का। शकुनि पांडवों के विनाश के लिए कौरवों को पग-पग तैयार कर रहा था। लेकिन शकुनि के मन में कौरवों के लिए भी बदले की भावना थी। इसका कारण यह था कि धृतराष्ट्र (शकुनि के जीजा) ने शकुनि के पूरे परिवार को कारागर में डाल दिया था और पूरे परिवार को केवल एक समय मुट्ठीभर अनाज दिया जाता था। परिवार वालों ने निर्णय लिया कि यह भोजन सबसे छोटे पुत्र यानि शकुनि को दिया जाए, जिससे कि वह जीवित रहकर बदला ले सके। इस तरह शकुनि ने एक-एक कर अपने परिवार की मृत्यु देखी और बहन के ही परिवार को नष्ट करने का प्रण लिया। सभी परिवार की मृत्यु हो जाने के बाद शकुनि ही आखिर में जीवित बचा। दुर्योधन ने पिता से विनती की कि उसे माफ कर दिया जाए और जेल से बाहर निकाला जाए। जेल से बाहर आकर शकुनि ने सबका विश्वास जीत लिया। बाद में दुर्योधन ने शकुनि को अपना मंत्री भी नियुक्त कर दिया। शकुनि ने धीरे-धीरे दुर्योधन को अपने मोहपाश में बांध लिया, जिसके बाद शकुनि का काम और भी आसान हो गया। शकुनि के कारण ही पांडवों को वनवास भोगना पड़ा, द्रौपदी का चीरहरण हुआ और आखिर में महाभारत का युद्ध हुआ।

महाभारत के युद्ध में भले ही शकुनि ने दुर्योधन का साथ दिया लेकिन वह जितनी नफरत कौरवों से करता था उतनी ही नफरत पांडवों से भी करता था। इसलिए उसने ऐसी चाल चली जिससे पांडव और कौरवों के बीच महाभारत का युद्ध हुआ।

दुर्योधन के गिरने पर द्रौपदी नहीं, भीम हंसे थे

महाभारत की ऐसी ही घटनाएं जिनमें हंसी की बड़ी भारी क़ीमत चुकानी पड़ी

हम जीवन में अक्सर छोटी-छोटी हंसी-मज़ाक़ के कारण मची बड़ी महाभारत को देखते रहते हैं, किंतु कभी भी उनसे सबक़ नहीं लेते। जबकि यह हास उपहास बनकर दोनों उन दोनों पक्षों के बीच कटुता ही बढ़ाता है। ऐसे में 'महाभारत' की ये चार कथाएं और उनसे हासिल होने वाले सबक़ हमें सिखाते हैं कि ग़लत समय और ग़लत व्यक्ति पर, ग़लत ढंग और ग़लत नीयत से हंसने की हमें और देशकाल को कितनी भारी क़ीमत चुकानी पड़ सकती है।

दुर्योधन का गिरना और भीम का हंसना

महाभारत में दुर्योधन और उसके भाई खलनायक माने जाते हैं, लेकिन लोगों को यह कम ही पता है कि कौरव-पांडवों की दुश्मनी में भीम के मुंह का बड़ा हाथ था। भीम कौरवों की हंसी उड़ाने का मौक़ा भी नहीं चूकते थे। भीम की इसी आदत ने पांडवों के प्रति बचपन से जलन रखने वाले दुर्योधन के मन में वैर की आग को और अधिक धधका दिया था। सभापर्व की कथा के अनुसार राज्य के बंटवारे में युधिष्ठिर को खांडवप्रस्थ का क्षेत्र मिला था, जिसे श्रीकृष्ण की कृपा से पांडवों ने सुंदर इंद्रप्रस्थ बना लिया था। इस नगर में मयदानव ने युधिष्ठिर के लिए एक अपूर्व महल बनाया था। इसकी ख़ूबी यह थी कि उसमें जल में स्थल का और स्थल में जल का भ्रम हो जाता था। युधिष्ठिर के राजसूय यज्ञ में जब दुर्योधन इस महल को देखने पहुंचा, तब ज़मीन के धोखे में पानी में गिर गया। तब 'जले निपतितं दृष्ट्वा भीमसेनो महाबलः। जहास जहसुश्चैव किंकराश्च सुयोधमन।।' अर्थात दुर्योधन को जल में गिरा देख भीमसेन हंसने लग। माना जाता है कि तब द्रौपदी दुर्योधन पर हंसी थी लेकिन सभापर्व की मूल कथा के अनुसार इस घटना के समय युधिष्ठिर और द्रौपदी दोनों ही वहां नहीं थे। भीम के साथ तीनों छोटे भाई और श्रीकृष्ण खड़े थे। दुर्योधन स्वभाव से जन्मजात चिड़चिड़ा था ही, उस अहंकारी को यह हंसी इतनी चुभी कि वह इसे कभी भूल न सका। अंततः यह हंसी भाई-भाई के बीच महाभारत कराकर आंसुओं के साथ ही धुली।

सबक़

किसी के गिर जाने पर उसे दुर्योधन की तरह गंवार समझकर हम भी अक्सर भीम की तरह भूल कर जाते हैं जबकि यदि हम सहायता न करें तो कम से कम श्रीकृष्ण की तरह तटस्थ रहे। गिरे हुए का उपहास असल में न सही, मन में तो कुरुक्षेत्र सजा ही देगा।

ओ बैल... ओ बैल... बोलते दुःशासन का नाच

शकुनि की मदद से कौरवों ने जब जुएं में पांडवों का सारा राज्य हथिया लिया, तब शर्त के अनुरूप पांचों पांडव द्रौपदी को साथ लेकर वन के लिए निकले थे। जब वे राजसी वस्त्र त्यागकर मृगचर्म में सबके बीच आए तो दुःशासन उन्हें कष्ट में देखकर ख़ुशी से नाच उठा। वह अपने बड़े भाई दुर्योधन के गिरने पर भीम द्वारा उड़ाया मज़ाक भूला नहीं था। बचपन से ही सारे कौरव भाई अधिक खाने और लड़ने के कारण भीम को 'बैल' कहकर चिढ़ाते थे। उस समय भी पांडवों को दुर्दशा में पड़ा देख 'एव ब्रुवाणमजिनैर्विवासितं दुःशासनस्तं परिनृत्यति स्म। मध्ये कुरूणां धर्मनिबद्धमार्गे गौगौरिति स्माह्वयन्मुक्तलज्जः।।' अर्थात मृगचर्म धारण किए भीम को देखकर निर्लज्ज दुःशासन कौरवों के बीच में उनकी हंसी उड़ाते हुए नाचने लगा और 'ओ बैल, ओ बैल' पुकारने लगा। उस समय दुःशासन को मारने पर उतारू भीम को जैसे-तैसे युधिष्ठिर ने रोका। इतिहास गवाह है कि दुःशासन की इस हंसी ने भीम को इतना भड़काया कि उन्होंने उसी घड़ी भावी युद्ध में उसे मारकर उसकी छाती का रक्तपान करने की नृशंस प्रतिज्ञा तक कर डाली। की ही नहीं, अपितु साढ़े तेरह बरस बाद हुए युद्ध में उसे पूरी करके ही दम लिया। महाभारत में 'दुःशासन द्वारा पांडवों का उपहास एवं भीम, अर्जुन, नकुल, सहदेव द्वारा शत्रुओं को मारने की भीषण प्रतिज्ञा' शीर्षक से पृथक अध्याय ही है, जो कदाचित इस तरह के बेढंगे नाच से बचने के लिए ही महत्व के साथ शामिल किया गया है।

सबक़

किसी के सुख में सुखी होना प्रेम है, किसी के दुःख में दुःखी होना करुणा है, मगर किसी के दुःख में सुख पाना ईर्ष्या है। ईर्ष्या और अमर्ष से विपत्तिग्रस्तों पर हंसना दुःशासन की वृत्ति है। यह वृत्ति आत्मनाश ही नहीं करती, कुलनाशक साबित होती है।

दुर्योधन की मुस्कान और मैत्रेय जी का शाप

दुर्योधन घोर अवज्ञाकारी और अहंकारी था। पांडवों के साथ जुएं में हुए छल और चीरहरण के बाद युद्ध की धमकी देकर गए पांडवों से धृतराष्ट्र डरे हुए थे। उन्होंने, भीष्म, द्रोण, कृप और गांधारी ने दुर्योधन को संधि के लिए बहुत समझाया, लेकिन वह राज़ी नहीं हुआ। वनपर्व के दसवें अध्याय की कथा है कि एक दिन महर्षि मैत्रेय जी हस्तिनापुर आए। वे वनवासी पांडवों से मिलकर लौटे थे और महर्षि वेदव्यास की प्रार्थना पर दुर्योधन को शिक्षा देने आए थे। महर्षि जब दुर्योधन को शांति का पाठ पढ़ा रहे थे, तब 'ऊरुं गजकराकारं करेणाभिजघान सः। दुर्योधनः स्मितं कृत्वा चरणेनोल्लिखन्‌ महीम।।' अर्थात उस समय दुर्योधन ने कुटिलतापूर्वक मुस्कराकर हाथी की सूंड के समान अपनी जांघ को ठोंका और पैर के नाखूनों से पृथ्वी को कुरेदने लगा। यह हरकत असभ्यता की हद थी। उस दुर्बुद्धि ने महर्षि को कोई उत्तर भी नहीं दिया।

बस ढीठ की तरह मुस्काता हुआ मुंह नीचा किए चुपचाप खड़ा रहा। उसकी इस उपेक्षा भरी हंसी पर मैत्रेय जी आगबबूला हो उठे। इतना कि उन्होंने धृतराष्ट्र के सामने ही जल का आचमन करके दुर्योधन को शाप दे दिया, 'जा! तेरे द्रोह के कारण बड़ा भारी युद्ध छिड़ेगा। उसमें बलवान भीम अपनी गदा की चोट से तेरी जांघ को तोड़ देंगे। वनपर्व का यह शाप शल्यपर्व की युद्ध कथा में सिद्ध हो ही गया। महर्षि ने जाते वक़्त चेताया था कि यदि पांडवों से शांति संधि कर ली तो शाप का असर न होगा, मगर दुर्योधन अंत तक न माना।

सबक़

जो 'बड़ों' की बात मानते हैं उन्हें 'छोटों' की लात नहीं खानी पड़ती है। जब बड़े अच्छी और भले की शिक्षा दे रहे हों, तब असहमति के बावजूद हंसी नहीं उड़ाना चाहिए। ऐसी हंसी उन्हें क्रोधित कर सकती है। क्रोध में शाप मिलते हैं, जो सामर्थ्य के बावजूद पराजय का मूल कारण बन जाते हैं।

ऋषियों से मज़ाक और पूरे यदुवंश का नाश

महाभारत का मौसल पर्व, स्त्री पर्व से भी अधिक दारुण माना गया है। इसलिए कि इसमें महाभारत के महानायक श्रीकृष्ण के कुल के नाश की अति करुण कथा है, जो केवल उद्दंडता में ऋषियों के साथ हंसी-मज़ाक के कारण शापित हो मारे गए। कथा के अनुसार एक समय महर्षि विश्वामित्र, कण्व और नारद आदि द्वारका आए हुए थे। तब यदुवंश के अभिमानी राजकुमारों की एक टोली को ठिठौली सूझी। दैव के मारे सारण आदि वीर श्रीकृष्ण और जामवंती के बेटे साम्ब को गर्भवती स्त्री का स्वांग बनाकर ऋषियों के पास ले गए। उन्होंने बनावटी विनम्रता के साथ जब ऋषियों से पूछा कि इसके गर्भ से क्या उत्पन्न होगा, तब ऋषिगण क्रोधित हो उठे। ऋषियों ने राजकुमारों को शाप दिया कि स्त्रीवेश वाला यह पुरुष साम्ब एक भयंकर मूसल पैदा करेगा, जो यादवों के विनाश का कारण बनेगा।

जब मज़ाक भारी पड़ा तब राजकुमारों को होश आया और वे डरे। उन्होंने लोहे के उस मूसल को बारीक़ पीसकर समुद्र में फेंक दिया था। उसी के असर से वह विषैली और धारदार घांस उगी थी, जिससे एक-दूसरे को मारते हुए सारे यादव यमलोक पहुंच गए। श्रीमद्भागवत पुराण तो यहां तक कहता है कि श्रीकृष्ण के पैर में अंतिम समय लगे बाण में भी 'मज़ाक के उसी मनहूस मूसल' का टुकड़ा बतौर नोक जुड़ा हुआ था। द्वारका के प्रभासतीर्थ क्षेत्र में आज उस स्थान पर एक सुंदर मंदिर भी है, जहां मान्यता के अनुसार श्रीकृष्ण को बाण लगा था।

सबक़- अपनी हंसी की खातिर बड़ों का मज़ाक बनाना अपराध है। अपराध करने पर दंड ही मिलता है। ऐसी हंसी, जिसमें ख़ुद का मज़ा हो मगर दूसरों का अपमान, वह कभी शुभ नहीं हो सकती। जो शुभ नहीं उसमें आनंद कैसा! जो हंसी दिल दुःखाकर पाई वह हंसी कैसी!

दुर्योधन के मामा शकुनि पर पांडवों के मामा कौन?

महाभारत महाकाव्य की घटनाएं और उससे मिलने वाली सीख आज भी प्रासंगिक हैं। इसमें भगवान कृष्ण द्वारा दिया गया गीता का ज्ञान भी है और छल-कपट के अंतहीन किस्से भी हैं।

कई बार परीक्षा-प्रतियोगिता में जनरल नॉलेज के प्रश्न-उत्तर में महाभारत से जुड़े प्रश्न-उत्तर भी पूछ लिए जाते हैं। साथ ही सोशल मीडिया पर आजकल क्विज भी बेहद लोकप्रिय हैं, जो ज्ञान बढ़ाने का अच्छा सोर्स हैं। आज हम क्विज के इन प्रश्न-उत्तर के जरिए महाभारत से जुड़े कुछ रोचक फैक्ट्स जानते हैं।

प्रश्न : किसने कौरवों को युद्ध में पराजित होने का श्राप दिया था?

उत्तरः ऋषि नारद ने कौरवों को श्राप दिया था कि युद्ध में कौरवों की हार होगी। नारद की यह भविष्यवाणी सच साबित हुई और पांडवों के हाथों कौरवों का सर्वनाश हुआ।

प्रश्न : उस दिव्य पक्षी का नाम क्या है जिसने एक पेड़ पर बैठकर कुरुक्षेत्र का पूरा युद्ध देखा था?

उत्तरः धर्म-शास्त्रों के अनुसार जटायु एक दिव्य पक्षी था, जिसने एक पेड़ पर बैठकर महाभारत का पूरा युद्ध देखा था।

प्रश्न : महाभारत का कौन सा पात्र अपनी असाधारण ताकत के लिए जाना जाता था। वह पांडव था लेकिन अर्जुन से भी ज्यादा ताकतवर था?

उत्तर : भीम महाभारत काल के सबसे ताकतवर व्यक्ति थे। वे अपनी असाधारण ताकत के लिए मशहूर थे। भीम ने ही गदायुद्ध में दुर्योधन को हराया था और इसके साथ ही महाभारत युद्ध समाप्त हुआ था। भीम को 'वृकोदर' भी कहा जाता था।

प्रश्न : दुर्योधन के मामा शकुनि ने उसे हस्तिनापुर का सिंहासन दिलाने के कई चाल चलीं। लेकिन पांडवों के मामा कौन थे, जिनके बेटे ने पांडवों को महाभारत में जीत दिलाने में बड़ा योगदान दिया?

उत्तर : कौरवों की गांधारी के भाई शकुनि अपने भांजों को बहुत प्रेम करते थे। विशेष तौर पर शकुनि को दुर्योधन बेहद प्रिया था इसलिए उन्होंने दुर्योधन को हस्तिनापुर का राज्य दिलाने के लिए पांडवों के साथ कई षड्यंत्र किए। ऐसे में सवाल यह आता है कि पांडवों के मामा कौन थे और उन्होंने पांडवों की क्या मदद की थी?

तो पांडवों की मां कुंती यदुवंशी राजा शूरसेन की पुत्री थीं और वसुदेव-सुतसुभा की बड़ी बहन थीं। इस लिहाज से वे भगवान श्रीकृष्ण की बुआ थीं। हालांकि नागवंशी महाराज कुंतीभोज ने शूरसेन से कुंती को गोद ले लिया था। कुंती के भतीजे भगवान कृष्ण ने पांडवों का हमेशा साथ दिया और उनके कारण ही पांडव महाभारत युद्ध जीत पाए थे।

देव दीपावली का अत्यंत महत्व है

सुरेश गांधी

शास्त्रो में देव दीपावली, का अत्यंत महत्व है । मनुष्यो की दीपावली मनाने के एक पक्ष अर्थात 15 दिनों के बाद कार्तिक पूर्णिमा, के दिन देवताओं की दीपावली अर्थात देव दीपावली, होती है। मान्यता है कि देव दीपावली, मनाने के लिए सभी देवतागण स्वर्ग से धरती पर गंगा नदी के पावन घाटों पर अदृश्य रूप में आते हैं। देव दीपावली,दीपावली समारोह का अंतिम उत्सव है। देव दीपावली मनाने के पीछे कई कथाएँ है

एक कथा के अनुसार इस दिन भगवान विष्णु जी अपने वामन अवतार के बाद, बलि के पास से लौटकर अपने निवास स्थान बैकुंठ लोक में वापस आये थे और इसी खुशी में सभी देवो ने दीप जलाए थे।

एक अन्य कथा के अनुसार इसी दिन सायंकाल के समय भगवान विष्णु जी का मत्स्यावतार हुआ था, इसलिए इस दिन किये गए दीप दान, का दस यज्ञों के समान फल मिलता है।

एक अन्य कथा के अनुसार कार्तिक अमावस्या की रात को सभी मनुष्य बड़ी धूमधाम से दीपावली मनाई। लेकिन दीपावली में विष्णु प्रिया माँ लक्ष्मी की विष्णु जी के बिना भगवान श्री गणेश जी के साथ पूजा होती है इसका कारण यह है कि दीपावली चातुर्मास में पड़ती है, और इस समय में भगवान श्री विष्णु चार मास के लिए योगनिद्रा में लीन रहते हैं।

अतः भगवान नारायण की दीपावली के दिन माँ लक्ष्मी के साथ पूजा नहीं की जाती है। माँ लक्ष्मी के साथ प्रथम पूज्य गणेशजी पूजे जाते हैं।

लेकिन जब देवोत्थान एकादशी को भगवान विष्णु अपनी योगनिद्रा से क्षीर सागर में जागते हैं और कार्तिक पूर्णिमा के इन अपने कार्यो में तल्लीन हो जाते है, तब सभी देवता भगवान विष्णु और लक्ष्मी जी की एक साथ पूजा करके आरती करते हैं और अपनी प्रसन्नता व्यक्त करने के लिए दीपावली मनाते हैं, जिसमें माँ लक्ष्मी नारायण जी के साथ विराजती हैं, देवताओं द्वारा इस पर्व को मनाये जाने के कारण इसे देव दीपावली कहते है।

कार्तिक पूर्णिमा को त्रिपुरी पूर्णिमा या गंगा स्नान के नाम से भी जाना जाता है। कार्तिक पूर्णिमा को त्रिपुरी पूर्णिमा इसलिए कहा जाता है क्योंकि आज के दिन ही भगवानशंकर ने महाभयंकर असुर त्रिपुरासुर का संहार किया था जिसके पापो से मनुष्य, ऋषि, देवता सभी त्रस्त थे।

त्रिपुरासुर और उसकी असुरी सेना के संहार के पश्चात सभी देवताओं ने दीप जलाकर भगवान शिव की पूजा अर्चना, आराधना की थी, प्रसन्नता व्यक्त की थी इसलिए कार्तिक पूर्णिमा के दिन देव दीपावली मनाई जाती है ।

शिव पुराण के अनुसार इस दिन व्रत रखकर रात्रि में वृषदान यानी बछड़ा का दान करने से शिवपद की प्राप्ति होती है। कहते है जो व्यक्ति इस दिन ब्रत रखकर भगवान शंकर की आराधना करता है उसे अग्निष्टोम नामक यज्ञ का फल मिलता है।

शनि का गोचर कुंभ राशि में कब तक रहेगा?

शनि अभी कुंभ राशि में गोचर हैं। कुंभ राशि वालों पर शनि की साढ़ेसाती चल रही है। ऐसे में शनि कुंभ राशि से निकलकर मीन राशि में कब जाएंगे। जानें कब इन्हें मिलेगी साढ़ेसाती से मुक्ति।

शनि अभी कुंभ राशि में गोचर हैं। कुंभ राशि वालों पर शनि की साढ़ेसाती चल रही है। ऐसे में शनि कुंभ राशि से निकलकर मीन राशि में कब जाएंगे। जानें कब इन्हें मिलेगी साढ़ेसाती से मुक्ति।

शनि गोचर 2025

शनि करीब ढाई साल तक एक राशि में रहते हैं। शनि जिस राशि में रहते हैं उस राशि के साथ उसके एक आगे और एक पीछे की राशि वालों को साढ़ेसाती के प्रभाव झेलने पड़ते हैं।

शनि करीब ढाई साल तक एक राशि में रहते हैं। शनि जिस राशि में रहते हैं उस राशि के साथ उसके एक आगे और एक पीछे की राशि वालों को साढ़ेसाती के प्रभाव झेलने पड़ते हैं।

शनि देव 29 मार्च 2025 को रात 11।01 मिनट पर मीन राशि में गोचर करेंगे। इसके बाद से मकर राशि वालों को शनि की साढ़ेसाती से मुक्ति मिल जाएगी। कुंभ, मीन और मेष राशि वालों पर शनि की साढ़ेसाती का असर रहेगा।

शनि देव 29 मार्च 2025 को रात 11।01 मिनट पर मीन राशि में गोचर करेंगे। इसके बाद से मकर राशि वालों को शनि की साढ़ेसाती से मुक्ति मिल जाएगी। कुंभ, मीन और मेष राशि वालों पर शनि की साढ़ेसाती का असर रहेगा।

साढ़ेसाती के दौरान गलती से भी किसी असहाय, बुजुर्ग, अबला महिला, गरीब का दिल ना दुखाएं। ना ही उसे सताएं या शोषण करें।

साढ़ेसाती के दौरान गलती से भी किसी असहाय, बुजुर्ग, अबला महिला, गरीब का दिल ना दुखाएं। ना ही उसे सताएं या शोषण करें।

साढ़ेसाती के दौरान शनि को प्रसन्न करने के प्रयास करते रहें। साथ ही अच्छे कर्म करें, ताकि शनि की साढ़ेसाती का दुष्प्रभाव ना झेलना पड़े।

साढ़ेसाती के दौरान शनि को प्रसन्न करने के प्रयास करते रहें। साथ ही अच्छे कर्म करें, ताकि शनि की साढ़ेसाती का दुष्प्रभाव ना झेलना पड़े।

शनि देव को प्रसन्न करने के लिए हनुमान जी की पूजा जरुर करनी चाहिए।

नयनतारा के पति विग्नेश ने परेशान होकर बंद किया अपना एक्स अकाउंट, ऑनलाइन आलोचना की वजह से लिया निर्णय

साउथ के प्रसिद्ध कपल नयनतारा और विग्नेश शिवन के लिए यह एक चुनौतीपूर्ण दौर लगता है। नयनतारा पर धनुष की फिल्म के एक क्लिप को बिना अनुमति के इस्तेमाल करने का आरोप है, जबकि उनके पति, निर्देशक विग्नेश शिवन ऑनलाइन आलोचनाओं की लहर में फंस गए हैं, जिसकी वजह से उन्होंने अपना एक्स अकाउंट बंद कर दिया है।

क्या था पूरा मामला

नयनतारा के पति और विग्नेश ने हाल ही में अखिल भारतीय निर्देशकों की राउंड टेबल चर्चा में भाग लिया, लेकिन उनके शामिल होने पर एक्स पर उन्हें तीखी प्रतिक्रिया का सामना करना पड़ा। कई लोगों ने उनकी उपस्थिति पर सवाल उठाया, यह बताते हुए कि 2022 में रिलीज हुई उनकी आखिरी फिल्म अखिल भारतीय प्रोजेक्ट नहीं थी। उनकी आने वाली फिल्म, लव इंश्योरेंस कंपनी भी वर्तमान में अखिल भारतीय श्रेणी में फिट नहीं बैठती है। जिसकी वजह से विग्रेश ने एक बड़ा फैसला लिया है।

बंद किया अपना एक्स अकाउंट

देखते ही देखते यह बात इतनी बढ़ गई कि आलोचना साक्षात्कारकर्ता तक फैल गई, जिसमें नेटिजेंस ने उनके मेहमानों के चयन पर असंतोष व्यक्त किया। ट्रोलिंग की वजह से परेशान होकर आखिरकार विग्नेश को अपना एक्स अकाउंट निष्क्रिय करना पड़ा। हालांकि उन्होंने इंस्टाग्राम पर इस मुद्दे को संबोधित नहीं किया है, लेकिन ऐसा लगता है कि यह उनके लिए एक निराशाजनक अनुभव रहा है। प्रशंसक अब उनकी प्रतिक्रिया का इंतजार कर रहे हैं और उम्मीद कर रहे हैं कि वे एक्स पर वापस आएंगे।

नयनतारा-विग्रेश

विग्नेश शिवन एक भारतीय फिल्म निर्देशक, फिल्म निर्माता, अभिनेता, गायक और गीतकार हैं, जो कई भाषाओं के अलावा तमिल सिनेमा में काम करते हैं। शिवन और नयनतारा 2015 में नानुम राउडी धान में एक साथ काम करने के बाद से ही एक रिश्ते में थे। उन्होंने 2021 में अपनी सगाई की घोषणा की और 9 जून 2022 को महाबलीपुरम के शेरेटन ग्रैंड में शादी कर ली थी। नयनतारा को 9 अक्टूबर 2022 को एक सरोगेट के माध्यम से जुड़वां लड़के हुए।

'ये क्या बदतमीजी कर रहे हो', चाहत को 'गंवार' कहने पर सलमान ने लगाई अविनाश को लताड़

बिग बॉस 18 के नए प्रोमो ने फैंस के बीच हलचल मचा बढ़ा दी है। इसमें, प्रतियोगी अविनाश मिश्रा और चाहत पांडे के बीच तीखी नोकझोंक टिप्पणी से चौंक गईं और देखते ही देखते मामले ने तूल पकड़ लिया।

देखने को मिली, जिसके बाद सलमान खान ने मामले में दखल देना पड़ा।

चाहत-अविनाश के बीच नोंकझोक

प्रोमो की शुरुआत सलमान की ओर से घरवालों को दिए गए एक टास्क से होती है, जिसमें चाहत पांडे ने अविनाश पर हल्का मजाक करते हुए कहा, इनको बर्तन धोने बोलो तो चाट-चाट के धोएंगे, लेकिन ऐसे कुछ नहीं करेंगे। चाहत की बात पर अविनाश नाराज हो गए और उन्हें 'गंवार' कह दिया। चाहत उनकी इस

लेकिन प्रोमो में असली धमाका तब हुआ जब सलमान खान ने 'वीकएंड का वार' में इस विवाद पर अपनी प्रतिक्रिया दी। अविनाश की टिप्पणी पर सलमान ने सख्त लहजे में पूछा, गंवार क्या होता है? ये कैसी भाषा है? अविनाश ने बचाव करते हुए कहा, ये लिमिट क्रॉस कर रही है। जिस पर सलमान ने तुरंत उन्हें रोकते हुए कहा, आपने कभी लिमिट क्रॉस नहीं की? सलमान के इस तीखे जवाब ने अविनाश को चुप करा दिया और यह साफ कर दिया कि बिग बॉस हाउस में अपमानजनक भाषा और व्यक्तिगत हमलों के लिए कोई जगह नहीं है।

यह घटना सलमान खान की वह प्रतिबद्धता दर्शाती है, जिसमें वह प्रतियोगियों के बीच सम्मान और शालीनता बनाए रखने के लिए हमेशा तत्पर रहते हैं। इस विवाद ने सोशल मीडिया पर बहस को जन्म दे दिया है, जहां फैंस अविनाश की प्रतिक्रिया और चाहत के मजाक पर बंटे हुए नजर आ रहे हैं। जैसे-जैसे घर में तनाव बढ़ रहा है, दर्शक यह जानने के लिए उत्सुक हैं कि दोनों के बीच के इस झगड़े का हल कैसे निकलेगा।

दुआ लीपा की परफॉर्मेंस से सरप्राइज हुईं सुहाना

शाहरुख खान का मशहूर गाना, वो लड़की जो, उनके चाहने वालों के पसंदीदा गानों में से एक है। यह गाना उनकी 1999 की फिल्म बादशाह में शामिल किया गया था, यह गाना पिछले साल इंस्टाग्राम पर अंतरराष्ट्रीय गायिका दुआ लिपा के मशहूर गाने लेविटेटिंग के साथ क्रॉसओवर के हिस्से के रूप में वायरल म्यूजिकल ट्रेंड बन गया था। शनिवार (30 नवंबर) को, दुआ ने मुंबई में अपने कॉन्सर्ट में मैशअप परफॉर्म किया और शाहरुख खान की बेटी सुहाना खान उनकी परफॉर्मेंस देखकर दंग रह गईं।

सुहाना खान ने अपने इंस्टाग्राम पर दुआ लिपा के मुंबई कॉन्सर्ट में हाल ही में दिए

गए प्रदर्शन का एक वीडियो शेयर किया है। सुहाना की इंस्टाग्राम स्टोरी में गायिका स्टेज पर अपना प्रसिद्ध ट्रैक लेविटेटिंग गाती और शाहरुख खान और ट्विंकल खन्ना के गाने वो लड़की जो पर थिरकती नजर आ रही हैं। खूबसूरत गायिका को सफेद रंग की चमकदार ड्रेस पहने देखा जा सकता है।

क्लिप पर लिखा था, दुआ लिपा (लाल दिल) एसआरके (तिरंगा) लेविटेटिंग एक्स वो लड़की जो। अभिनेत्री ने दुआ के क्रॉसओवर प्रदर्शन का आनंद लेते हुए एक विस्मयकारी इमोजी के साथ-साथ एक महिला डांस करने वाली इमोजी भी बनाई। एक इंटरव्यू के दौरान दुआ लिपा ने अपने गाने लेविटेटिंग के साथ वो लड़की जो के वायरल क्रॉसओवर पर प्रतिक्रिया व्यक्त की। दुआ ने साझा किया कि जब उन्होंने पहली बार मैशअप सुना तो वह हैरान रह गईं और इसे अद्भुत कहा।

इस बीच, काम का बात करें तो सुहाना खान ने 2023 में जोया अख्तर की द आर्चीज से अगस्त्य नंदा और बाकी बॉलीवुड स्टार्स के साथ अपने फिल्मी करियर की शुरुआत कीथी। सुहाना अब शाहरुख खान की आने वाली फिल्म किंग में नजर आएंगी। सुजॉय घोष द्वारा निर्देशित इस एक्शन फिल्म में अभिषेक बच्चन भी हैं।

पुष्पा 2 के प्रमोशन में ये क्या बोल गए अल्लू अर्जुन? मूवी रिलीज से पहले 'आर्मी' शब्द के इस्तेमाल के लिए दर्ज हुई शिकायत

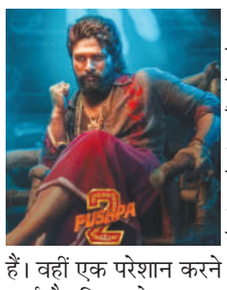

'पुष्पा 2: द रूल' अब बड़े पर्दे पर आने से कुछ ही दिन दूर है। जहां अल्लू अर्जुन और रश्मिका मंदाना अपनी फिल्म के प्रमोशन में व्यस्त हैं। वहीं एक परेशान करने वाली रिपोर्ट सामने आई है। फिल्म के मुख्य अभिनेता के खिलाफ शिकायत दर्ज की गई है। अल्लू के खिलाफ यह मामला उनके हालिया भाषण के दौरान इस्तेमाल किए गए एक शब्द के गलत इस्तेमाल के लिए किया गया है। क्या है पूरा मामला आइए इस पर गौर फरमा लेते हैं-

'आर्मी' शब्द के इस्तेमाल के लिए दर्ज हुई शिकायत

हाल ही में एक कार्यक्रम में अपने भाषण के दौरान 'आर्मी' शब्द का गलत इस्तेमाल करने के लिए अल्लू अर्जुन के खिलाफ शिकायत दर्ज की गई है। अल्लू अर्जुन के खिलाफ हैदराबाद के जवाहर नगर पुलिस स्टेशन में श्रीनिवास गौड़ नाम के एक व्यक्ति ने शिकायत दर्ज कराई है। वह ग्रीन पीस एनवायरनमेंट एंड वॉटर हार्वेस्टिंग फाउंडेशन के अध्यक्ष हैं।

अभिनेता ने किया 'आर्मी' का अपमान

शिकायत में कहा गया है कि किसी फैन क्लब को आर्मी की उपाधि देना सही नहीं है। श्रीनिवास गौड़ ने महसूस किया कि इस शब्द का उपयोग अपमानजनक था। उन्होंने कहा कि यह शब्द देश की सेवा करने वाले सशस्त्र बलों से गहराई से जुड़ा हुआ है। बता दें कि विवाद की शुरुआत मुंबई में 'पुष्पा 2' प्रेस मीट में हुई जहां अल्लू अर्जुन ने अपने प्रशंसकों के बारे में अपने विचार साझा किए। उन्होंने उल्लेख किया कि वह उन्हें प्रशंसक नहीं बल्कि अपनी आर्मी मानते हैं।

अल्लू अर्जुन का बयान

अल्लू अर्जुन ने उनके प्रति अपना प्यार जताया और कहा कि वे उनके परिवार की तरह हैं। उन्होंने यह भी कहा कि वे एक आर्मी की तरह उनके साथ खड़े हैं। अल्लू अर्जुन ने उन्हें गौरवान्वित करने का वादा किया और कहा कि अगर फिल्म बड़ी सफल हो जाती है, तो वह इसे उन्हें समर्पित करेंगे। अभिनेता ने कहा, 'मेरे पास प्रशंसक नहीं हैं, मेरे पास एक आर्मी है। मैं अपने प्रशंसकों से प्यार करता हूं, वे मेरे परिवार की तरह हैं। वे मेरे साथ खड़े हैं। मैं आप सभी से प्यार करता हूं। मैं आप सभी को प्राउड फील कराऊंगा।'

कपिल शर्मा ने की अमिताभ बच्चन की नकल, रेखा ने दी मजेदार प्रतिक्रिया

वीडियो में कपिल ने केबीसी में भाग लेने के अपने अनुभव को साझा किया। अपनी कॉमेडी से सभी का दिल जीतने वाले कॉमेडियन कपिल शर्मा ने अपना निजी अनुभव साझा करते हुए अमिताभ बच्चन की नकल की। कपिल ने कहा जब हम बच्चन साहब के साथ केबीसी खेल रहे थे और मेरी मां आगे सीट पर बैठी थीं। उन्होंने मेरी मां से पूछा, 'देवी जी, क्या खा के पैदा किया?' उन्होंने बड़ा ही मजेदार जवाब दिया.." कपिल ने रेखा द्वारा कपिल की मां के जवाब का खुलासा करने से पहले कहा "दाल-रोटी"। कपिल ने फिर से पुष्टि की कि यह वास्तव में उनकी मां का जवाब था। रेखा ने फिर चिढ़ाते हुए कहा, "मुझसे पूछिए ना, एक एक डायलॉग याद है।" रेखा की इन बातों से साफ जाहिर है कि वह केबीसी नियमित रूप से देखती

गए एक्ट के दौरान हंसते हुए सोफे से गिरते हुए देखा गया। वह स्टेज पर परफॉर्म भी करती नजर आईं। अभिनेत्री हर शॉट में शानदार दिखीं। यह एपिसोड कृष्णा के लिए भी भावुक कर देने वाला रहा, क्योंकि गोविंदा ने सात साल तक चली दुश्मनी के बाद सार्वजनिक रूप से अपनी खटास को भुला दिया। उन्होंने गोविंदा को कसकर गले लगाया और कहा, दो साल बाद मिले हैं, आज नहीं छोड़ूंगा। कृष्णा ने हर मौके पर गोविंदा की तारीफ की और यहां तक कि अपने किरदार से बाहर निकलकर अपने 'मामा नंबर 1' पर प्यार बरसाया।

रेखा पहली बार नेटफ्लिक्स शो में नज़र आएंगी। ऐसा लगता है कि अभिनेत्री शो में अकेली ही नजर आएंगी। वीडियो के दूसरे हिस्सों में रेखा को कृष्णा अभिषेक और कीकू शारदा द्वारा एक साथ किए हैं।

जापान में दिखी 'जवान' की धूम

सुपरस्टार शाहरुख खान ने रविवार को अपने जापान के फैंस का आभार व्यक्त किया, जिन्होंने उनकी फिल्म 'जवान' को 29 नवंबर को जापान में रिलीज के बाद सिनेमाघरों में देखा।

शाहरुख खान ने दिया फैंस को धन्यवाद

शाहरुख के फैन पेज ने जब जापान के एक सिनेमाहॉल में फिल्म का पोस्टर दिखाते हुए एक वीडियो साझा किया तो किंग खान ने जवाब देते हुए कहा, मैं जापान से मिल रही प्यार भरी प्रतिक्रियाओं के बारे में पढ़ रहा था... सभी का धन्यवाद। उम्मीद है कि आप इस फिल्म का आनंद लेंगे। उन्होंने आगे कहा, हमने यह फिल्म भारत से दुनिया के लिए बनाई है। मुझे खुशी है कि यह हर जगह पसंद की जा रही है। जापान में इसे देखने वाले सभी को मेरा प्यार और धन्यवाद।

बॉक्स ऑफिस पर हुई थी जमकर कमाई

एटली के निर्देशन में बनी जवान जबर्दस्त एक्शन से भरपूर फिल्म है, जो भारत समेत कई देशों में सितंबर 2023 में रिलीज हुई थी। इस फिल्म ने बॉक्स ऑफिस पर धांसू कमाई करते हुए वैश्विक स्तर पर 1,100 करोड़ रुपये से अधिक बटोर डाले थे।

इन सितारों ने भी निभाई अहम भूमिका

'जवान' एक ऐसे आदमी की कहानी है, जो समाज में हुई गलतियों को सही करने का निर्णय लेता है। फिल्म में शाहरुख खान ने विक्रम राठौड़ और उनके बेटे आजाद का दोहरा किरदार निभाया था। फिल्म में दीपिका पादुकोण और नयनतारा भी नजर आई थीं। फिल्म में विजय सेतुपति नकारात्मक भूमिका में दिखे थे। यह साल 2023 में सबसे ज्यादा कमाई करने वाली हिंदी फिल्म थी।

मैं शादी करूंगी सोच समझ कर : भूमि पेडनेकर

भूमि पेडनेकर 35 वर्ष की हो गई है लेकिन अभी तक वह कुंवारी है। हालांकि, उसके लव अफेयर की चर्चा पहले खूब हुई है। कुछ साल पहले उसका नाम एक्टर जैकी भानुशाली के साथ जोड़ा गया था। अपने अफेयर बारे उसने कभी कोई बात नहीं की, लेकिन अपनी शादी को लेकर एक बड़ा राज जरूर खोल दिया है।

हाल ही में उसने प्यार, डेटिंग और शादी पर अपनी राय रखते हुए बताया कि उसके लिए किसी शख्स की पर्सनैलिटी उसके दिखावे से कहीं ज्यादा जरूरी है। भूमि ने बताया कि उसके लिए सबसे जरूरी चीज है दयालु होना। प्यार और शादी के बारे में बात होने पर उसने कहा, प्यार का मतलब है कि आपको एक ऐसा साथी मिल जाए, जो आपके लिए सही हो।

वह शादी करना चाहती है लेकिन जल्दबाजी में नहीं। वह एक ऐसे व्यक्ति के साथ शादी करना चाहती है जो उसके लिए सही हो, चाहे उसे उस व्यक्ति को ढूंढने में 10 साल लगें, 20 साल लगें या कल ही मिल जाए।

पार्टनर में हों ये खूबियां

भूमि ने बताया कि वह अपने जीवनसाथी में क्या-कुछ गुण देखती है। उसका कहना है कि वह एक ऐसे व्यक्ति को ढूंढ रही है जो दयालु हो, यानी दूसरों के प्रति अच्छा हो। वह चाहती है कि उसका साथी उसके काम पर गर्व करे और उसकी उपलब्धियों को भी सराहे। उसके लिए यह बात बहुत मायने रखती है। भूमि का मानना है कि दयालु होना केवल दिखावा नहीं होना चाहिए। यह दूसरों का सम्मान करना और एक-दूसरे की उपलब्धियों में खुश होना भी है। उसने यह भी बताया कि खुद को जैसा है, वैसा स्वीकार करने से उसे अच्छे रिश्ते बनाने में मदद मिली है।

जल्दबाजी ठीक नहीं

भूमि ने कहा, अपने आप को बदलने की कोशिश मत करो। बस वही रहो जो तुम अंदर से हो। उसने यह भी सलाह दी कि डेटिंग में सब्र रखें और जल्दबाजी न करें। उसने कहा, सही व्यक्ति को ढूंढने में समय लग सकता है, लेकिन जब तुम उसे ढूंढ लोगे तो यह सारा इंतजार सफल हो जाएगा। उसने कहा कि दिखावे से परे देखना बहुत जरूरी है, सच्चा आकर्षण किसी के कपड़ों या कार से नहीं आता, बल्कि उनके दिल और दिमाग से आता है।

उसके लिए डेटिंग पर्सनैलिटी और कॉन्फिडेंस को स्ट्रांग करने के साथ-साथ एक डीप कनैक्शन बनाने से भी है। पहली फिल्म से जुड़ी यादें हाल ही में अपनी पहली बॉलीवुड फिल्म 'दम लगा के हईशा' के बारे में बात करते हुए भूमि ने अपने करियर की कई पुरानी बातों को याद किया।

2015 में रिलीज हुई इस फिल्म का निर्देशन शरत कटारिया ने किया था। फिल्म में भूमि के साथ आयुष्मान खुराना, संजय मिश्रा और सीमा पाहवा भी थी। फिल्म में प्रेम नामक एक स्कूल ड्रॉपआऊट की कहानी बताई गई, जो एक शिक्षित, लेकिन अधिक वजन वाली लड़की संध्या से शादी करने में हिचकिचाता है।

शादी होने के बाद यह जोड़ा एक दौड़ प्रतियोगिता में भाग लेता है, जिसमें प्रेम संध्या को अपनी पीठ पर उठाकर दौड़ लगाता है। इस खेल में जीत के बाद दोनों के बीच की दूरियां खत्म हो जाती हैं।

भूमि ने कहा, फिल्म 'दम लगा के हईशा' से सिर्फ मैं ही नहीं, बल्कि दर्शक भी गहराई से जुड़े। आज भी मेरे फैन्स सबसे पहले यही कहते हैं कि हमें 'दम लगा के हईशा' में तुम बहुत पसंद आई। यह वाकई बहुत खास है।

शुक्रगुजार है भूमि

भूमि अपनी पहली फिल्म के बारे में कहती है, जब 'दम लगा के हईशा' बनी, वह पल मेरे लिए बेहद खास था और तब भी मुझे बहुत सुखद आश्चर्य हुआ, क्योंकि मुझे लगा कि यह यशराज फिल्म की एक हिन्दी फिल्म की हीरोइन है जो उन लड़कियों की तरह नहीं दिखती, जिन्हें उन्होंने पहले अपनी फिल्मों में लिया है।

भूमि के लिए फिल्म की सफलता ने साबित कर दिया कि प्रतिभा दिखावे से कहीं ज्यादा महत्वपूर्ण होती है। उसने कहा, मैं सौभाग्य से उस समय एक अभिनेत्री बनी, जब मेरा दिखना गौण था और मैं स्क्रीन पर जो देती थी, वह प्राथमिक था। मैं अब इस चीज के लिए अपने आप की बहुत भाग्यशाली मनाती हूं कि मुझे काम करने के लिए हर तरह के अवसर और मंच मिले।

शेयर की हिन्दी से जुड़ी यादें

सार्थक सिनेमा के लिए जानी जाने वाली भूमि जितनी कटिबद्ध अपनी भूमिकाओं को लेकर है, उतनी ही सजग वह हिन्दी को लेकर है। गत दिनों हिन्दी को लेकर अपनी बचपन की यादों को एक इंटरव्यू में शेयर करते हुए भूमि ने कहा था, हिन्दी हमारी सबसे व्यापक रूप से बोली जाने वाली भाषा है। असल में मैं बड़ी हो रही थी, तो मैं खुद को खुशकिस्मत मानती हूं और

अपनी मां का धन्यवाद अदा करना चाहती हूं, जो उन्होंने मुझे एक ऐसे स्कूल में दाखिल किया, जहां हिन्दी अनिवार्य थी।

विक्की कौशल ने पत्नी कैटरीना कैफ को क्यों कहा सूबेदार?

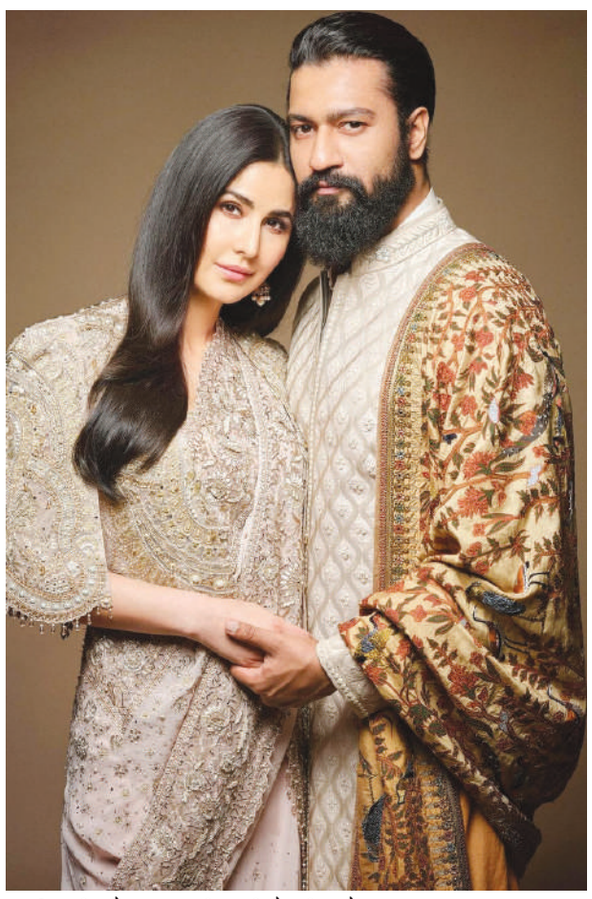

विक्की कौशल अपनी पत्नी कैटरीना कैफ की तारीफ करते नहीं थकते। अक्सर अभिनेता अपने अभिनय कौशल या डांस मूव्स के लिए अभिनेत्री को श्रेय देते नजर आते हैं। लेकिन इस बार, उन्होंने अपने स्टाइल का श्रेय उन्हें दिया है। 'छावा' अभिनेता ने हाल ही में एक इवेंट के रेड कार्पेट पर रैंप वॉक किया। अभिनेता ने बताया कि कैसे कैटरीना उनके वॉर्डरोब की जिम्मेदारी संभालती हैं, जिससे वह कपड़े बदलकर थोड़ा प्रेजेंटेबल दिखते हैं। उन्होंने पत्नी कैटरीना को अपनी स्टाइल टीम का सूबेदार बताया और साझा किया कि कैटरीना उन्हें अक्सर कार्यक्रमों के लिए कपड़े चुनने में मदद करती है।

विक्की ने फैशन पर कही यह बात

जब विक्की कौशल से उनके पहनावे की पसंद के बारे में पूछा गया, तो उन्होंने खुद को फैशन हैंडिकैप्ड बताया और साझा किया कि आकर्षक और प्रेजेंटेबल दिखने के लिए वह अपनी टीम पर निर्भर हैं। विक्की कहते हैं, 'मैं वास्तव में एक फैशन हैंडिकैप्ड इंसान हूं। मैं खुद को थोड़ा प्रस्तुत करने योग्य बनाने के लिए अपनी स्टाइल टीम पर भरोसा करता हूं।'

पत्नी को बताया स्टाइल टीम का सूबेदार

जब उनसे पूछा गया कि क्या कैटरीना कभी किसी कार्यक्रम में जाने से पहले उनसे अपना पहनावा बदलने के लिए कहती हैं, तो अभिनेता ने तुरंत कहा, 'हां, निश्चित रूप से वह स्टाइल टीम की सूबेदार हैं।' सिर्फ विक्की ही नहीं कैटरीना भी अपने पति विक्की की तारीफ करने का कोई मौका नहीं छोड़तीं।

कैटरीना भी बांध चुकी हैं पति की तारीफों के पुल

इस साल की शुरुआत में एक इंटरव्यू के दौरान अभिनेत्री ने उन दिनों के बारे में बात की थी जब उन्हें अच्छा महसूस नहीं हो रहा था और उन्हें अपनी असुरक्षाओं से निपटने के लिए आश्वासन की जरूरत थी। वह याद करती हैं कि कैसे उनके पति उन्हें खुद के साथ नम्र रहने की याद दिलाने में मदद करते थे।'

विक्की कौशल का वर्कफ्रंट

इस बीच, विक्की कौशल अपनी फिल्म 'छावा' की रिलीज की तैयारी कर रहे हैं। इस मूवी में उनके अपोजिट अभिनेत्री रश्मिका मंदाना नजर आने वाली हैं। 'छावा' 14 फरवरी 2025 को सिनेमाघरों में दस्तक देगी।

चक्रवात फेंगल बना मुसीबत, तमिलनाडु और पुडुचेरी के कई इलाके जलमग्न, चेन्नई का मैडली सबवे बंद

चेन्नई, 1 दिसंबर (एजेंसियां)। चक्रवात फेंगल के कारण तमिलनाडु और पुडुचेरी में भारी बारिश हुई। तमिलनाडु में बारिश के कारण चेन्नई हवाईअड्डे को बंद करना पड़ा और शहर के कई हिस्सों में पानी भर गया। तूफान के कारण हुई भारी बारिश और तेज हवाओं ने चेन्नई में उड़ान और ट्रेन सेवाओं को बाधित कर दिया। वहीं तीन लोगों की मौत की खबर है। इसको लेकर पुडुचेरी के सीएम एन रंगास्वामी ने भी राज्य का दौरा किया और कहा , कई सालों के बाद, पुडुचेरी में 50 सेमी बारिश हुई है, जिसके परिणामस्वरूप गंभीर बाढ़ आई है। मैं वर्तमान में बाढ़ प्रभावित क्षेत्रों का निरीक्षण कर रहा हूं। बचाव दल बाढ़ के पानी में फंसे लोगों को निकालने के लिए अथक प्रयास कर रहे हैं।

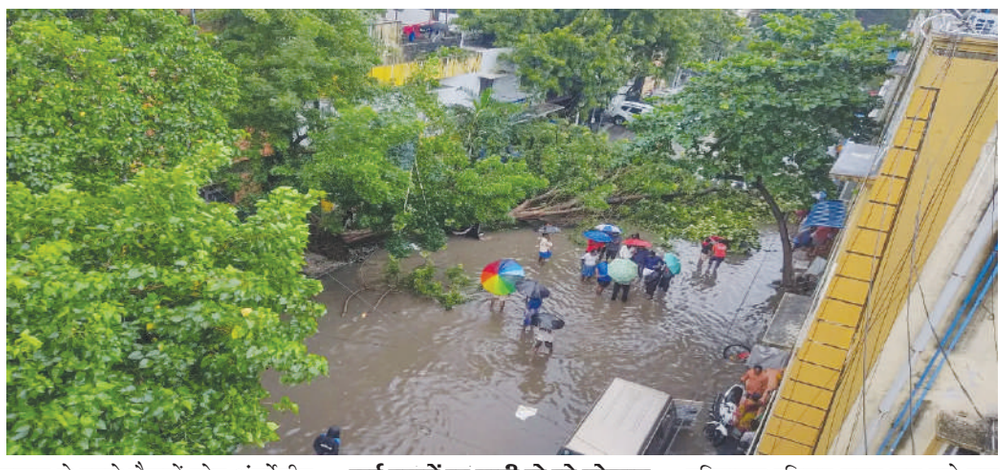

तमिलनाडु के कई जिलों में स्कूल और कॉलेज बंद

राजधानी शहर में कई अस्पतालों और घरों में भी पानी भर गया। तमिलनाडु के कई जिलों में स्कूल और कॉलेज बंद कर दिए गए हैं और शनिवार को क्षेत्र में आने वाले शक्तिशाली चक्रवाती तूफान से पहले सैकड़ों लोग अंतर्देशीय तूफान आश्रयों में चले गए हैं। बारिश से संबंधित एक घटना में, चेन्नई में एक एटीएम से नकदी निकालने की कोशिश कर रहे एक प्रवासी श्रमिक की कथित तौर पर बिजली की चपेट में आने से मौत हो गई। फेंगल इस सप्ताह की शुरुआत में श्रीलंका के तट से टकराया था, जिसमें छह बच्चों सहित कम से कम 12 लोगों की मौत हो गई थी।

कई उड़ानें रद्द यात्री हो रहे परेशान

पड़ोसी केंद्र शासित प्रदेश पुदुचेरी में, निचले इलाकों में रहने वाले लोगों को हटा दिया गया और प्रशासन ने निवासियों को चक्रवात के लिए तैयार रहने के लिए आगाह करते हुए एसएमएस अलर्ट भेजा। चेन्नई हवाईअड्डे का एक हिस्सा जलमग्न हो गया और कई उड़ानें रद्द होने से सैकड़ों यात्री प्रभावित हुए। हवाईअड्डे पर परिचालन रविवार सुबह चार बजे तक निलंबित रहेगा। हैदराबाद में भी कम से कम 20 उड़ानें रद्द कर दी गईं जो चेन्नई और तिरूपति से आने-जाने वाली सेवाएं थीं।

पुडुचेरी के कई हिस्सों में तेज हवाओं के साथ भारी बारिश

पुडुचेरी में तेज हवाओं के साथ भारी बारिश जारी है। फेंगल चक्रवात ने शनिवार शाम 7 बजे पुडुचेरी तट पर दस्तक दी। अंतिम समाचार मिलने तक चक्रवात महाबलीपुरम (तमिलनाडु) से 50 किमी दक्षिण-दक्षिणपूर्व, पुडुचेरी से 60 किमी पूर्व-उत्तरपूर्व और चेन्नई से 90 किमी दक्षिण में था। चक्रवात 'फेंगल' के प्रभाव से शनिवार को तमिलनाडु और पुडुचेरी के कई हिस्सों में तेज हवाओं के साथ भारी बारिश हुई, जिससे सामान्य जनजीवन प्रभावित हुआ। लोगों को सुरक्षित स्थानों पर पहुंचाया गया।

शैक्षणिक संस्थानों के लिए अवकाश घोषित

सरकार ने 30 नवंबर को शैक्षणिक संस्थानों के लिए अवकाश घोषित कर दिया था। हवाईपट्टी और टैक्सीवे पर पानी भर जाने के बाद चेन्नई हवाईअड्डा प्रबंधन ने एक दिसंबर को तड़के चार बजे तक परिचालन निलंबित करने की घोषणा की। हवाईअड्डे को बंद किए जाने के कारण 50 से अधिक उड़ानें रद कर दी गईं। केंद्र शासित प्रदेश पुडुचेरी में निचले इलाकों में रहने वाले लोगों को सुरक्षित स्थानों पर पहुंचाया गया।

अधिकारियों ने स्थिति की समीक्षा की और एहतियाती उपाय लागू किए

पुडुचेरी और तमिलनाडु में अधिकारियों ने स्थिति की समीक्षा की और एहतियाती उपाय लागू किए हैं। पुडुचेरी के जिला कलेक्टर ए। कुलोथुंगन ने कहा कि जिला प्रशासन ने चक्रवात फेंगल की तैयारी के लिए व्यापक कदम उठाए हैं। कुलोथुंगन ने एएनआई को बताया कि जिला प्रशासन ने चक्रवात फेंगल के प्रभाव से निपटने के लिए विस्तृत व्यवस्था की है। उन्होंने कहा कि वार रूम कक्ष चालू है, और सभी आवश्यक व्यवस्थाओं के साथ राहत केंद्र स्थापित किए गए हैं। चेतावनी संदेश प्रसारित किए गए हैं, और लगभग 4,000 सरकारी अधिकारी ड्यूटी पर हैं।

सीएम स्टालिन ने स्थिति पर बारीकी से नजर रखने को कहा

तमिलनाडु के मुख्यमंत्री एमके स्टालिन ने तैयारियों और एहतियाती उपायों का आकलन किया। उन्होंने राज्य के मंत्रियों केएन नेहरू और केकेएसएसआर रामचंद्रन के साथ चेन्नई स्टेट ऑपरेशन सेंटर का भी दौरा किया। मुख्यमंत्री ने जमीनी स्थितियों का मूल्यांकन करने के लिए वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से चेन्नई, कांचीपुरम, तिरुवल्लूर, चेंगलपट्टू और अन्य जिलों के जिला कलेक्टरों के साथ बातचीत की।

दो से तीन दिनों तक लगातार बारिश की चेतावनी

उन्होंने जनता को आश्वासन दिया कि राज्य सरकार स्थिति पर बारीकी से नजर रख रही है और आवश्यक उपाय लागू कर रही है। मीडिया को संबोधित करते हुए सीएम स्टालिन ने कहा कि सरकार लगातार निरीक्षण कर रही है और प्रभाव को कम करने के लिए कदम उठा रही है। मौसम विभाग ने अगले दो से तीन दिनों तक लगातार बारिश की चेतावनी दी है। सीएम स्टालिन ने कहा कि हमें जानकारी मिली है कि चक्रवाती तूफान आज रात तट को पार कर जाएगा। चेन्नई निगम आयुक्त क्षेत्र की स्थितियों का आकलन करने के लिए कांचीपुरम, तिरुवल्लुर, चेंगलपट्टू और अन्य जिलों के जिला कलेक्टरों के संपर्क में हैं, और प्रभावित लोगों को समायोजित करने के लिए राहत शिविर स्थापित किए गए हैं।

दिल्ली विधानसभा चुनाव

'आप नहीं करेगी किसी से भी गठबंधन' अरविंद केजरीवाल का बड़ा बयान

नई दिल्ली, 1 दिसंबर (एजेंसियां)। दिल्ली के पूर्व मुख्यमंत्री और आम आदमी पार्टी के संयोजन अरविंद केजरीवाल ने बड़ा बयान दिया है। केजरीवाल ने कहा है कि दिल्ली चुनाव में आम आदमी पार्टी किसी से भी गठबंधन नहीं करेगी। हालांकि केजरीवाल ने ये कहा है कि आप राष्ट्रीय स्तर पर इंडिया गठबंधन का हिस्सा बना रहेगा। रविवार को प्रेस कांफ्रेंस के दौरान केजरीवाल ने ये बात कही है। कहा जा रहा है कि हरियाणा और महाराष्ट्र में इंडिया गठबंधन को मिली हार के बाद केजरीवाल ने ये फैसला लिया है।

इससे पहले ही आम आदमी पार्टी के कई नेताओं ने हरियाणा चुनाव के बाद ही कहा था कि दिल्ली में कांग्रेस के साथ आम आदमी पार्टी का गठबंधन नहीं होगा। आम आदमी पार्टी कांग्रेस के साथ लोकसभा चुनाव में गठबंधन करके देख चुकी है और उसे गठबंधन का कोई फायदा नहीं मिला था। अगले साल दिल्ली में विधानसभा चुनाव होने वाले हैं और आम आदमी पार्टी ने अभी से ही तैयारी शुरू कर दी है। इसके लिए कुछ सीटों पर तो आप ने उम्मीदवारों के नाम का ऐलान भी कर दिया है।

रविवार को प्रेस कॉन्फ्रेंस के दौरान अरविंद केजरीवाल केंद्र सरकार पर जमकर भड़के और कहा कि राजधानी में कानून व्यवस्था की स्थिति बेहद खराब है। दिल्ली में डर का माहौल है, महिलाएं डरी हुई हैं। आज देश की राजधानी गैंगस्टर्स के कब्जे में है। व्यवसायियों के पास फिरौती की कॉल्स आ रही हैं। अगर वह कॉल पर ध्यान नहीं देता तो अगले ही दिन उसके घर या दुकान के बाहर फायरिंग की जाती है। गुंडे इसके बाद एक पर्ची भी छोड़ जाते हैं जिसमें धमकी दी जाती है। केजरीवाल ने आगे कहा, इतना ही नहीं, कल पदयात्रा के दौरान मुझपर तरल पदार्थ फेंका गया। मेरे एक विधायक को गिरफ्तार कर लिया गया, जबकि विधायक भी गैंगस्टर से परेशान हैं।

दिल्ली चुनाव को लेकर बीजेपी निकालेगी परिवर्तन यात्रा, पार्टी के बड़े नेता होंगे शामिल

नई दिल्ली, 1 दिसंबर (एजेंसियां)। दिल्ली विधानसभा चुनाव के मद्देनजर अब भारतीय जनता पार्टी ने भी आम आदमी पार्टी के खिलाफ मोर्चा खोल दिया है। रविवार को इसको लेकर बीजेपी नेताओं की एक अहम बैठक हुई। इसमें आप के दुष्प्रचार का जवाब देने और दिल्ली विधानसभा चुनाव की तैयारियों को लेकर बीजेपी नेताओं ने रणनीति पहलुओं पर चर्चा की। दिल्ली बीजेपी की संगठनात्मक बैठक में प्रदेश की सभी समितियों के पदाधिकारी शामिल हुए। प्रदेश अध्यक्ष वीरेंद्र सचदेवा के साथ दिल्ली के सातों सांसद, विजय गोयल, अरविंदर सिंह लवली, कैलाश गहलोत व अन्य नेता मौजूद रहे। बीजेपी ने आज की बैठक में बीजेपी ने सभी विधानसभा क्षेत्रों में चुनाव से पहले परिवर्तन यात्रा निकालने का फैसला लिया है। परिवर्तन यात्रा में बीजेपी के बड़े नेता शामिल होंगे। सूत्रों के मुताबिक बीजेपी नेताओं ने आम आदमी पार्टी के दावों का लोगों के बीच पर्दाफाश करने का फैसला लिया है। साथ ही केंद्र सरकार की योजनाओं के बारे में भी दिल्ली के लोगों को जानकारी देने का फैसला लिया है।

'कांग्रेस लिखकर दे तो असम में गोमांस की प्रतिबंध लगाने के लिए तैयार हूं,' ऐसा क्यों बोले हिमंता बिस्वा सरमा?

गुवाहाटी, 1 दिसंबर (एजेंसियां)। असम की राजनीति में गोमांस का मुद्दा कई दिनों से चल रहा है। इस मामले पर असम के सीएम हिमंता बिस्वा सरमा ने बड़ा बयान दिया है। साथ ही उन्होंने कांग्रेस से सवाल भी पूछा है। असम के मुख्यमंत्री हिमंता बिस्वा सरमा ने कहा कि अगर प्रदेश कांग्रेस प्रमुख भूपेन कुमार बोरा उन्हें पत्र लिखकर गोमांस पर प्रतिबंध लगाने का अनुरोध करें तो वह ऐसा करने के लिए तैयार हैं।

सीएम ने दी प्रतिक्रिया

मुस्लिम बहुल सामगुड़ी विधानसभा सीट पर हुआ उपचुनाव जीतने के लिए बीजेपी पर लगे गोमांस वितरित करने के आरोप पर सीएम ने अपनी प्रतिक्रिया दी है। सीएम सरमा ने कहा कि उन्हें खुशी है कि कांग्रेस ने इस मामले को उठाया है। इस सीट पर पहले लगातार पांच बार कांग्रेस को जीत मिली थी।

25 साल बाद इस सीट पर हारी कांग्रेस

सरमा ने शनिवार को गुवाहटी में बीजेपी की बैठक के बाद कहा, 'सामगुड़ी सीट 25 साल तक कांग्रेस के पास रही। सामगुड़ी जैसे निर्वाचन क्षेत्र में 27,000 मतों के अंतर से हारना कांग्रेस के इतिहास की सबसे बड़ी शर्म की बात है। यह बीजेपी की जीत से ज्यादा कांग्रेस की हार है।'

इस तरह कांग्रेस नेता को सीएम सरमा ने घेरा

पिछले महीने हुए उपचुनाव में बीजेपी के दिप्लू रंजन शर्मा ने कांग्रेस सांसद रकीबुल हुसैन के बेटे तंजील को 24,501 मतों के अंतर से हराया था। सांसद की कथित टिप्पणी के बारे में पूछे जाने पर मुख्यमंत्री ने कहा, 'दुख के बीच रकीबुल हुसैन ने एक अच्छी बात कही कि गोमांस खाना गलत है, है न? उन्होंने कहा है कि मतदाताओं को गोमांस परोसकर कांग्रेस-भाजपा का चुनाव जीतना गलत है।' सीएम सरमा ने सवाल किया, 'मैं जानना चाहता हूं कि क्या कांग्रेस मतदाताओं को गोमांस की पेशकश करके सामगुड़ी जीत रही थी। वह सामगुड़ी को अच्छी तरह से जानते हैं। क्या इसका मतलब यह है कि गोमांस की पेशकश करके सामगुड़ी जीता जा सकता है?'

कांग्रेस लिखकर दे

सरमा ने कहा, 'मैं रकीबुल हुसैन से कहना चाहता हूं कि गोमांस पर प्रतिबंध लगाया जाना चाहिए, क्योंकि उन्होंने खुद कहा है कि यह गलत है। उन्हें मुझे केवल लिखित में देने की जरूरत है कि न तो बीजेपी और न ही कांग्रेस को गोमांस के बारे में बोलना चाहिए, बल्कि असम में इसे प्रतिबंधित किया जाना चाहिए। अगर हम ऐसा करते हैं, तो सभी समस्याएं हल हो जाएंगी।'

लगा दूंगा गोमांस पर प्रतिबंध

मुख्यमंत्री ने कहा कि वह हुसैन के बयान की पृष्ठभूमि में गोमांस पर प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष का रुख जानने के लिए उन्हें पत्र लिखेंगे। उन्होंने कहा, 'मैं भूपेन बोरा को पत्र लिखकर पूछूंगा कि क्या वह भी रकीबुल हुसैन की तरह गोमांस पर प्रतिबंध लगाने का समर्थन करते हैं, और अगर ऐसा है तो मुझे बता दें। मैं गोमांस पर पूरी तरह से प्रतिबंध लगा दूंगा।'

असम में गोमांस का सेवन गैरकानूनी नहीं

बता दें कि असम में गोमांस का सेवन गैरकानूनी नहीं है, लेकिन असम मवेशी संरक्षण अधिनियम 2021 के तहत हिंदू, जैन और सिखों की बहुसंख्या वाले क्षेत्रों तथा किसी मंदिर या सत्र (वैष्णव मठ) के पांच किलोमीटर के दायरे में मवेशी वध और गोमांस की बिक्री पर प्रतिबंध है।

विजयपुर उपचुनाव: सिंधिया बोले- प्रचार के लिए नहीं बुलाया, बीजेपी एमएलए बोले- कई बार आमंत्रित किया, लेकिन नहीं आए

भोपाल, 1 दिसंबर (एजेंसियां)। विजयपुर उपचुनाव में मिली हार को लेकर भाजपा में अंदरूनी विवाद गहरा गया है। केंद्रीय मंत्री ज्योतिरादित्य सिंधिया ने हार के बाद यह बयान दिया था कि अगर उन्हें प्रचार के लिए बुलाया जाता, तो वह जरूर आते। लेकिन इस पर भाजपा विधायक भगवान दास सबनानी ने पलटवार करते हुए सिंधिया के बयान को झूठा करार दिया है। उनका कहना है कि सिंधिया को कई बार आमंत्रित किया गया था, लेकिन व्यस्तता के कारण उन्होंने विजयपुर जाने से मना कर दिया।भोपाल दक्षिण पश्चिम के भाजपा विधायक भगवान दास सबनानी ने कहा कि पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष वीडी शर्मा, मुख्यमंत्री डॉ। मोहन यादव और संगठन महामंत्री ने ज्योतिरादित्य सिंधिया से विजयपुर आने का आग्रह किया था। इसके बावजूद, वह व्यस्तता का हवाला देकर नहीं आए। उन्होंने यह भी कहा कि सिंधिया का नाम स्टार प्रचारकों की सूची में था, लेकिन उन्होंने कई बार आग्रह करने के बाद भी प्रचार में हिस्सा नहीं लिया। सिंधिया ने ग्वालियर में पत्रकारों से बातचीत करते हुए विजयपुर उपचुनाव की हार पर चिंता जताई थी। उन्होंने कहा था, "यह हार चिंताजनक है, लेकिन मतों में बढ़ोतरी भी हुई है। अगर मुझे प्रचार के लिए बुलाया जाता, तो मैं जरूर जाता।" सिंधिया का यह बयान पार्टी के भीतर एक नए विवाद को जन्म दे सकता है, क्योंकि उनके बयान और भाजपा विधायक के आरोपों के बीच बेमेल तस्वीर उभर रही है। बता दें उपचुनाव में हार के बाद पहली बार भोपाल भाजपा कार्यालय पहुंचे रामनिवास रावत ने ज्योतिरादित्य सिंधिया के चुनाव प्रचारनहीं करने को लेकर पूछे सवाल पर कहा था कि यह सवाल संगठन और ज्योतिरादित्य सिंधिया से पूछना चाहिए कि वह चुनाव प्रचार करने क्यों नहीं आए। लोकसभा चुनाव के समय रावत कांग्रेस से भाजपा में शामिल हुए थे। उनको भाजपा ने वन मंत्री बनाया था। रावत को कांग्रेस के मुकेश मल्होत्रा ने चुनाव हरा दिया था।

'डिजिटल अरेस्ट' में ठगों ने महिला के उतरवाए कपड़े मनी लॉन्ड्रिंग के नाम पर उड़ाए 1.7 लाख रुपये

मुंबई, 1 दिसंबर (एजेंसियां)। मुंबई से डिजिटल गिरफ्तारी का एक चौंकाने वाला मामला सामने आया है। यहां एक दवा कंपनी में काम करने वाली 26 साल की युवती से साइबर ठगों ने 1.7 लाख रुपये ठग लिए। इसके साथ ही उन्होंने वीडियो कॉल पर बॉडी वेरिफिकेशन के नाम पर लड़की को कपड़े उतारने के लिए मजबूर किया। बोरीवली ईस्ट में रहने वाली लड़की की शिकायत पर दहिसर पुलिस स्टेशन में एफआईआर दर्ज की गई है। इसके बाद एफआईआर अंधेरी पुलिस को ट्रांसफर कर दी गई है। अब तक इस मामले में कोई गिरफ्तारी नहीं हुई है। पुलिस का कहना है कि ठगों ने 19-20 नवंबर के बीच महिला को शिकार बनाया। अपराधियों ने दिल्ली पुलिस के अधिकारी बनकर फोन किया था। साइबर ठगों ने लड़की से कहा कि उसके खिलाफ जेट एयरवेज के संस्थाप-अध्यक्ष नरेश गोयल से जुड़े मनी लॉन्ड्रिंग की जांच चल रही है। इसके बाद आरोपियों ने महिला से एक होटल रूम बुक करने को कहा। इसके बाद एक लिंक पर क्लिक करवाकर 1.7 लाख रुपये अकाउंट से उड़ा लिए। वहीं बाद में जब उसे एहसास हुआ कि उसके साथ धोखाधड़ी हुई है तो उसने पुलिस से संपर्क किया और 28 नवंबर को शिकायत दर्ज कराई।

मुंबई में इस तरह की कई घटनाएं आईं सामने

भारतीय न्याय संहिता और सूचना प्रौद्योगिकी अधिनियम की संबंधित धाराओं के तहत मामला दर्ज कर लिया गया है और आगे की जांच जारी है। बता दें साइबर अपराधी आजकल 'डिजिटल अरेस्ट' के जरिए ठगी को अंजाम दे रहे हैं। मुंबई में इस तरह की कई घटनाएं सामने आ चुकी हैं। एक दिन पहले ही गुजरात से एक मामला सामने आया था। यहां एक बुजुर्ग को डिजिटल अरेस्ट किया या और फिर अकाउंट से 61 लाख रुपये साफ कर दिए गए। सूरत क्राइम ब्रांच के मुताबिक, पांच आरोपियों को गिरफ्तार भी किया गया है। बुजुर्ग महिला को सीबीआई अधिकारी बनकर फोन किया गया था। बताया गया कि उनके नाम पर मुंबई से चीन के लिए भेजा गया एक पार्सल मिला है जिसमें ड्रग्स है। इसके बाद बुजुर्ग को 15 दिनों तक डिजिटल अरेस्ट में रखा गया।

'मेरी आपसे हाथ जोड़कर विनती है'

सीएम आतिशी ने एलजी सक्सेना को लिखी चिट्ठी

नई दिल्ली, 1 दिसंबर (एजेंसियां)। दिल्ली की सीएम आतिशी ने बस मार्शल्स की नियुक्ति को लेकर एलजी वीके सक्सेना को चिट्ठी लिखी है। उन्होंने कहा कि 13 नवंबर को दिल्ली सरकार ने आपको मार्शलों की दोबारा नियुक्ति का प्रस्ताव भेजा था, लेकिन अभी तक उस प्रस्ताव को आपकी मंजूरी नहीं मिली है।

मैं आपसे हाथ जोड़कर विनती करती हूं कि इस प्रस्ताव को मंजूरी दें। पूरी सरकार, मार्शल्स और महिलाएं आपकी मंजूरी का इंतजार कर रहे हैं।

पूरी दिल्ली उस दिन को कभी नहीं भूल सकती

सीएम आतिशी ने कहा कि पूरी दिल्ली कभी नहीं भूल सकती व दिन जब हमारी माताएं- बहनें और बेटियां बसों में असुरक्षित महसूस करती थीं। छेड़खानी और गलत नजरों का शिकार होना जैसे उनकी रोजमर्रा की जिंदगीका हिस्सा बन गया था। बच्चियों का स्कूल और कॉलेज जाना किसी चुनौती से कम नहीं था और महिलाएं काम पर जाने से पहले सौ बार सोचती थीं कि क्या वे सुरक्षित लौट पाएंगी। ये दर्द हर घर में महसूस किया जाता था।

समस्या को देखते हुए 10 हजार मार्शलों को तैनात किया

उन्होंने कहा कि हमारी सरकार ने इस समस्या को गंभीरता से लेते हुए बसों में 10 हजार से ज्यादा मार्शल तैनात किए। इन मार्शल ने ईमानदारी से अपना काम करते हुए बहुत से उपद्रवियों को पकड़ा था।

उसके बाद से ही हर महिला ने पहली बार बसों में खुद को सुरक्षित महसूस किया था। बसों में तैनात हमारे मार्शल हर उस मां बहन बेटी के लिए उम्मीद थे जो रोज अपने घर से निकलती थी। इन मार्शलों ने न सिर्फ महिलाओं को सुरक्षा दी बल्कि उन्हें आत्मविश्वास भी दिया। उनमें ये भरोसा भी जगाया कि अब कोई असामाजिक तत्व उनको तंग नहीं करेगा। उन्होंने कहा कि महोदय इन गरीब मार्शलों की नौकरी छीनने से न केवल उनके परिवारों का सहारा छिन गया, बल्कि महिलाओं की सुरक्षा का वह कवच भी कमजोर हो गया जो हर दिन लाखों महिलाओं को निडर होकर बसों में सफर करने की ताकत देता था।

दो हफ्ते बाद भी प्रस्ताव पर कोई फैसला नहीं

उन्होंने कहा कि इन सभी मार्शलों को दोबारा नियुक्ति देकर इन्हें वापस नौकरी पर रखने के लिए 13 नवंबर 2024 को हमारे सभी मंत्रियों ने एक प्रस्ताव पास करके आपके कार्यालय भेजा, लेकिन अब लगभग दो हफ्ते से ज्यादा का समय बीत जाने के बाद भी इस प्रस्ताव पर आपकी ओर से कोई फैसला नहीं लिया गया है। मुझे समझ नहीं आ रहा कि ये देरी क्यों हो रही है? उन्होंने कहा कि आपसे हाथ जोड़कर विनती करती हूं कि इस प्रस्ताव पर जल्द से जल्द अपनी स्वीकृति दें, ताकि उन 10 हजार परिवारों में फिर से रौशनी लौट आए और महिलाओं की सुरक्षा के लिए बसों में मार्शल तैनात हो सकें।

'महाराष्ट्र को जो नुकसान हुआ, उसके जिम्मेदार जस्टिस चंद्रचूड़ हैं', पूर्व सीजेआई पर भड़के संजय राउत

मुंबई, 1 दिसंबर (एजेंसियां)। महाराष्ट्र चुनाव नतीजे को शिवसेना यूबीटी के नेता संजय राउत ने गलत बताते हुए सुप्रीम कोर्ट के पूर्व मुख्य न्यायाधीश डीवाई चंद्रचूड़ पर ठीकरा फोड़ा है। उन्होंने महाराष्ट्र के चुनाव नतीजों को संविधान के खिलाफ बताया और राज्य में राष्ट्रपति शासन लागू करने की मांग की। चुनाव नतीजे घोषित हुए एक हफ्ते से ज्यादा समय बीत चुका है और अभी तक महाराष्ट्र में सीएम के नाम का एलान नहीं हुआ है। इस पर शिवसेना यूबीटी नेता ने तंज कसा। संजय राउत ने कहा कि महाराष्ट्र में ऐसी सरकार सत्ता में है, जो संविधान के अनुसार गलत है। इस सरकार को सुप्रीम कोर्ट का समर्थन मिला और इसके लिए तत्कालीन मुख्य न्यायाधीश डीवाई चंद्रचूड़ जिम्मेदार हैं। संजय राउत ने पूर्व सीजेआई पर शिवसेना विधायकों की अयोग्यता के मामले में देरी से सुनवाई करने का आरोप लगाया। ऐसा नहीं है कि महाराष्ट्र चुनाव में हार के लिए संजय राउत ने पहली बार पूर्व

मुख्य न्यायाधीश डीवाई चंद्रचूड़ पर ठीकरा फोड़ा है, इससे पहले भी वह ऐसा बयान दे चुके हैं। हाल ही में संजय राउत ने कहा था कि 'जो नतीजे आए हैं और महाराष्ट्र को जो नुकसान हुआ है, उसके लिए डीवाई चंद्रचूड़ जिम्मेदार हैं। उन्होंने समय पर विधायकों की अयोग्यता पर फैसला नहीं दिया। संजय राउत ने कहा कि अगर जस्टिस चंद्रचूड़ ने समय पर अपना फैसला दिया होता तो भविष्य में कोई ऐसा करने की हिमाकत नहीं करता। इतिहास इसके लिए कभी भी जस्टिस चंद्रचूड़ को माफ नहीं करेगा। महाराष्ट्र इसे याद रखेगा।' संजय राउत ने कहा कि '40 विधायक जिस पार्टी से चुनकर आए, उससे बेईमानी करके सत्ता पर काबिज हो गए, लेकिन जस्टिस चंद्रचूड़ ने इस मामले में समय पर फैसला नहीं दिया और एक तरह से वह दरवाजा खुला छोड़ दिया, जिससे आगे भी ऐसा हो सकता है। जस्टिस चंद्रचूड़ पर संविधान की रक्षा की जिम्मेदारी थी।'

सरकार गठन में हो रही देरी पर उठाए सवाल

संजय राउत ने कहा कि 'चुनाव नतीजे आए 10 दिन हो गए हैं, लेकिन अभी तक भाजपा सरकार क्यों नहीं बना पाई है। उनके पास बहुमत है, लेकिन अभी तक सरकार नहीं बनाई है। आखिर क्या हो रहा है?' भाजपा प्रदेश अध्यक्ष चंद्रशेखर बावनकुले ने हाल ही में कहा कि 5 दिसंबर को नई सरकार का शपथ ग्रहण समारोह होगा। इस पर संजय राउत ने तंज कसते हुए कहा कि 'क्या बावनकुले राज्यपाल हैं? ऐसी घोषणाएं करने का काम राज्यपाल का है।'

दिसंबर महीने में इतने दिन बंद रहेंगे स्कूल, छात्रों की रहेगी मौज

नई दिल्ली, 1 दिसंबर (एजेंसियां)। नवंबर महीना कई त्योहारी छुट्टियों के साथ खत्म हो गया और आज से साल के आखिरी महीने की शुरुआत हो गयी है। यह महीना भी स्कूली छात्रों के लिए खुशखबरी लेकर आया है। हालांकि, इस महीने रेगुलर छुट्टियों के अलावा महज 1 त्योहारी छुट्टी है, लेकिन महीने के अंतिम सप्ताह से ही सर्दियों की छुट्टियों की भी शुरुआत हो सकती है, ऐसे में स्कूली छात्रों को अपने परिजनों और दोस्तों के साथ अधिक समय बिताने के लिए मिल सकेगा। बात करें छुट्टियों की तो इस महीने इस महीने 5 रविवार पड़ रहे हैं, जिसका मतलब स्कूलों में 1, 8, 15, 22 और 29 दिसंबर को रविवार की छुट्टी रहेगी। रविवार की 5 छुट्टियों के अलावा 25 दिसम्बर को ईसाइयों के सबसे बड़े क्रिसमस त्योहार की छुट्टी रहेगी।

इस तरह से इस महीने कुल 6 स्कूली छुट्टियां रहेंगी। वहीं, महीने के अंतिम दिनों में संभावित सर्दियों की छुट्टियों से स्कूल की छुट्टियों की संख्या और भी बढ़ सकती है, जो स्कूली छात्रों, खास तौर पर निचली कक्षा के छात्रों के लिए किसी खुशखबरी से कम नहीं है।

महीने के अंतिम सप्ताह से हो सकती है सर्दियों की छुट्टियां

छुट्टी के दिनों में स्कूली छात्रों को अपने पसंदीदा कार्यों को करने के साथ, अपने परिवार और दोस्तों के साथ समय बिताने का मौका मिलता है। साथ ही वे इस दौरान वे अपने पसंदीदा खेलों को खेलना भी पसंद करते हैं। जिसके कई मौके उन्हें इस महीने मिल सकते हैं, क्योंकि अब लगातार गलन और सर्दी बढ़ेगी। ऐसे में संभव है कि, महीने के अंतिम सप्ताह से ही स्कूलों में सर्दियों की छुट्टी भी शुरू हो सकती है।

कामर्शियल गैस सिलेंडर फिर महंगा

पांच महीने में 172 रुपए का हो चुका है इजाफा

नई दिल्ली, 1 दिसंबर (एजेंसियां)। देश के चारों महानगरों में गैस सिलेंडर के दाम में लगातार 5वें महीने इजाफा देखने को मिला है। इन 5 महीनों में देश की राजधानी दिल्ली में 172 रुपए से ज्यादा की तेजी देखने को मिल चुकी है। वास्तव में ये बढ़ोतरी कमर्शियल गैस सिलेंडर की कीमत हुई है। वहीं दूसरी ओर घरेलू गैस सिलेंडर के दाम में लगातार 9वें महीने में कोई बदलाव नहीं हुआ है। घरेलू गैस सिलेंडर के दाम में आखिरी बार बदलाव 9 मार्च को देखा गया था। तब सरकार ने घरेलू गैस सिलेंडर की कीमत में 100 रुपए की कटौती की थी। आइए आपको भी बताते हैं कि आखिर देश में घरेलू गैस सिलेंडर सिलेंडर से लेकर कमर्शियल गैस सिलेंडर के दाम कितने हो चुके हैं।

कमर्शियल गैस सिलेंडर के दाम में इजाफा

आईओसीएल से मिली जानकारी के अनुसार कमर्शियल गैस सिलेंडर के दाम में लगातार 5वें महीने इजाफा देखने को मिला है। आंकड़ों के अनुसार देश की राजधानी दिल्ली और मुंबई में कमर्शियल गैस सिलेंडर की कीमत में 16.5 रुपए प्रति गैस सिलेंडर की तेजी देखने को मिली है। जिसके बाद दाम 1,818.50 रुपए और 1,771 रुपए हो गए हैं। जबकि कोलकाता में 15.5 रुपए की गिरावट देखने को मिली है और चेन्नई में दाम 16 रुपए कम हुए है। अब दोनों महानगरों में कमर्शियल गैस सिलेंडर के दाम क्रमशः 1,927 रुपए और 1980.50 रुपए हो चुके हैं।

5 महीने में इतना हुआ महंगा

अगर बात बीते 5 महीने की करें तो कमर्शियल गैस सिलेंडर की कीमत में 170 रुपए से ज्यादा की बढ़ोतरी देखी जा चुकी है।

देश की राजधानी दिल्ली में कमर्शियल गैस सिलेंडर के दाम में 172.5 रुपए का इजाफा देखने को मिल चुका है।

वहीं कोलकाता में कमर्शियल गैस सिलेंडर के दाम में 171 रुपए की बढ़ोतरी देखी जा चुकी है।

देश के बड़े महानगरों में शुमार मुंबई में कमर्शियल गैस सिलेंडर के दाम में 173 रुपए का इजाफा देखने को मिल चुका है।

दक्षिण भारत के सबसे बड़े महानगर चेन्नई में कमर्शियल गैस सिलेंडर की कीमत में बीते 5 महीने में 171 रुपए का इजाफा देखा जा चुका है।

घरेलू गैस सिलेंडर के दाम में कोई बदलाव नहीं

वहीं दूसरी ओर घरेलू गैस सिलेंडर के दाम में लगातार 9वें महीने में कोई बदलाव देखने को नहीं मिला है। आंकड़ों के अनुसार देश की राजधानी दिल्ली में घरेलू गैस सिलेंडर के दाम 803 रुपए का है। वहीं दूसरी ओर कोलकाता में घरेलू गैस सिलेंडर की कीमतें 829 रुपए देखने को मिल रही है। वहीं दूसरी ओर वहीं मुंबई में घरेलू गैस सिलेंडर की कीमतें 802.50 रुपए पर बनी हुई हैं। चेन्नई में घरेलू गैस सिलेंडर के दाम 818.50 रुपए पर देखने को मिल रहे हैं।

एटीएफ हुआ महंगा, जेट फ्यूल के दाम बढ़ने से महंगा होगा हवाई सफर

नई दिल्ली, 1 दिसंबर (एजेंसियां)। एटीएफ के दाम में पहली दिसंबर को अच्छा-खासा इजाफा देखा गया है और ये महंगा हो चुका है। एविएशन टर्बाइन फ्यूल (एटीएफ) या जेट फ्यूल के रेट बढ़ने के बाद हवाई सफर महंगा हो सकता है।

जेट फ्यूल के दाम पर इस महीने महंगाई का साया पड़ गया है और इसके रेट में 4000 रुपये प्रति किलोलीटर से ज्यादा का इजाफा देखा जा चुका है। 1 दिसंबर को देश के अलग-अलग शहरों में एटीएफ के दाम में बढ़ोतरी दर्ज की जा रही है और यहां आप अपने शहर के एटीएफ के दाम जान सकते हैं-

शहरों के नाम एटीएफ के दाम

दिल्ली 91,856.84
कोलकाता 94,551.63
मुंबई 85,861.02
चेन्नई 95,231.49

जानिए किस शहर में कितने बढ़े एटीएफ के दाम

दिल्ली में एटीएफ के दाम 91,856.84 रुपये प्रति किलोलीटर पर जा पहुंचे हैं जो पहली अक्टूबर को 87,597.22 रुपये प्रति किलोलीटर पर थे। इस तरह इसमें 4259.62 रुपये प्रति किलोलीटर की बढ़ोतरी देखी गई है।

मुंबई में एटीएफ के भाव 85,861.02 रुपये प्रति किलोलीटर पर आ गए हैं जो कि पहली अक्टूबर को 81,866.13 रुपये प्रति किलोलीटर पर रहे थे। इस तरह मुंबई में एटीएफ के दाम 3,994.89 रुपये प्रति किलोलीटर महंगे हो चुके हैं।

चेन्नई में एटीएफ के रेट 95,231.49 रुपये प्रति किलोलीटर पर आ गए हैं और ये 4,267.06 रुपये महंगा हुआ है।

इसके रेट पहली अक्टूबर को घटे थे और ये 90,964.43 रुपये प्रति किलोलीटर पर था।कोलकाता में एटीएफ के रेट 94,551.63 रुपये प्रति किलोलीटर पर आ गए हैं और इसमें 1158.81 रुपये का इजाफा कर दिया गया है जिसके बाद ये महंगा हो गया है।

महाराष्ट्र नंबर 1, यूपी नंबर 2, गुजरात नंबर 3 महिला टैक्सपेयर्स को लेकर ये कैसी रैंकिंग?

नई दिल्ली, 1 दिसंबर (एजेंसियां)। बीते पांच सालों में देश में महिला टैक्सपेयर्स की संख्या में जबरदस्त इजाफा देखने को मिला है. आंकड़ें के अनुसार ये बढ़ोतरी 25 फीसदी की देखने को मिली है. असेसमेंट ईयर 2019-20 में जहां 1.83 करोड़ महिला टैक्सपेयर्स देखने को मिली थी. उसकी संख्या असेसमेंट ईयर 2023-24 में 25 फीसदी बढ़कर 2.29 करोड़ हो गई है. खास बात तो ये है कि इसमें सबसे ज्यादा हिस्सेदारी महाराष्ट्र के महिला टैक्सपेयर्स की देखने को मिली है.

असेसमेंट ईयर 1 अप्रैल से 31 मार्च तक की 12 महीने की अवधि है. आइए आपको भी बताते हैं कि आखिर किस तरह के आंकड़े देखने को मिले हैं.

महाराष्ट्र में महिला टैक्सफाइलस की संख्या में इजाफा

वित्त मंत्रालय के आंकड़ों से पता चलता है कि महाराष्ट्र में महिला आईटीआर दाखिल करने वालों में सबसे अधिक 6.88 लाख की वृद्धि देखी गई है – जो कि असेसमेंट ईयर 2019-20 में 29.94 लाख से बढ़कर एवाई 2023-24 में 36.83 लाख हो गई है. प्रतिशत वृद्धि के मामले में, महाराष्ट्र में राष्ट्रीय औसत से कम, 23 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की गई. कतार में अगला स्थान उत्तर प्रदेश का देखने को मिला जहां 4.62 लाख

महिलाएं आईटीआर वेब से जुड़ीं. राज्य ने 29 फीसदी की वृद्धि दर्ज की – एवाई 2019-20 में 15.81 लाख से बढ़कर एवाई 2023-24 में 20.43 लाख हो गई. 24 फीसदी ग्रोथ यानी 4.41 लाख महिला आईटीआर फाइलर्स के साथ गुजरात तीसरा राज्य है. एवाई 2023-24 में, महाराष्ट्र (36.83 लाख) सबसे अधिक महिला आईटीआर दाखिल करने वाला राज्य था, इसके बाद गुजरात (22.50 लाख) और उत्तर प्रदेश (20.43 लाख) रहे. सबसे निचले तीन क्षेत्र लद्दाख (205), लक्षद्वीप (1,125) और मिजोरम (2,090) रहे. असेसमेंट ईयर 2019-20 में भी, ये राज्य टॉप तीन स्थानों महाराष्ट्र (29.94 लाख), गुजरात (18.08 लाख) और उत्तर प्रदेश (15.81 लाख) पर थे. वहीं सबसे कम वाले राज्यों की लिस्ट के टॉप में लद्दाख (30), मिजोरम (1,068) और लक्षद्वीप (1,108) देखने को मिले थे.लद्दाख में महिला आईटीआर दाखिल करने वालों की संख्या में फीसदी के मामले में सबसे बड़ा उछाल देखा गया है।

शेयर बाजार से बंपर कमाई का मौका, इस हफ्ते खुलेंगे 3 आईपीओ 8 की होगी लिस्टिंग

नई दिल्ली, 1 दिसंबर (एजेंसियां)। आईपीओ के जरिए अगर आप शेयर बाजार से जुड़ना चाहते हैं तो आने वाला सप्ताह आपके लिए खास होगा। इस हफ्ते 3 नए आईपीओ खुलेंगे और 8 आईपीओ की लिस्टिंग होगी। जो तीन नए आईपीओ खुल रहे हैं, इनमें से एक मेन बोर्ड से है और बाकी के दो एसएमई सेगमेंट से हैं। यह साल का आखिरी महीना है। यही वजह है कि निवेशक भी सोच समझकर बाजार में निवेश कर रहे हैं। बीते कुछ हफ्तों की गिरावट के बाद अब भारतीय शेयर बाजार में सुधार के आसार दिख रहे हैं। चलिए, अब आपको बताते हैं कि अगले हफ्ते कौन से 3 नए आईपीओ खुल रहे हैं और किन 8 नई कंपनियों की लिस्टिंग होगी।

कौन से नए आईपीओ खुल रहे हैं

इस हफ्ते जो तीन नए आईपीओ खुल रहे हैं उनमें एक प्रॉपर्टी शेयर आरईआईटी है। दूसरी निसस फाइनेंस सर्विसेज और तीसरी एमरार्ल्ड टायर मैन्युफैक्चरर्स लिमिटेड है।

प्रॉपर्टी शेयर आरईआईटी

यह मेन बोर्ड का आईपीओ है, जिसका कुल इश्यू साइज 352.91 करोड़ रुपये है। कंपनी इस इश्यू के तहत पूरी तरह फ्रेश शेयर जारी करेगी और कोई भी शेयर ऑफर फॉर सेल के तहत नहीं आएंगे। यह आईपीओ 2 दिसंबर से 4 दिसंबर के बीच सब्सक्रिप्शन के लिए खुलेगा, और इसकी संभावित लिस्टिंग 9 दिसंबर को हो सकती है। इसका प्राइस बैंड 10 लाख रुपये से 10.50 लाख रुपये प्रति यूनिट निर्धारित किया गया है। लॉट साइज की जानकारी फिलहाल उपलब्ध नहीं है।

निसस फाइनेंस सर्विसेज

यह एसएमई सेगमेंट का आईपीओ है, जिसका इश्यू साइज 114.24 करोड़ रुपये है। इस इश्यू के तहत कंपनी 101.62 करोड़ रुपये के 56.46 लाख फ्रेश शेयर जारी करेगी और 12.61 करोड़ रुपये के 7.01 लाख शेयर ऑफर फॉर सेल के माध्यम से जारी होंगे। यह आईपीओ 4 दिसंबर से 6 दिसंबर तक खुला रहेगा और इसकी संभावित लिस्टिंग 11 दिसंबर को होगी। इसका प्राइस बैंड 170 से 180 रुपये प्रति शेयर के बीच तय किया गया है। एक लॉट में 800 शेयर होंगे, जिसके लिए निवेशकों को न्यूनतम 1.44 लाख रुपये निवेश करने होंगे।

एमरल्ड टायर मैन्युफैक्चरर्स लिमिटेड

यह भी एसएमई बोर्ड का आईपीओ है, जिसका इश्यू साइज 49.26 करोड़ रुपये है। कंपनी 47.37 करोड़ रुपये के 49.86 लाख फ्रेश शेयर और 1.89 करोड़ रुपये के 1.99 लाख शेयर ओएफएस के तहत जारी करेगी। यह आईपीओ 5 दिसंबर से 9 दिसंबर तक खुला रहेगा और इसकी संभावित लिस्टिंग 12 दिसंबर को होगी। इसका प्राइस बैंड 90 से 95 रुपये प्रति शेयर निर्धारित किया गया है।

सुंदर पिचाई को मुंबई की अदालत ने क्यों भेजा नोटिस

जानें यूट्यूब से जुड़ा पूरा मामला क्या है?

नई दिल्ली, 1 दिसंबर (एजेंसियां)। दुनिया की सबसे बड़ी टेक कंपनियों में से एक गूगल के सीईओ सुंदर पिचाई के सामने एक नई मुश्किल खड़ी हो गई है। आर्थिक राजधानी मुंबई की एक अदालत ने गूगल सीईओ सुंदर पिचाई को अवमानना नोटिस जारी कर दिया है। गूगल के वीडियो स्ट्रीमिंग दिग्गज प्लेफॉर्म यूट्यूब के एक वीडियो पर कोर्ट के आदेश का पालन नहीं करने के चलते ये नोटिस जारी किया गया है।

सुंदर पिचाई को नोटिस क्यों

दरअसल यूट्यूब को एनजीओ ध्यान फाउंडेशन और इसके संस्थापक योगी अश्विनी को निशाना बनाने वाले कथित रूप से अपमानजनक वीडियो को हटाने का आदेश कोर्ट ने पहले दिया था और इस पहले के आदेश का पालन यूट्यूब ने नहीं किया है जिसके चलते सुंदर पिचाई को ये नोटिस का सामना करना पड़ रहा है। ध्यान फाउंडेशन ने गूगल के स्वामित्व वाले यूट्यूब के खिलाफ जो केस फाइल कर रखा है, इसकी अगली सुनवाई 3 जनवरी 2025 को होगी।

सुंदर पिचाई के खिलाफ क्यों ना अवमानना कार्रवाई शुरू की जाए- मुंबई कोर्ट

कोर्ट के एडिशनल चीफ जस्टिस ने पूछा है कि कोर्ट की अवमानना और इसके पूर्व आदेश का पालन ना करने के कारण सुंदर पिचाई के खिलाफ क्यों ना अवमानना कार्रवाई शुरू कर दी जाएं। दरअसल आदेश के वीडियो हटाने के आदेश के बावजूद 'पाखंडी बाबा की करतूत' वाले शीर्षक से बना वीडियो भारत के बाहर अभी भी देखा जा सकता है।

ध्यान फाउंडेशन ने अपनी याचिका में दावा किया कि गूगल के स्वामित्व वाली यूट्यूब ने जानबूझकर आपत्तिजनक वीडियो को हटाया नहीं है।

इसके चलते एनजीओ और उसके संस्थापक की प्रतिष्ठा को धूमिल करने की कोशिश की जा रही है जबकि उनकी संस्था एनजीओ पशु कल्याण पर ध्यान केंद्रित करने वाली संस्था है। गूगल ने जानबूझकर ध्यान फाउंडेशन और योगी अश्विनी जी के बेदाग चरित्र और प्रतिष्ठा को नुकसान पहुंचाया है। इसके लिए गूगल देरी की स्ट्रेटेजी अपना रहा था और छोटे-छोटे आधारों पर स्थगन मांग रहा था।

रस्ते का माल सस्ते में... चीन से आ रहे घटिया पावर बैंकों पर सरकार की नजर, क्या है मामला?

नई दिल्लीः चीन में बने घटिया क्वालिटी के पावर बैंकों की बढ़ती बिक्री ने सरकार की चिंता बढ़ा दी है। सरकार को इनके आयात को रोकने के लिए कदम उठाने पड़ रहे हैं क्योंकि ये देश में प्रतिस्पर्धा को बिगाड़ सकते हैं। साथ ही ये सुरक्षा तथा प्रदर्शन के मानकों पर उपभोक्ताओं को धोखा दे सकते हैं। ऐसे पावर बैंकों की वास्तविक क्षमता दावे से 50-60% कम है। दावा किया जाता है कि यह कम से कम दो बार मोबाइल फोन को चार्ज कर सकता है। लेकिन यह देखने में आया है कि ज्यादातर मामलों में एक बार ही मोबाइल चार्ज करने के बाद इसकी पावर खत्म हो जाती है। कंप्टीशन में आने और बाजार में हिस्सेदारी हासिल करने के लिए भारतीय कंपनियां बहुत कम कीमत पर चीनी सप्लायर्स से ये घटिया लीथियम-आयन सेल खरीद रही हैं।इस महीने की शुरुआत में भारतीय मानक ब्यूरो ने दो चीनी आपूर्तिकर्ताओं- गुआंगडोंग क्वासुन न्यू एनर्जी टेक्नोलॉजी कंपनी और गंझोउ नोवेल बैटरी टेक्नोलॉजी कंपनी के पंजीकरण रद्द कर दिए थे। भारत में सेल आपूर्ति में इन कंपनियों की आधे से अधिक हिस्सेदारी थी। उद्योग के अधिकारियों ने कहा कि एक अन्य आपूर्तिकर्ता गंझोउ ताओयुआन न्यू एनर्जी कंपनी लिमिटेड भी बीआईएस के रडार पर है। तीनों कंपनियों से टिप्पणी के लिए संपर्क नहीं किया जा सका।

ओपन मार्केट से जांच

अधिकारियों ने ओपन मार्केट से इन चीन कंपनियों के पावर बैंकों की जांच की थी। इसमें पाया गया कि अधिकांश पावर बैंक्स की क्षमता उनके दावों की तुलना में बहुत कम थी। इसके बाद ही चीनी कंपनियों पर बैन लगाया गया। एजेंसियों ने पाया कि 10,000 एमएएच बैटरी वाले पावर बैंकों की क्षमता केवल 4000-5000 एमएएच थी। लीथियम-आयन सेल इंडस्ट्री के एक कार्यकारी ने ईटी को बताया कि पावर बैंकों में इस्तेमाल होने वाले घटिया लीथियम सेल बाजार में आ रहे हैं। उपभोक्ता मोबाइल फोन और अन्य उपभोक्ता इलेक्ट्रॉनिक्स खरीदते समय सजग रहते हैं लेकिन पावर बैंकों के मामले में ऐसा नहीं है।एक सूत्र ने कहा कि बीआईएस के पास सुरक्षा के लिए मानक हैं, लेकिन प्रदर्शन के लिए नहीं। चीनी सप्लायर्स सेल के फिजिकल डाइमेंशंस को बनाए रखते हुए बीआईएस मानकों के आसपास काम कर रहे हैं लेकिन ऑर्डर क्वांटिटी की तुलना में कम क्षमता वाला माल भेज रहे हैं। इससे सामग्री की लागत कम हो रही है।

सोना खरीदने वालों की लगी लॉटरी, एक हफ्ते में ही इतना सस्ता हो गया गोल्ड

नई दिल्ली, 1 दिसंबर (एजेंसियां)। शादियों का सीजन चल रहा है। ऐसे में आप सोना खरीदना चाहते हैं, तो आपके अच्छी खबर है। क्योंकि सोने के भाव में शनिवार की तुलना में गिरावट आई है। रविवार, 1 दिसंबर को राजधानी दिल्ली में 24 कैरेट सोने की कीमत 78150 रुपये प्रति 10 ग्राम है। वहीं, देश की आर्थिक राजधानी मुंबई में 10 ग्राम सोना 78000 रुपये में है। देश के 10 बड़े शहरों में सोने के रेट में गिरावट आई है. पिछले एक सप्ताह में सोना 1640 रुपये सस्ता हुआ है। आइए जानते हैं देश के 10 शहरों में क्या है सोने का भाव।

दिल्ली में सोने का भाव

मनीकंट्रोल की रिपोर्ट के मुताबिक, दिल्ली में 24 कैरेट सोने की कीमत 78,150 रुपये प्रति ग्राम है और 22 कैरेट सोने का भाव 71,650 रुपये प्रति 10 ग्राम है।

कोलकाता और मुंबई में सोने की कीमत

1 दिसंबर 2024 को मुंबई और कोलकाता 22 कैरेट गोल्ड का भाव 71,500 रुपये प्रति 10 ग्राम है, जबकि 24 कैरेट सोने की कीमत 78,000 रुपये प्रति 10 ग्राम है।

चेन्नई में सोने की कीमत

चेन्नई में 22 कैरेट सोने की कीमत 71,500 रुपये प्रति 10 ग्राम और 24 कैरेट सोने की कीमत 78,000 रुपये प्रति 10 ग्राम है।

भोपाल और अहमदाबाद में क्या हैं भाव

अहमदाबाद में 22 कैरेट सोने की कीमत 71,550 रुपये प्रति 10 ग्राम है। 0 वहीं, भोपाल में भी 22 कैरेट सोने की कीमत 71,550 रुपये प्रति 10 ग्राम है। जबकि, इन शहरों में 24 कैरेट गोल्ड की कीमत 78,050 रुपये प्रति 10 ग्राम है।

लखनऊ और हैदराबाद में सोने की कीमत

उत्तर प्रदेश की राजधानी लखनऊ में आज 24 कैरेट सोने की कीमत 78,150 रुपये प्रति 10 ग्राम है और 22 कैरेट की कीमत 71,650 रुपये प्रति 10 ग्राम है. वहीं, हैदराबाद में 22 कैरेट सोने की कीमत 71,500 रुपये प्रति 10 ग्राम और 24 कैरेट सोने की कीमत 78,000 रुपये प्रति 10 ग्राम है।

जयपुर और चंडीगढ़ में सोने की कीमत

देश के इन दोनों शहरों में 22 कैरेट और 24 कैरेट सोने की कीमत बराबर है। दोनों शहरों में 24 कैरेट सोने की कीमत 78,150 रुपये प्रति 10 ग्राम है और 22 कैरेट सोने की कीमत 71,650 रुपये प्रति 10 ग्राम है।

30 रुपये एक बार दीजिए और 6 महीने तक पाइए फ्री फूड डिलीवरी, ज़ोमैटो ने निकाली कमाल की स्कीम

नई दिल्ली, 1 दिसंबर (एजेंसियां)। अब बाहर जाकर खाना खाने का चलन धीरे-धीरे खत्म होता जा रहा है। लोग फूड डिलीवरी कंपनियों के जरिए बाहर से खाना घर पर ही मंगवा कर आराम से उसका लुत्फ उठाते हैं। इसके अलावा, फूड डिलीवरी कंपनियों के नए-नए ऑफर्स ग्राहकों के लिए खाने की कीमत और कम कर देते हैं, जिससे ग्राहकों की जेब पर बोझ भी कम पड़ता है और उन्हें घर बैठे स्वादिष्ट खाना भी मिल जाता है।इसी कड़ी में फूड डिलीवरी कंपनी जोमैटो ने अपने ग्राहकों के लिए एक विशेष ऑफर पेश किया है। अब ग्राहक केवल 30 रुपये में जोमैटो गोल्ड मेंबरशिप ले सकते हैं। इस मेंबरशिप के तहत ग्राहकों को 6 महीने तक कई शानदार लाभ मिलेंगे, जिनमें फ्री डिलीवरी, आकर्षक डिस्काउंट और खास ऑफर्स शामिल हैं। यह ऑफर ब्लैक फ्राइडे सेल के दौरान लाया गया है। ग्राहकों को इसकी मदद से किफायती और सुविधाजनक फूड डिलीवरी का अनुभव मिलेगा।ज़ोमैटो गोल्ड मेंबरशिप के तहत, ग्राहक 7 किलोमीटर के दायरे में 200 रुपये से अधिक के ऑर्डर पर फ्री डिलीवरी का लाभ उठा सकते हैं। यह सुविधा उन रेस्तरां पर लागू होगी, जो जोमैटो के डिलीवरी नेटवर्क में शामिल हैं। इसके अलावा, इस प्लान के जरिए ग्राहक विशेष ऑफर्स और छूट का लाभ भी ले सकते हैं।अगर किसी ग्राहक के पास पहले से ही जोमैटो गोल्ड मेंबरशिप है, तो वह इस प्लान को खरीदकर अपनी मौजूदा सदस्यता की वैलिडिटी को 6 महीने तक बढ़ा सकता है। पुराने प्लान के खत्म होने के बाद नया प्लान अपने आप ही जुड़ जाएगा, जिससे ग्राहक को लगातार सुविधाएं मिलती रहेंगी।

दैनिक पंचांग

ग्रह गोचर

ग्रह स्थिति			लग्नारंभ समय	
सूर्य-	वृश्चिक	मे	वृश्चिक-	05-22 बजे
चंद्र-	वृश्चिक	मे	धनु----	07-36 बजे
मंगल	कर्क	मे	मकर...	09-41 बजे
बुध-	वृश्चिक	मे	कुंभ--	11-33 बजे
गुरु-	वृष	मे	मीन--	13-11 बजे
शुक्र-	धनु	मे	मेष---	14-46 बजे
शनि-	कुंभ	मे	वृष---	16-32 बजे
राहु-	मीन	मे	मिथुन-	18-32 बजे
केतु-	कन्या	मे	कर्क---	20-45 बजे
			सिंह---	22-56 बजे
			कन्या--	01-03 बजे
			तुला---	03-09 बजे

श्री कालयुक्त संवत्सर-विक्रम संवत-2081
शक संवत- 1946 सूर्य -दक्षिणायन- ऋतु -हेमन्त
महावीर निर्वाण संवत -2051,हिजरी सन् -1444
कलियुग अवधि-432000 सूर्योदय - 06-34 सूर्यास्त. -17-36
भोग्य कलि वर्ष-426875
कलियुग संवत -5125 वर्ष,
कल्पारंभ संवत् -1972949125
सृष्टि ग्रहारंभ संवत्-1955885125
दिशाशूल -- पूर्व - कांच मे मुह देखकर घर से निकले
तिथि- प्रतिपदा 12-43 तक उपरान्त द्वितीया
मास - मार्गशीर्ष शुक्ल , सोमवार 02 December
नक्षत्र - ज्येष्ठा 15-45 तक उपरान्त मूल
योग - धृति 16-00 तक उप शूल
करण- बव 12-43 तक उप बालव
विशेषः-
व्रत -त्योहार - मकर मे शुक्र - 11-57 से

विशेषः- राशिफल गृहों के गोचर के आधार पर लिखा गया है।सूक्ष्म फलादेश क लिए जन्म पत्रिका की सूक्ष्म स्थिति जानने के लिए जन्म कुण्डली दिखाना चाहिए।

राहुकाल 07:55 से 09:19 तक

पं महेशचन्द्र शर्मा मो.9247132654,8309517693

दिन का चौघड़िया		रात का चौघड़िया	
अमृत	06:34 - 07:55 शुभ	चंचल	17:36 - 19:16 शुभ
काल.	07:55 - 09:19 अशुभ	रोग	19:16 - 20:53 अशुभ
शुभ	09:19 - 10:42 शुभ	काल.	20:53 - 22:29 अशुभ
रोग	10:42 - 12:06 अशुभ	लाभ	22:29 - 00:06 शुभ
उत्पात	12:06 - 13:29 अशुभ	उत्पात	00:06 - 01:43 अशुभ
चंचल.	13:29 - 14:52 शुभ	शुभ.	01:43 - 03:19 शुभ
लाभ	14:52 - 16:16 शुभ	अमृत.	03:19 - 04:56 शुभ
अमृत.	16:16 - 17:36 शुभ	चंचल.	04:56 - 06:34 शुभ

आपका राशिफल

मेष चू,चे, चो, ला, ली, लू , ले, लो, अ,

आपकी कोई ऐसी निजी घटना है जो आपको रोके हुए है और आपकी तरक्की की राह में बाधा बन रही है । अगर आप खुद को गंभीर मुसीबतों से बचाना चाहते हैं तो इन मुद्दों को सुलझा लें । अपने रिश्तों की महत्ता समझने की कोशिश करें , अपने प्रयासों को रिश्तों की अहमियत देखकर ही निर्धारित करें ।

वृष ई, उ, ए, जो, वा, वी, वू, वे, वो,

आज आपमें कुछ करने और दूसरों को प्रभावित करने की इच्छा बनी रहेगी । आप मजबूत और पक्के फैसले ले पायेंगे और ऐसा करना का आपका समय बिलकुल ठीक होगा । आप अपने पुराने कर्ज और अहसानों से भी मुक्त हो पायेंगे । आप अपनी शीघ्र विचार की क्षमता के कारण किसी की जरुरत के समय मदद कर पायेंगे ।

मिथुन का, की, कू, घ, ड, छ, के, को, ह,

आज किसी अनियोजित रोमांचक यात्रा पर जाने की सम्भावना है । हो सकता है कि शहर में ही घूमना चाहें,लेकिन आपका विचार खूब मजे करने का है और ऐसा ही होगा भी । आप किसी करीबी के साथ हुए गिले-शिकवे दूर कर सकते हैं । आपको पहले ही ऐसा करना चाहिए था,परन्तु आज सामने आने पर सब बातें साफ़ हो जायेंगी ।

कर्क ही, हू ,हे , हो, डा , डी, डू, डे, डो,

बहुत से अच्छे मौके आपका इन्तजार कर रहे हैं लेकिन आपको उनके लिए पूरे तौर पर समर्पित कोशिशें करनी होंगी,जोकि इस समय आपके लिए कुछ मुश्किल लग रहा है । किसी ख़ास निजी समारोह के लिए इन मौकों को रोके रखना आपके लिए सही है । आप साधारणतया बहुत अच्छे हैं और इसीलिए आपके दोस्त आपसे लगाव रखते हैं ।

सिंह मा, मी ,मू ,मे, मो, टा, टी ,टू ,टे,

आप आज किसी अपराजेय शक्तिपुंज के समान महसूस करेंगे और किसी भी विरोध पर आसानी से विजय हासिल कर लेंगे । आज का दिन उस काम को करने का बहुत अच्छा दिन है जो आप काफी समय से करने की कोशिश कर रहे थे क्योंकि आज आपको कोई नही रोक सकता । आज का दिन अपने सबसे महत्वपूर्ण काम करें,सफलता आपके कदम चूमेगी ।

कन्या टो पा पी पू ष ण ठ पे पो

आज आप काल्पनिक से मूड में हैं । अलग अलग भूमिकाएं निभाने और कल्पनाओं में आपको बहुत मजा आता है । आप अपने लिए हर कहीं रोमांस ढूँढ लेते हैं । आपकी सपनों की एक दुनिया है जिसे आपको सच करने का मौका मिल सकता है । आप आज अपनी भावनाओं के वश में होकर संबंधों या करियर में कुछ असंभव सा हासिल करना चाहेंगे हालाँकि बड़े फैसले लेने के लिए यह समय ठीक नही है ।

तुला रा, री, रू ,रे ,रो , ता, ती, तू ,ते,

आज आपको कुछ चौंकाने वाली बातें पता चलेंगी । लेकिन चिंता ना करें,सब अच्छी खबरें होंगी । जिन कई चीजों के लिए आप लम्बे समय से कोशिश कर रहे थे,वे आज पूरी होने वाली हैं । जिन कोशशों को आप अपनी और से व्यर्थ मान चुके थे,वे अंतत आज सफल होंगी । इसीलिए आज दोस्तों और परिजनों के साथ खुशियाँ मनाएं।

वृश्चिक तो,ना,नी, ने,नू, नो, या, यी ,यू,

अपने सृजनात्मक विचारों को कार्यान्वित करने का यह बहुत अच्छा समय है । अपने विचारों को बड़ा रखें तथा किसी बोद्धिक या व्यवसायिक प्रशिक्षण में हिस्सा लें, इससे आपको औरो पर बढ़त हासिल होगी । हालाँकि ऐसा करते हुए आपको कुछ वित्तीय परेशानियां आ सकती हैं ।

धनु ये, यो,भा, भी, भू धा ,फा, ढा, भे

आज का दिन आपके लिए विशेष रूप से अच्छा है । आप अपना कुछ नया शुरू कर सकते हैं ,काफी समय लेने वाला अपना कोई अधूरा काम पूरा कर सकते हैं ,या कोई ऐसा काम जिसे आप लम्बे समय से टाल रहे हैं,को भी शुरू कर सकते हैं । आज शाम खेल और मौज मस्ती के नाम रहेगी ।अपने नए-पुराने दोस्तों के साथ समय बितायें और मजे करें । खरीदारी में विशेष आनंद आएगा ।

मकर भो, जा, जी, खो, खू, खे, खो, गा, गी

आज का दिन संकेत दे रहा है कि आज आप खूब आनंद उठाएंगे,लेकिन बेहतर यही होगा कि सुबह कुछ समय निकालकर अपने कल के शेष कार्यों को पूरा कर लें । अपने कार्यकर्म की योजना अपने परिजनों के कार्यक्रम के अनुसार ही बनाएं ताकि बाद में कोई ग़लतफ़हमी या समस्या ना आये ।

कुंभ गू, गे ,गो, सा, सी, सू, से, सो, दा,

आपकी एकाग्रता और विचारशक्ति इस समय अपने चरम पर है और इसीलिए आप अपने आसपास के लोगों की स्थिति के बारे में और भी संवेदनशील हैं । इससे आपको पिछले कुछ मतभेद सुलझाने में मदद मिलेगी । आप किसी ऐसे व्यक्ति के सम्पर्क में आ सकते हैं जिससे आप काफी पहले अलग हो गए थे ।

मीन दी, दू,थ, झ, ञ, दे, दो, चा,ची

आपको आज कोई अप्रत्याशित अनुभव हो सकता है । ऐसा नही है कि आप इससे परेशान ही होंगे लेकिन इससे आपके मन में हलचल जरूर मच जायेगी । इससे आपके दृष्टिकोण में ख़ासा बदलाव भी आ सकता है । अपनी भावनाओं को व्यक्त करने न घबराएं लेकिन यह समय अपने स्थान पर दूसरों की भावनात्मक मांगों को प्राथमिकता देने के लिए अधिक उपयुक्त है ।

श्री पंचागुली ज्योतिष केन्द्र

बंगाल से आलू की सप्लाई रोके जाने के बाद एक्शन में हेमंत सोरेन

मुख्य सचिव को दिये निर्देश

रांची, 1 दिसंबर (एजेंसियां)। पश्चिम बंगाल की ओर से आलू के वाहनों को सीमा पर रोके जाने के मामले का मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन ने संज्ञान लिया है. झारखंड के मुख्यमंत्री ने मुख्य सचिव को इस संबंध में तत्काल कदम उठाने के निर्देश दिए हैं.

मुख्यमंत्री के निर्देश पर झारखंड की सीएस ने बंगाल से की बात

मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन ने मुख्य सचिव अलका तिवारी से कहा है कि इस मामले का हल तत्काल निकालें. सीएम का निर्देश मिलते ही सीएस ने पश्चिम बंगाल के मुख्य सचिव मनोज पंत से बात की और इस मामले का हल निकालने के लिए कहा.

आलू की सप्लाई से जुड़े मामले के हल के लिए बंगाल में बनेगी कमेटी

पश्चिम बंगाल के मुख्य सचिव ने झारखंड की मुख्य सचिव अलका तिवारी को भरोसा दिलाया है कि जल्द ही एक कमेटी का गठन करके आलू की सप्लाई रोके जाने के मामले का निष्पादन किया जाएगा. पश्चिम बंगाल ने आलू के ट्रकों को झारखंड जाने से रोक दिया, जिसकी वजह से आलू की कीमतें बढ़ गईं हैं.

ग्राहक ऊंची कीमत से परेशान, आलू सड़ने से व्यवसायी परेशान

दूसरी ओर, आलू को सीमा पर रोके जाने की वजह से ट्रक में आलू सड़ने लगे हैं. एक ओर झारखंड के आम लोग आलू की ऊंची कीमतों से परेशान हैं, तो दूसरी ओर आलू व्यापारी भी नुकसान झेलने को विवश हैं. बंगाल सरकार ने कीमतों को नियंत्रित रखने के लिए अन्य राज्यों को आलू की सप्लाई बंद कर दी है.

झारखंड में संघ कमजोर हुआ! बीजेपी के हारे प्रत्याशियों ने किया खुलासा

बोले मंईयां-जेएलकेएम और भितरघात ने खेल बिगाड़ा

रांची, 1 दिसंबर (एजेंसियां)। झारखंड विधानसभा चुनाव 2024 के दौरान बीजेपी को करारी शिकस्त का सामना करना पड़ा। भाजपा के प्रदेश राष्ट्रीय संगठन महामंत्री बीएल संतोष और प्रदेश प्रभारी लक्ष्मीकांत वाजपेयी ने चुनाव में पार्टी की करारी हार की समीक्षा की। इस दौरान हारे हुए प्रत्याशियों ने कहा कि मंईयां सम्मान योजना, जेएलकेएम की ओर वोट काटने और भितरघात ने खेल बिगाड़ा। वहीं राजनीतिक विश्लेषकों का मानना है कि झारखंड आदिवासी बहुल क्षेत्रों में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) का संगठन कमजोर हो गया है।

भितरघात के कारण पार्टी प्रत्याशियों को हुआ नुकसान!

चुनाव में पार्टी की करारी हार की समीक्षा के पहले दिन प्रत्याशियों की ओर से हार के कारणों के बारे में नेतृत्व को जानकारी दी। वहीं दूसरे दिन रविवार को भी प्रदेश

पदाधिकारियों, जिलाध्यक्षों, प्रभारियों और चुनाव प्रबंधन समिति की ओर से अपनी बात रखी गई। गिरिडीह सीट से चुनाव में पराजित बीजेपी प्रत्याशी निर्भय शाहाबादी ने कहा कि वो विश्वासघात के शिकार हुए। वहीं देवघर के प्रत्याशी रहे नारायण दास ने कहा कि- मुझे अपनों ने लूटा, गैरों में कहां दम था। कुछ प्रत्याशियों ने अपने क्षेत्र के सांसदों के सहयोग को भी हार का बड़ा कारण बताया, वहीं कुछ ने आजसू पार्टी कार्यकर्ताओं पर जेएमएम प्रत्याशी के लिए काम करने का आरोप लगाया। समीक्षा बैठक के दौरान मंईयां सम्मान योजना और जेएलकेएम की भूमिका पर भी नेताओं ने अपनी बातें रखी।

गोगो दीदी योजना काट नहीं बन सकी

बैठक के दौरान हारे हुए प्रत्याशियों ने बताया कि बीजेपी की गोगो दीदी योजना इंडिया गठबंधन के 'मंईयां सम्मान योजना' का काट नहीं बन सकी। हेमंत सरकार ने चुनाव से हार महीने पहले मंईयां योजना की शुरुआत की। इसके तहत गरीब महिलाओं के खाते में प्रति महीने एक-एक हजार रुपये का भुगतान किया गया। इसके काट में बीजेपी की ओर से गोगो दीदी योजना की घोषणा की गई, लेकिन इसका असर नहीं दिखा।

सीटें कम होने के बावजूद बीजेपी का वोट प्रतिशत बढ़ा

समीक्षा बैठक के दौरान पदाधिकारियों की ओर से यह भी कहा गया है कि इस चुनाव में बीजेपी का वोट प्रतिशत बढ़ा है। लगभग नौ लाख वोट बढ़े। पार्टी की ओर से अब अगले सप्ताह से सदस्यता अभियान की भी शुरुआत की जा रही है।

आदिवासी इलाकों में कमजोर हुआ संघ!

राजनीतिक विश्लेषकों का मानना है कि लोकसभा चुनाव के बाद विधानसभा चुनाव में भी झारखंड के आदिवासियों ने भाजपा का साथ नहीं दिया। आदिवासियों के लिए आरक्षित 28 में से केवल एक सीट भाजपा को मिली।

पूर्व सीएम चंपाई सोरेन अपनी वजह से जीत सके। ऐसे परिणाम की उम्मीद किसी को नहीं थी. आदिवासियों को अपने साथ जोड़ने की तमाम कोशिशें बेकार हो गई।

झारखंड में लागू कराएंगे एनआरसी

बांग्लादेशी घुसपैठियों के मुद्दे पर बरसे निशिकांत दुबे

मधुपुर, 1 दिसंबर (एजेंसियां)। मधुपुर विधानसभा चुनाव खत्म होने के बाद भी बीजेपी लगातार झामुमो और हेमंत सरकार पर हमलावर है. बीजेपी लगातार बांग्लादेशी घुसपैठियों के मुद्दे को उठा रही है. इसी क्रम में गोड्डा सांसद निशिकांत दुबे ने बड़ा बयान दिया है. उन्होंने कहा कि हम राज्य में NRC लागू कराएंगे और बांग्लादेशी घुसपैठियों को बोरा में बंद करके बाहर करेंगे.

जब तक बीजेपी कार्यकर्ता जिंदा हैं तब तक करेगा हिंदू हितों की करेगा बात

हेमंत सरकार पर घेरते हुए कहा कि चुनाव खत्म होने के बाद मंदिरों पर हमला किया जा रहा है.

लगातार बीजेपी कार्यकर्ताओं को निशाना बनाया जा रहा है. दुबे ने कहा कि बीजेपी इन सभी घटनाक्रमों से डरने वाली नहीं है और बीजेपी कार्यकर्ता जब तक जिंदा हैं तब तक हिंदू हितों की बात करते रहेगा.

पुलिस ने आनन-फानन में किया आरोपियों को गिरफ्तार

गोड्डा सांसद ने पुलिस पर आरोप लगाया है कि आरोपियों पर पहले कार्रवाई नहीं की गई लेकिन मेरे आने के बाद आनन-फानन में पुलिस ने 3 आरोपियों को गिरफ्तार किया है. बता दें, मंदिर में तोड़फोड़ मामले में पुलिस ने अबतक तीन आरोपियों को गिरफ्तार किया है. दुबे ने आगे कहा कि इन अपराधियों को सिर्फ पकड़ने से नहीं होगा बल्कि उन्हें उम्रकैद की सजा हो.जब तक इन अपराधियों को उम्रकैद की सजा नहीं होगी तब तक बीजेपी चैन से नहीं बैठेगी.

चुनावी मुद्दा नहीं है बांग्लादेशी घुसपैठ का मामला : निशिकांत

निशिकांत दुबे ने कहा कि हमारे लिए बांग्लादेशी घुसपैठ का मुद्दा चुनावी मुद्दा नहीं है. हम लगातार इस मामले को उठाते रहेंगे. दुबे ने कहा कि आदिवासियों का आबादी लगातार घटती जा रही है. आदिवासियों की आबादी 45% से घट कर 28% हो गई है और मुसलमानों की जो जनसंख्या है वह 9 % से बढ़कर 24% हो गई है. ये बांग्लादेशी घुसपैठिये हैं. दुबे ने कहा कि चंपाई सोरेन जनवरी से आंदोलन करेंगे.

बीजेपी प्रदेश प्रभारी नितिन नबीन ने बताया

कैसा होना चाहिये अच्छा नेता?

रायपुर, 1 दिसंबर (एजेंसियां)। अच्छा नेता वही है जो नए लीडर, नई टीम बनाकर संगठन को दें। नई टीम की कल्पना को बनाये और सरकार को प्रदान करें। संगठन को ऊर्जा दें। ये बातें छत्तीसगढ़ बीजेपी प्रदेश प्रभारी नितिन नबीन ने भाजपा प्रदेश कार्यालय डूमरतराई में आयोजित संगठन पर्व प्राथमिक सदस्यता अभियान और नगरीय निकाय चुनाव की बैठक में कहीं।

उन्होंने कहा कि आप सबकी मेहनत और संगठन की ताकत से बनी सरकार ने जनता की उम्मीदों पर खड़ा उतरते हुए मोदी की गारंटी में किए बड़े वादों को पूरा किया है। अन्य वादों को पूरा करने की दिशा में काम कर रही है।

मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय के नेतृत्व में भाजपा इस पंचायत चुनाव और नगरीय निकाय चुनाव में भी पूरी ताकत से उतरेगी। हमें चुनाव में प्रदेश सरकार की उपलबधियों को लेकर जनता तक जाना है और नगरीय निकाय और पंचायत चुनाव में जनता से आशीर्वाद मांगना है।

भाजपा प्रदेश प्रभारी और बिहार सरकार में मंत्री नितिन नबीन ने कहा है कि छत्तीसगढ़ में जो लक्ष्य हमने तय किया था। केंद्रीय नेतृत्व ने जो अपेक्षा की थी। छत्तीसगढ़ भाजपा ने उसे पूरा किया है। संगठन के इस पर्व को नई संजीवनी देने का कार्य किया है। सदस्यता अभियान की सफलता बता रही है कि पार्टी का परचम किस प्रकार से छत्तीसगढ़ में लहरा रहा है। प्रदेश के सभी कार्यकर्ता एवं सभी पदाधिकारियों ने 86 दिनों में 60 लाख के सदस्य लक्ष्य प्राप्त करने के लिए कड़ी मेहनत की है। जनता का विश्वास भाजपा पर बढ़ा है।

राष्ट्रीय चुनाव प्रभारी नरेश बंसल ने कहा कि भाजपा के अब तक पूरे देश भर में 11 करोड़ से ऊपर प्राथमिक सदस्य बने हैं। 5 नवंबर तक देशभर में 2 लाख 90 हजार सक्रिय सदस्यों की पहली सूची प्रकाशित की हुई। 22 नवंबर को जो कार्यशाला थी । आंकड़े के अनुसार 6 लाख से अधिक भाजपा के सक्रिय सदस्य बन चुके हैं। छत्तीसगढ़ में 60 हजार सक्रिय सदस्य बने हैं और 81 हजार का लक्ष्य दिया है। 1 दिसंबर से 15 दिसंबर तक मंडल अध्यक्ष चुनाव प्रक्रिया करनी है। 5 दिसंबर तक बूथ स्तर का चुनाव पूरा करना है। 30 दिसंबर तक जिलाध्यक्षों का चुनाव होगा। भाजपा परिवारवादी पार्टी नहीं है लेकिन परिवार के भाव से कार्य करने वाली पार्टी है।

बाघ के लगातार हो रहे हमलों से लोग भयभीत

कुमरमभीम आसिफाबाद, 1 दिसंबर (स्वतंत्र वार्ता)। नवंबर माह में बाघ के हमले की चार से अधिक घटनाएं हो चुकी हैं। एक हमले को भले ही हादसा माना जाए। लेकिन अगर लोग इस बात से डर रहे हैं कि लगातार हमलों से क्या होगा, तो अधिकारियों ने बताया है कि इसकी वजह क्या है।

वन अधिकारियों का कहना है कि नवंबर का महीना नर और मादा बाघों के लिए प्राकृतिक संभोग का समय होता है। इसका एक हिस्सा यह है कि बाघ संभोग के लिए जंगल में सामान्य से अधिक लंबी दूरी तय करते हैं। उसी के एक भाग के रूप में, यह कहा जाता है कि कुछ मामलों में वे जंगल से परे आसपास के क्षेत्रों में घूमते हैं। इस समय बाघ स्वाभाविक रूप से कुछ उत्साह के साथ क्रूर होते हैं। बाघ अपने साथी की तलाश में बहुत सक्रिय रहते हैं। अधिकारियों का कहना है कि इसीलिए नवंबर और दिसंबर माह में बाघों के हमले बढ़ रहे हैं। हालांकि, बाघ विचरण वाले क्षेत्रों के निवासियों का कहना है कि अकेले बाहर न निकलना ही बेहतर है। कहा जाता है कि शाम 6 बजे से सुबह 10 बजे तक जंगली जानवरों के लिए जंगल में घूमने का आदर्श समय होता है। स्थानीय लोग, किसान और मवेशी चराने वाले लोग इस दौरान जंगल में न जाएं तो बाघ के हमलों से बचा जा सकता है।

हालांकि, सरकारी दिशानिर्देशों के अनुसार, कुमरमभीम आसिफाबाद जिले के कागज नगर के ईंजगाम में बाघ के हमले की घटना में मारे गए गन्नाराम मंडल निवासी कल्याणी के परिवार को रुपये मिलेंगे। 10 लाख का मुआवजा, वन, पर्यावरण और ऋण राहत विभाग के मंत्री कोंडा सुरेखा ने घोषणा की कि प्रक्रिया पूरी हो चुकी है। कपास इकट्ठा करने गई कल्याणी ने कहा कि बाघ के हमले में मौत से उसे बहुत दुख हुआ है। उन्होंने कहा कि वन विभाग द्वारा तमाम तरह के एहतियाती कदम उठाने के बावजूद यह घटना होना बेहद दुर्भाग्यपूर्ण है। मंत्री सुरेखा ने स्पष्ट किया है कि वे मुआवजे के साथ-साथ उनके परिवारों की जरूरतों के अनुसार उचित सहायता और सहायता भी प्रदान करेंगी।

मंत्री सुरेखा ने सिरपुर (टी) मंडल के दुब्बागुडेम में सुरेश नामक किसान पर एक और हमले की घटना पर दुख व्यक्त किया। आसिफाबाद जिले के डीएफओ नीरज से किसान की स्थिति के बारे में पूछा गया। डीएफओ ने बताया कि प्रारंभिक उपचार के बाद, किसान की स्वास्थ्य स्थिति स्थिर है और सुरेश को बेहतर इलाज के लिए मंचिरयाला जिला अस्पताल में स्थानांतरित किया जा रहा है। फिलहाल बाघ की गतिविधियों की जानकारी ली जा रही है। डीएफओ ने बताया कि बाघ के महाराष्ट्र की ओर मूवमेंट का पता चला है। मंत्री ने कई स्थानों पर मवेशियों पर बाघ के हमले की कथित घटनाओं के मद्देनजर पीसीसीएफ को जन जागरूकता कार्यक्रम चलाने का निर्देश दिया।

वन अधिकारियों को सलाह दी गई है कि अगर बाघ की आवाजाही के निशान दिखें और कोई बाघ देखे जाने की जानकारी दे तो तुरंत आसपास के लोगों को सतर्क कर दें।

भीषण सड़क हादसा, ट्रक ने कार को मारी टक्कर

पांच लोगों की मौत

अम्बिकापुर, 1 दिसंबर (एजेंसियां)। छत्तीसगढ़ के सरगुजा जिला में अंबिकापुर- बिलासपुर नेशनल हाईवे 130 पर उदयपुर के पास भीषण सड़क हादसा हुआ है। हादसे में पांच लोगों की मौत हो गई है। रायपुर से अंबिकापुर की ओर जा रही कार को ट्रक ने जोरदार टक्कर मार दी। हादसे में कार के परखचे उड़ गए।

कार सवार चार लोगों की मौके पर ही दर्दनाक मौत हो गई, जबकि एक अन्य ने उदयपुर सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र में दम तोड़ दिया। घटना रविवार की सुबह पांच से 5:30 बजे के बीच की है।

बताया जा रहा है कि ट्रक अंबिकापुर से बिलासपुर की ओर जा रहा था। कार चालक रायपुर से अंबिकापुर की ओर आ रहे थे। इसी दौरान उदयपुर अदानी गेस्ट हाउस के पास आमने-सामने दोनों की जबरदस्त टक्कर हो गई। हादसे के बाद ट्रक चालक ने भागने की कोशिश की, उसके ट्रक को पीछे किया तो कार और भी बुरी तरह से क्षतिग्रस्त हो गई। कार के परखचे उड़ गए और उसमें सवार लोग कार में ही बुरी तरह से दब गए। जिससे सभी लोगों की मौत हो गई।

कार में सवार पांचों लोग चंगोराभाठा रायपुर के रहने वाले हैं, वह घर से जगदलपुर जाने की बात कहकर निकले थे, उनका प्लान अचानक सरगुजा जिला के मैनपाट में जाने का हो गया, इसी दौरान उदयपुर अदानी गेस्ट हाउस के पास हादसा हो गया। कार में सवार सभी पांच लोगों की मौत हो गई।

दुर्घटना इतनी भीषण थी कि थाना प्रभारी कुमारी चंद्राकर को अपनी टीम के साथ कार में फंसे शवों को निकालने के लिए कटर का सहारा लेना पड़ा। हादसे के बाद मौके पर लोगों की भारी भीड़ जमा हो गई है। रेस्क्यू कार्य अभी भी जारी है।

कार में सवार थे पांच लोग

इस भीषण सड़क हादसे में कार में सवार दिनेश साहू,संजीव, राहुल, दुष्यंत, स्वप्निल की मौत हुई है।

इन सभी युवकों की उम्र 25 से 35 वर्ष के बीच की थी। पुलिस ने परिजनों को इस हादसे की खबर दे दी है, वह रायपुर से उदयपुर के लिए रवाना हो गए है।

महिलाओं के लिए खुशखबरी बिना डाक्यूमेंट्स मिलेगा 25 हजार लोन

वित्तमंत्री ने लांच की 'महतारी शक्ति ऋण योजना'

रायपुर, 1 दिसंबर (एजेंसियां)। छत्तीसगढ़ में महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाने के लिए राज्य ग्रामीण बैंक की ओर से एक नई योजना की पहल की गई है। इस योजना के तहत महिलाएं आर्थिक मजबूत होंगी। राज्य के वित्तमंत्री ओपी चौधरी ने 'महतारी शक्ति ऋण योजना' लांच किया है।

वित्त मंत्री ओपी चौधरी ने महतारी शक्ति ऋण योजना का अपने निवास कार्यालय से लांचिंग की है। इस अवसर पर राज्य ग्रामीण बैंक के चेयरमैन विनोद अरोरा भी उपस्थित थे। इस मौके पर वित्त मंत्री ने कहा कि यह योजना माताओं और बहनों को आर्थिक रूप से सशक्त बनाने की दिशा में एक अहम कदम है।

राज्य ग्रामीण बैंक के चेयरमैन अरोरा ने बताया कि जिन महिलाओं का ग्रामीण बैंक में महतारी वंदन योजना की राशि जमा होती है, उन्हें स्वरोजगार के लिए 25 हजार रुपए तक का लोन बिना किसी औपचारिकता के उपलब्ध कराया जाएगा।

राज्य ग्रामीण बैंक की ओर से शुरू की गई महतारी शक्ति ऋण योजना का उद्देश्य ग्रामीण क्षेत्रों की महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाना है। साथ ही उनके आर्थिक सशक्तिकरण को बढ़ावा देना है। इस योजना से महिलाओं को न केवल वित्तीय मदद मिलेगी, बल्कि उन्हें स्वरोजगार के लिए सहायक होगी।

नक्सलियों की कायराना करतूत

मुखबिरी के आरोप में युवक का घोंटा गला

बीजापुर, 1 दिसंबर (एजेंसियां)। बीजापुर जिले में नक्सलियों ने पुलिस मुखबिरी के आरोप में एक ग्रामीण युवक की गला घोंटकर निर्ममता पूर्वक हत्या कर दी। भैरमगढ़ एरिया कमेटी द्वारा जारी पर्चा छोड़ा गया है। इसमें ग्रामीण युवक पर पुलिस मुखबिरी का आरोप लगाते हुए हत्या करने की बात लिखी हुई है।

पुलिस से मिली जानकारी के मुताबिक, जिले के भैरमगढ़ ब्लॉक के डालेर निवासी युवक कुममेश कुंजाम (25) की नक्सलियों ने गला घोंटकर हत्या कर दी। हत्या के बाद नक्सलियों ने शव को चिहका टिन्डोडी जोडान मार्ग पर डाल दिया।

घटनास्थल से भैरमगढ़ एरिया कमेटी द्वारा जारी पर्चा छोड़ा गया है। इसमें ग्रामीण युवक पर पुलिस मुखबिरी का आरोप लगाते हुए हत्या करने की बात लिखी हुई है। भैरमगढ़ पुलिस शव को कब्जे में लेकर वैधानिक कार्रवाई कर रही है।

महादेव पैनल से ऑनलाइन सट्टा खिलाने वाला मुख्य आरोपी पप्पू पुणे से गिरफ्तार

छह महीने से था फरार

रायपुर, 1 दिसंबर (एजेंसियां)। रायपुर पुलिस ने महादेव पैनल से ऑनलाइन सट्टा खिलाने वाले फरार मुख्य आरोपी पप्पू जेठवानी को पुणे से गिरफ्तार किया है। वह छह महीने से फरार चल रहा था। एंटी क्राइम एंड सायबर यूनिट और थाना गंज पुलिस की संयुक्त टीम ने महाराष्ट्र के पुणे स्थित एक फ्लैट में रेड मारी। इस दौरान फ्लैट से 26 सटोरियों को गिरफ्तार किया। साथ ही 25 लाख रुपये चोरी के सामान भी जब्त किये हैं।

पुलिस ने आरोपियों के कब्जे से लैपटॉप 11 नग, मोबाइल 98 नग, कैल्कुलेटर 1 नग, वाईफाई 02 नग, रजिस्टर 03 नग, पास बुक 30 नग, चेक बुक 09 नग, एटीएम 81 नग तथा सिम कार्ड 50 नग जुमला कीमती लगभग 25 लाख रुपये जब्त किया।

इस मामले में आईडी लेकर

पैनल चलाने वाला मुख्य आरोपी खियाल दास जेठवानी उर्फ पप्पू जेठवानी घटना के बाद से लगातार फरार चल रहा था, जिसकी पुलिस लगातार पतासाजी कर रही थी। इसी दौरान आरोपी की गिरफ्तारी में लगी टीम के सदस्यों को उसकी रायपुर में मौजूद होने की जानकारी मिली। टीम ने उसकी पतासाजी करते हुए गिरफ्तार किया। पूछताछ में आरोपी ने ऑनलाइन महादेव सट्टा के पैनल का संचालन करना स्वीकार किया। आरोपी को गिरफ्तार कर उसके कब्जे से घटना से संबंधित एक नग मोबाइल फोन जब्त किया गया है।

गिरफ्तार आरोपी - खियाल दास जेठवानी उर्फ पप्पू जेठवानी, उम्र 48 साल, निवासी पाल्म रेजिडेंसी सी 104 कटोरा तालाब, थाना सिविल लाइन रायपुर।

पलामू में सेवानिवृत्त शिक्षक को टांगी से काट डाला

खोजी कुत्ते की मदद से आरोपी की तलाश में जुटी पुलिस

पलामू, 1 दिसंबर (एजेंसियां)। पलामू जिले के सतबरवा थाना क्षेत्र की पोंची पंचायत के हलुमांड गांव निवासी सेवानिवृत्त शिक्षक परीखन सिंह (70 वर्ष) को अज्ञात हमलावरों ने टांगी से काट डाला। परीखन सिंह की घटनास्थल पर ही मौत हो गई.

रविवार को सुबह 5 बजे हुई घटना

घटना रविवार सुबह लगभग 5 बजे की बतायी जा रही है. सुबह-सुबह हुई हत्या की सूचना मिलने पर थाना प्रभारी अंचित कुमार दल-बल के साथ पहुंचे. घटना के बाद ग्रामीणों में काफी आक्रोश देखा जा रहा है. परिजनों की मांग पर खोजी कुत्ते की मदद से पुलिस मामले की जांच में जुट गई है.

अज्ञात लोगों ने शौच से लौटते समय टांगी से गर्दन पर किया हमला

रविवार की सुबह करीब 5 बजे परीखन सिंह शौच के लिए गांव के बांध की ओर गये थे. लौटने के क्रम में देवी मंडप के पास अज्ञात हमलावरों ने टांगी से उनकी गर्दन पर हमला कर दिया. घटनास्थल पर ही उनकी मौत हो गयी. देवी मंडप और परीखन सिंह के घर के बीच की दूरी लगभग 500 मीटर बतायी जाती है.

सामाजिक कार्यों में बढ़-चढ़कर हिस्सा लेते थे परीखन सिंह

घटना के बाद परिजनों का रो-रोकर बुरा हाल है. परीखन सिंह सामाजिक कार्यों में बढ़-चढ़कर हिस्सा लेते थे. संगीत से उनको बड़ा लगाव था. घटना के बाद पंचायत के मुखिया गिरिवर प्रसाद राम, पंचायत समिति सदस्य डॉ अशोक राम, विधायक प्रतिनिधि राणा प्रताप कुशवाहा, प्रखंड 20 सूत्री अध्यक्ष राजकुमार यादव समेत कई लोगों ने घटना पर दुख व्यक्त किया है.

ट्रम्प की बीआरआईसी देशों को टैरिफ लगाने की धमकी

कहा-डॉलर के अलावा दूसरी करेंसी में ट्रेड किया तो 100% ट्रैरिफ लगाऊंगा; इसमें भारत भी शामिल

वाशिंगटन, 1 दिसंबर (एजेंसियां)। जनवरी में डोनाल्ड ट्रंप के राष्ट्रपति बनने के साथ ही दुनिया को व्यापारिक शुल्क युद्ध की एक और लहर का सामना करना पड़ सकता है। अमेरिका के राष्ट्रपति-चुनाव डोनाल्ड ट्रंप ने धमकी दी है कि यदि बीआरआईसी देशों ने अमेरिकी डॉलर को नकारा या अन्य किसी मुद्रा को अंतर्राष्ट्रीय लेन-देन के लिए इस्तेमाल करना शुरू किया तो इन देशों पर 100% टैरिफ लगाया जाएगा। इन देशों में भारत, रूस, ब्राजील, चीन, दक्षिण अफ्रीका और अन्य शामिल हैं। जानकारी के अनुसार ट्रंप की ये टिप्पणी अक्टूबर में बीआरआईसी की बैठक के बाद आई जिसमें डॉलर से इतर लेन-देन को बढ़ावा देने पर चर्चा की गई थी। डोनाल्ड ट्रंप ने एक ऑनलाइन पोस्ट में कहा कि वह बीआरआईसी देशों को अमेरिकी डॉलर से हटते हुए नहीं देख सकते। उन्होंने कहा बीआरआईसी देशों का डॉलर से हटने का प्रयास अब बर्दाश्त नहीं किया जाएगा। हमें इन देशों से ये सुनिश्चित करने की जरूरत है कि वे कोई नया बीआरआईसी मुद्रा नहीं बनाएंगे और न ही किसी अन्य मुद्रा को अमेरिकी डॉलर की जगह लेने देंगे। नहीं तो उन्हें 100% टैरिफ का सामना करना पड़ेगा और अमेरिकी अर्थव्यवस्था में व्यापार करने की संभावना समाप्त हो जाएगी।

बीआरआईसी देशों का डॉलर से दूर जाने का प्रस्ताव और ट्रंप की चेतावनी

बीआरआईसी देशों ने अक्टूबर में रूस के कजान में आयोजित शिखर सम्मेलन में गैर-डॉलर लेन-देन को बढ़ावा देने और स्थानीय मुद्राओं को मजबूत करने पर विचार किया था।

इस बैठक में एक संयुक्त घोषणा भी की गई जिसमें बीआरआईसी देशों के बीच बैंकिंग नेटवर्क को मजबूत करने और स्थानीय मुद्राओं में व्यापार के लिए कदम उठाने की बात की गई। हालांकि रूस के राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन ने सम्मेलन के अंत में ये साफ किया कि फिलहाल एसडब्ल्यूआईएफटी वित्तीय प्रणाली के मुकाबले कोई वैकल्पिक व्यवस्था नहीं बनाई गई है।

भारत और अन्य बीआरआईसी देशों की डॉलर से दूर जाने की नीति पर विरोध

भारत भी डॉलर से दूर जाने के पक्ष में नहीं है। भारत के विदेश मंत्री एस। जयशंकर ने अक्टूबर में कहा था कि ये भारत की आर्थिक नीति या रणनीतिक नीतियों का हिस्सा नहीं है। हालांकि उन्होंने ये भी कहा कि यदि व्यापारिक साझेदार डॉलर नहीं स्वीकारते या व्यापार नीतियों के कारण समस्याएं पैदा होती हैं तो वैकल्पिक उपायों पर विचार किया जाता है।

भारत पर शुल्क की बढ़ी चिंता

भारत के व्यापारिक शुल्क प्रणाली ने पहले भी ट्रंप को परेशान किया है और ब्राजील और चीन भी उनके निशाने पर रहे हैं। ट्रंप के 2025 के लिए प्रस्तावित टैरिफ योजना में पारस्परिकता का अहम स्थान है जिसका उद्देश्य संरक्षणवादी नीतियों के खिलाफ कड़ी कार्रवाई करना है। चुनाव से एक महीने पहले ट्रंप ने स्पष्ट किया था कि ये पारस्परिकता उनके योजना का सबसे महत्वपूर्ण हिस्सा है जिससे अमेरिका को ज्यादा समृद्ध बनाने का लक्ष्य है।

ट्रंप की भारत के लिए टिप्पणी

ट्रंप ने भारत के बारे में कहा था भारत सबसे बड़ा शुल्क लगाने वाला देश है हालांकि उन्होंने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और भारत-अमेरिका संबंधों की सराहना भी की। उन्होंने कहा कि भारत चीन से भी ज्यादा शुल्क वसूलता है, लेकिन इसे मुस्कान के साथ किया जाता है और भारत से माल खरीदने पर वे आभार व्यक्त करते हैं। इस पूरे मामले में ट्रंप का स्पष्ट संदेश है कि अगर बीआरआईसी देशों ने डॉलर से दूरी बनाने का प्रयास किया तो उन्हें इसके गंभीर परिणामों का सामना करना होगा साथ ही अमेरिकी बिजनेस को नुकसान पहुंचाने की संभावना से इनकार नहीं किया जा सकता।

'न्यूयॉर्क में सरकारी खर्च पर रहेंगे घुसपैठिए': यूएस में पाक होटल पर विवाद, भड़के रामास्वामी ने उठाए सवाल

न्यूयॉर्क, 1 दिसंबर (एजेंसियां)। रिपब्लिकन विवेक रामास्वामी ने पाकिस्तान सरकार के होटल और अमेरिकी राष्ट्रपति जो बाइडन को आड़े हाथों लिया है। दरअसल, एक रिपोर्ट में दावा किया गया कि न्यूयॉर्क में स्थित फाइव स्टार रूजवेल्ट होटल में अवैध प्रवासियों को रखने के एवज में न्यूयॉर्क शहर ने उसे 220 मिलियन डॉलर का भुगतान किया है। इर होटल का स्वामित्व पाकिस्तान सरकार के पास है। विवेक रामास्वामी ने इस कदम की आलोचना की है। उन्होंने इसे पागलपन करार दिया है। दरअसल, ट्रंप ने दिग्गज कारोबारी एलन मस्क के साथ ही विवेक रामास्वामी को डिपार्टमेंट ऑफ गवर्नमेंट एफिशिएंसी का संयुक्त कार्यभार सौंपा है। इस विभाग के तहत मस्क के साथ उन्हें सरकारी खर्च में फिजूलखर्ची को हटाने का काम सौंपा गया है। अमेरिका में बड़े पैमाने पर अवैध रूप से विदेशी प्रवासी पहुंचते हैं। पकड़े जाने पर उन्हें सरकारी खर्च पर रखा जाता है, जिन पर बाद में या तो अभियोग चलाया जाता है या वापस उनके देश भेज दिया जाता है। ऐसे ही अवैध प्रवासियों को रखने के लिए न्यूयार्क शहर ने लिए पाकिस्तान सरकार के स्वामित्व वाले एक होटल को 220 मिलियन डॉलर में किराये पर लिया। शनिवार को आई रिपोर्ट में इसका दावा किया गया था।

इस खुलासे पर विवेक रामास्वामी भड़क गए। उन्होंने इसे पागलपन बताया। रिपब्लिकन रामास्वामी ने सोशल मीडिया पर एक पोस्ट में कहा कि अवैध प्रवासियों के लिए करदाताओं द्वारा उस वित्तपोषित होटल को भुगतान किया गया, जिसका स्वामित्व पाकिस्तानी सरकार के पास है। इसका मतलब है कि न्यूयॉर्क के करदाता वास्तव में हमारे अपने देश में अवैध प्रवासियों को रखने के लिए एक विदेशी सरकार को भुगतान कर रहे हैं। यह पागलपन है।

सीरिया के अलेप्पो पर विद्रोहियों का कब्जा

राष्ट्रपति बशर अल-असद की मुश्किलें बढ़ीं

दमिश्क, 1 दिसंबर (एजेंसियां)।सीरिया में वर्षों बाद एक बार फिर से लड़ाई छिड़ गई है। सीरियाई सेना ने माना है कि विद्रोही अलेप्पो शहर के बड़े हिस्से में घुस आए हैं और वहां पर उन्होंने दर्जनों सैनिकों को मार डाला है। शहर के बाकी हिस्सों से सेना ने अपने सैनिक बुला लिए हैं और अब विद्रोहियों पर जवाबी हमले के लिए रणनीति बनाई जा रही है। पता चला है कि अलेप्पो पर विद्रोहियों के कब्जे के बाद रूसी सेना सक्रिय हो गई है और उसके लड़ाकू विमानों ने विद्रोहियों पर हमले शुरू कर दिए हैं। सीरिया के दूसरे बड़े शहर अलेप्पो पर विद्रोहियों के कब्जे ने राष्ट्रपति बशर अल-असद की मुश्किलें फिर से बढ़ा दी हैं। पर ताजा हमला इस्लामिक संगठन हयात तहरीर अल-शाम के लड़ाकों ने किया है। विभिन्न सशस्त्र गुटों के कब्जे वाले देश में करीब चार वर्षों के बाद लड़ाई छिड़ी है। उससे पहले सीरिया की सरकारी सेना ने रूस और ईरान के सहयोग से असद विरोधी विद्रोह को दबा दिया था। पूरा प्रांत विद्रोहियों के कब्जे में सीरिया की सेना ने कहा है कि उसकी बमबारी से विद्रोहियों को अलेप्पो में आगे बढ़ने में मुश्किलें आ रही हैं और वे किसी स्थान पर अपने कब्जे को मजबूत नहीं कर पा रहे हैं। जल्द ही विद्रोहियों को शहर से बाहर कर दिया जाएगा। जबकि विद्रोही सूत्रों के अनुसार उन्होंने इदलिब प्रांत के मरात अल नूमन शहर को भी सरकारी सेना से छीन लिया है। इस प्रकार से पूरा प्रांत विद्रोहियों के कब्जे में आ गया है। विद्रोहियों का दावा अगर सही है तो यह राष्ट्रपति असद के लिए बड़ा झटका होगा। इस बीच रूस ने असद को आश्वस्त किया है कि 72 घंटों में वह अतिरिक्त सैन्य सहायता सीरिया को भेजेगा जिससे विद्रोहियों को नियंत्रित किया जा सकेगा। असद समर्थक ईरान ने ताजा विद्रोही हमलों के लिए अमेरिका और इजरायल को जिम्मेदार ठहराया है।

ट्रम्प ने भारतवंशी काश पटेल को एफबीआई का डायरेक्टर बनाया

वाशिंगटन, 1 दिसंबर (एजेंसियां)।अमेरिका के नवनिर्वाचित राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने संघीय जांच ब्यूरो (एफबीआई) के डायरेक्ट पद के लिए अपने विश्वासपात्र काश पटेल को नामित किया है। इसी के साथ काश पटेल आगामी प्रशासन में सबसे ऊंची रैंक के भारतीय अमेरिकी बनेंगे। इसी के साथ ही ट्रंप ने न्यूयॉर्क के रियल एस्टेट डेवलपर चार्ल्स कुशनर को फ्रांस में अपना राजदूत नामित किया है।

अमेरिका को प्राथमिका देने वाले' योद्धा हैं पटेल डोनाल्ड ट्रंप ने अपने स्वामित्व वाले सोशल मीडिया मंच 'ट्रुथ सोशल' पर कहा, 'मुझे यह घोषणा करते हुए गर्व महसूस हो रहा है कि 'काश' पटेल एफबीआई के अगले निदेशक के रूप में काम करेंगे। काश एक बेहतरीन वकील, जांचकर्ता और 'अमेरिका को प्राथमिका देने वाले' योद्धा हैं, जिन्होंने अपने करियर के दौरान भ्रष्टाचार को उजागर किया और न्याय तथा अमेरिका के लोगों की रक्षा की।'

पहले कार्यकाल के दौरान किया था शानदार काम

इसके साथ ही ट्रंप ने कहा, 'काश ने मेरे पहले कार्यकाल के दौरान शानदार काम किया। इस दौरान वह रक्षा विभाग में चीफ ऑफ स्टाफ, राष्ट्रीय खुफिया के उप निदेशक और राष्ट्रीय सुरक्षा परिषद में आतंकवाद रोधी विभाग के वरिष्ठ निदेशक रहे। काश ने अदालत में हुई 60 से अधिक सुनवाई में प्रशासन की तरफ से पैरवी भी की।'

गुजरात से है काश पटेल का नाता

बता दें कि 25 फरवरी, 1980 को न्यूयॉर्क के गार्डन सिटी में गुजराती भारतीय माता-पिता के घर जन्मे काश पटेल ने रिचमंड विश्वविद्यालय से स्नातक की डिग्री प्राप्त की है। बाद में पेस यूनिवर्सिटी स्कूल ऑफ लॉ से ज्यूरिस डॉक्टर की डिग्री प्राप्त की है। 44 वर्षीय काश पटेल ने 2017 में तत्कालीन ट्रंप प्रशासन के अंतिम कुछ हफ्तों में अमेरिका के कार्यवाहक रक्षा मंत्री के 'चीफ ऑफ स्टाफ' के रूप में काम किया था। न्यूयॉर्क में जन्मे पटेल का नाता गुजरात से है। हालांकि, उनकी मां पूर्वी अफ्रीका में तंजानिया से और पिता युगांडा से हैं। वे 1970 में कनाडा से अमेरिका आ गए थे। पटेल ने पूर्व में पीटीआई को दिए एक इंटरव्यू में कहा था, 'हम गुजराती हैं।'

बाइडेन सरकार में एफबीआई के रहे आलोचक

काश पटेल बाइडेन सरकार में खुफिया एजेंसी एफबीआई के मुखर आलोचक रहे हैं। उन्होंने एजेंसी से खुफिया जानकारी जुटाने की भूमिका समाप्त करने तथा उन कर्मचारियों को हटाने की मांग की है, जो ट्रंप के एजेंडे का समर्थन करने से इनकार करते हैं। इसके साथ ही पटेल ने जुलाई में कंजर्वेटिव पॉलिटिकल एक्शन कॉन्फ्रेंस में कहा था कि हमें सरकार में बैठे उन लोगों की पहचान करनी होगी, जो हमारे संवैधानिक गणराज्य को कमजोर कर रहे हैं।

'दुनिया में बढ़ रही नफरत

आज श्री नारायण गुरु की शिक्षाओं की जरूरत' पोप ने भारतीय धर्मगुरु को किया याद

वेटिकन, 1 दिसंबर (एजेंसियां)। पोप फ्रांसिस ने कहा है कि आज जब हर जगह नफरत बढ़ रही है तो ऐसे समय में श्री नारायण गुरु का सार्वभौमिक मानव एकता का संदेश प्रासंगिक है। उन्होंने कहा कि समाज सुधारक का संदेश 'आज की हमारी दुनिया के लिए प्रासंगिक है, जहां हमें लोगों और देशों के बीच असहिष्णुता तथा नफरत बढ़ने के उदाहरण देखने को मिल रहे हैं।' श्री नारायण गुरु ने अपनी शिक्षाओं में सामाजिक और धार्मिक जागृति पर दिया जोर एर्नाकुलम जिले के अलुवा में श्री नारायण गुरु के सर्व-धर्म सम्मेलन के शताब्दी समारोह के अवसर पर वेटिकन में धर्मगुरु जुटे। इन धर्मगुरुओं और प्रतिनिधियों को संबोधित करते हुए पोप फ्रांसिस ने यह बात कही। पोप ने कहा कि 'आज दुनिया में जो अशांति का माहौल है और इसके लिए लोगों द्वारा अपने धर्मों की शिक्षाओं को न अपनाना एक बड़ी वजह है। उन्होंने कहा कि 'श्री नारायण गुरु ने अपने संदेश के माध्यम से सामाजिक और धार्मिक जागृति को बढ़ावा देने में अपना जीवन समर्पित कर दिया। गुरु ने अपने संदेश में कहा था कि सभी मनुष्य, चाहे उनकी जाति, धर्म और सांस्कृतिक परंपराएं कोई भी हों, एक ही मानव परिवार के सदस्य हैं।'

भेदभाव के खिलाफ थे श्री नारायण गुरु

पोप ने कहा, 'श्री नारायण गुरु ने इस बात पर जोर दिया कि किसी भी स्तर पर किसी के साथ कोई भेदभाव नहीं होना चाहिए। दुख की बात है कि कई समुदायों और लोगों को नस्ल, रंग, भाषा और धर्म के आधार पर रोजाना भेदभाव तथा तिरस्कार झेलना पड़ रहा है और हिंसा का सामना करना पड़ रहा है। खासकर ऐसा उन लोगों और समुदाय के साथ हो रहा है जो गरीब और कमजोर तबके के हैं।'पोप फ्रांसिस ने वैश्विक असहिष्णुता से निपटने के लिए श्री नारायण गुरु की शिक्षाओं को अपनाने की अपील की।

तो क्या पाकिस्तान से अलग होगा यह प्रांत? पूर्व सीएम के दावे ने बढ़ाई पाक सरकार की धड़कन

क्वेटा, 1 दिसंबर (एजेंसियां)।बलूचिस्तान के पूर्व मुख्यमंत्री और प्रांतीय विधानसभा के वर्तमान सदस्य नवाब असलम रईसानी ने कहा है कि बलूच लोगों का बहुमत पाकिस्तान से आजादी का समर्थन करता है। एक बयान में, रईसानी ने बलूच राष्ट्र को तीन अलग-अलग गुटों में विभाजित बताया। एएनआई ने पाकिस्तानी मीडिया रिपोर्ट के हवाले से बताया कि रायसानी का कहना है, 'बलूच लोगों का एक बड़ा हिस्सा आजादी के पक्ष में है और सक्रिय रूप से राष्ट्रीय स्वतंत्रता के लिए प्रयास कर रहा है।' रायसानी ने कहा कि दूसरे समूह में राज्य से जुड़े लोग शामिल हैं, जो व्यक्तिगत हितों और सत्ता की इच्छा से प्रेरित हैं।

'तीसरे समूह का प्रभाव सीमित'

उन्होंने कहा, 'यह गुट मौजूदा व्यवस्था के प्रति वफादार है और राष्ट्रीय

आकांक्षाओं पर सत्ता को प्राथमिकता देता है।' रायसानी ने कहा कि तीसरे गुट में राष्ट्रवादी दल शामिल हैं, जो संघ के भीतर स्वायत्तता और संसाधन नियंत्रण की वकालत करते हैं। हालांकि, उन्होंने इस समूह को कमजोर और प्रभाव में सीमित बताया। उन्होंने कहा, 'मौजूदा परिस्थितियों में, इन राष्ट्रवादी संसदीय दलों ने अपना महत्व खो दिया है।' इससे पहले शनिवार को बलूच यखजेती समिति ने बलूच युवाओं के लगातार गायब होने के मुद्दे पर प्रकाश डाला। उसने अपने बयान में बताया, 'बलूचों के जबरन गायब होने की घटनाएं बढ़ रही हैं, जिससे पीड़ितों और उनके परिवारों पर गंभीर असर पड़ रहा है और सामूहिक पीड़ा हो रही है। पिछले कुछ दिनों से सुरक्षा बलों ने कई लोगों को गायब कर दिया है, जिनमें से 11 को दर्ज किया गया है।'

गायब हुए कई युवा

बीवाईसी ने एक्स पर अपने बयान में कहा, 'लापता युवाओं का विवरण इस प्रकार हैः उथल बाजार से बलच, बयान, नासिर और गुलाब बलूच, लासबेला विश्वविद्यालय के छात्र। असकानी बाजार, तुर्बत, केच से निसार बलूच और सलीम बलूच। जेवानी, ग्वादर से फकीर मुहम्मद, दाद मुहम्मद और दुर्जन बलूच। कराची से परवेज समद, सिद्दीक अहमद। राज्य और उसके अधिकारियों ने बलूच नरसंहार को आगे बढ़ाने और प्रतिरोध को कुचलने के लिए जबरन गायब होने की घटनाओं को तेज कर दिया है। हर जगह बलूच राज्य के लिए एक लक्ष्य बन गए हैं।'

बीवाईसी ने 27 नवंबर को दिल जान बलूच के परिवार के साथ अवारन में एक धरना शिविर का आयोजन किया, जिसे 22 जून, 2024 को जबरन गायब कर दिया गया था। सेमिनार में वक्ताओं में बीवाईसी के नेता सम्मी दीन बलूच, दिल जान के परिवार के सदस्य और अन्य शामिल थे, जिन्होंने बलूच लोगों की मौजूदा दुर्दशा पर प्रकाश डाला। उन्होंने राज्य द्वारा पिछले आश्वासनों को पूरा करने में विफलता की निंदा की।

प्रापर्टी हासिल करने के बाद पति के 30 टुकड़े कर जगह-जगह फेंका

सिडनी, 1 दिसंबर (एजेंसियां)।कहते हैं कि पति- पत्नी का रिश्ता सबसे खूबसूरत रिश्ता होता है, लेकिन सिडनी में इसकी उलट ही तस्वीर नजर आई, जहां एक महिला ने कथित तौर पर अपने ही पति को प्रोपर्टी हासिल होने के बाद जान से मार दिया। महिला ने कथित तौर पर अपने पति की हत्या की और उसके बाद उसके शरीर के टुकड़ों को 30 प्लास्टिक बैग में ले जाकर फेंक दिया। सिडनी में 53 साल की ऑस्ट्रेलियाई महिला निर्मीन नूफल ने 62 वर्षीय पति ममदौह "इमाद" नूफल की कथित हत्या कर दी।सिडनी मीडिया के मुताबिक, पुलिस ने बताया कि पिछले साल 3 मई को पत्नी नूफल ने पश्चिमी सिडनी में अपने ग्रीनक्रे में मौजूद घर पर चाकू और एक आरी से अपने पति पर वार किया और पति की हत्या कर दी। हत्या करने के बाद पत्नी ने कथित तौर पर पति के शरीर के टुकड़ों को 30 प्लास्टिक बैगों में रखा और कई अलग-अलग जगह में जाकर कूड़ेदान में फेंक दिया।

चीन की हरकत से आगबबूला हुआ भारत लगाएगा ड्रैगन की कंपनी पर बैन

बिजिगं, 1 दिसंबर (एजेंसियां)।एक भारतीय ड्रोन कंपनी ने चीनी संस्थाओं द्वारा अपनी ऑटोपायलट तकनीक के कॉपीराइट उल्लंघन का आरोप लगाया है। इसके बाद भारत सरकार से अपने अधिकारों की रक्षा के लिए आयात पर रोक लगाने को कहा है। चेन्नई स्थित ज़ुप्पा जियो नेविगेशन टेक्नोलॉजी ने विदेश व्यापार महानिदेशालय (डीजीएफटी) को पत्र लिखकर उन चीनी कंपनियों से आयात पर बैन लगाने की मांग की है, जिन पर उसका आरोप है कि उन्होंने उसके पेटेंट का उल्लंघन किया है। डीजीएफटी को दिए एक लेटर में भारतीय कंपनी ने कहा है कि उसे इस साल अप्रैल में कंपनी को रियल टाइम कंप्यूटिंग आर्किटेक्चर के लिए पेटेंट से सम्मानित किया गया था, जिसे 'सिस्टम ऑफ डिसेमिनेटेड पैरेलल कंट्रोल कंप्यूटिंग इन रियल टाइम' कहा जाता है। कंपनी ने कहा कि नौ साल की जांच के बाद पेटेंट दिया गया। कंपनी ने याचिका दायर की है कि शंघाई स्थित कंपनी जीयी रोबोट भारत में ऑटोपायलट निर्यात कर रही है, जो सीधे तौर पर उनके अधिकार का उल्लंघन है। ज़ुप्पा जियो ने कहा कि चीन में स्थित जीयी नाम की एक अन्य कंपनी भी ऑटोपायलट की सप्लाई कर रही है, जो कथित तौर पर उसके कॉपीराइट का उल्लंघन है। अमेरिका और कई अन्य देशों ने चीन पर आरोप लगाए है कि उन्होंने इंटलेक्चुअल प्रॉपर्टी की चोरी की है, जो इंटरनेशनल मार्केट के समझौते का एक उल्लंघन है। अमेरिकन एंटरप्राइज इंस्टीट्यूट के डेरेक सिजर्स के मुताबिक चीन की कंपनियां इंटलेक्चुअल प्रॉपर्टी की चोरी के जरिए महंगी रिसर्च और डेवलपमेंट का इस्तेमाल कर सस्ते दामों पर प्रोडक्ट तैयार करती हैं। वही मामले पर सेंटर फॉर स्ट्रैटेजिक एंड इंटरनेशनल स्टडीज के टेक्नोलॉजी पॉलिसी प्रोग्राम के सीनियर वाइस प्रेसिडेंट और डायरेक्टर जेम्स लुईस का कहना है कि चीन की रणनीति पश्चिमी कंपनियों से टेक्नोलॉजी हासिल करना है।

एआई तकनीक का कमाल, इंसान के मरने के दिन के बारे में सटीक भविष्यवाणी करती है ये 'मृत्यु घड़ी'

वॉशिंगट, 1 दिसंबर (एजेंसियां)।नहमेशा से ही इंसान को इस बात में रुचि रही है कि वह कितने दिन जिएगा या उसकी जिंदगी कितनी लंबी है। अब दौर कृत्रिम बुद्धिमत्ता का है। ऐसे में एआई तकनीक की मदद से अब इसका भी अनुमान लगाया जा सकता है कि आपकी मृत्यु का दिन कौन सा हो सकता है। हाल ही में एआई की मदद से एक मृत्यु घड़ी बनाई गई है, जो कि एक एप है। इसकी मदद से इंसान की मृत्यु के दिन का करीब-करीब सटीक पता लगाया जा सकता है। एक मार्केट खुफिया फर्म के मुताबिक इस मृत्यु घड़ी एप के नतीजे इतने सटीक हैं कि जुलाई में इसके लॉन्च होने के बाद से ही अब तक इसे 1,25,000 लोगों द्वारा इसे डाउनलोड कर लिया गया है। इस एप को पांच करोड़ प्रतिभागियों और 1200 से ज्यादा जीवन प्रत्याशा अध्ययनों के आधार पर तैयार किया गया है। यह एप किसी व्यक्ति के आहार, व्यायाम, तनाव के स्तर, नींद के बारे में जानकारी का इस्तेमाल करके उस व्यक्ति की मौत के संभावित दिन की भविष्यवाणी करती है।

इस एप के डेवलेपर ब्रेंट फ्रैंसन कना कहना है कि इसके परिणाम बहुत मानक हैं। यह डेथ क्लॉक (मृत्यु घड़ी) स्वस्थ जीवन शैली वाले लोगों के बीच खासी लोकप्रिय हो रही है और फिटनेस और स्वास्थ्य श्रेणी में यह एप शीर्ष पर है। उल्लेखनीय है कि लोगों की जीवन प्रत्याशा, सरकारों, बीमा कंपनियों के लिए आर्थिक और वित्तीय गणना के लिहाज से हमेशा से अहम रही है। इसी के आधार पर सरकारें और बीमा कंपनियां जीवन बीमा और पेंशन फंड में पॉलिसी कवरेज की गणना करती हैं। यह डेथ क्लॉक एप यूजर्स को ऐसे सुझाव भी देती है, जिससे वह अपनी जीवन शैली में सुधार कर अपनी मृत्यु दर को कम कर सकते हैं।

ताइवान को 385 मिलियन डॉलर के हथियार बेचेगा अमेरिका; ड्रैगन ने ताइपे और यूएस को दिखाईं आंखें

वाशिंगटन, 1 दिसंबर (एजेंसियां)।चीन और ताइवान के बीच जारी तनाव के बीच अमेरिका ने ताइपे के लिए बड़े सैन्य सौदे को मंजूरी दे दी है। इस सौदे के तहत अमेरिका ताइवान को एफ-16 जेट और रडार के लिए स्पेयर पार्ट्स की बिक्री करेगा। इस सैन्य सौदे की कीमत 385 मिलियन अमेरिकी डॉलर बताई जा रही है। अमेरिकी रक्षा सुरक्षा सहयोग एजेंसी (डीएससीए) ने बताया कि साल 2025 में इसके शुरू होने की उम्मीद है। इस सौदे के लिए अमेरिका की सहमति तब आई है जब ताइवान के राष्ट्रपति लाई चिंग-ते की प्रशांत क्षेत्र की यात्रा करने जा रहे हैं। अमेरिका के इस कदम से चीन की चिंताएं बढ़ गई हैं। मीडिया रिपोर्ट्स के अनुसार, डीएससीए ने इस सौदे की जानकारी देते हुए कहा कि अमेरिकी विदेश विभाग की मंजूरी का उद्देश्य ताइवान को अपने एफ-16 बेड़े की परिचालन तैयारी बनाए रखने में मदद करना है।

जिससे द्वीप वर्तमान और भविष्य दोनों खतरों से निपटने में सक्षम हो सके।

बाइडन के कार्यकाल में ताइवान के साथ यह 18वां सौदा

रिपोर्ट्स के मुताबिक, यह नया हथियार सौदा अमेरिकी राष्ट्रपति जो बाइडन के प्रशासन के दौरान किया गया 18वां सौदा है। दरअसल, चीन के बढ़ते दबाव के बीच ताइवान सक्रिय रूप से अमेरिका के साथ अपने सैन्य संबंधों का विस्तार करने में लगा हुआ है। इस कारण द्वीप के आसपास सैन्य गतिविधि बढ़ गई है। पिछले महीने, अमेरिका ने ताइवान के लिए 2 बिलियन अमेरिकी डॉलर के हथियार पैकेज को मंजूरी दी थी। इसमें उन्नत मिसाइल सिस्टम और रडार शामिल थे।

अमेरिकी क्षेत्र में भी रुकेंगे ताइवानी राष्ट्रपति

चीन की आलोचनाओं और धमकियों के बावजूद ताइवान के राष्ट्रपति विलियम लाई चिंग-ते प्रशांत क्षेत्र की यात्रा पर रवाना हो गए हैं। इस दौरे के क्रम में वे अमेरिकी क्षेत्र हवाई और गुआम में भी रुकेंगे। पद संभालने के बाद यह उनका पहला विदेशी दौरा है। यात्रा पर रवाना होने से पहले अपने संबोधन में लाई ने यात्रा को सुचारू बनाने में मदद करने के लिए अमेरिका के प्रति आभार व्यक्त किया और यात्रा को मूल्य-आधारित लोकतंत्र के एक नए युग की शुरुआत बताया।

चीन ने जताया विरोध

लाई के दौरे से चीन नाराज हो गया है। ताइवान ने अमेरिका के साथ सैन्य सौदे और लाई की यात्रा का भी विरोध किया है। चीन के विदेश मंत्रालय ने लाई की अमेरिका यात्रा की निंदा की है। चीन के विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता माओ निंग ने कहा कि अमेरिका को ताइवान मुद्दे को अत्यधिक सावधानी से संभालना चाहिए। उन्होंने कहा कि यूएस को ताइवान की स्वतंत्रता का स्पष्ट रूप से विरोध करना चाहिए और चीन के शांतिपूर्ण पुनर्मिलन का समर्थन करना चाहिए।

ताइवान को अपना हिस्सा मानता है चीन

गौरतलब है चीन, ताइवान को अपना हिस्सा मानता है, जबकि ताइवान खुद को संप्रभु राष्ट्र मानता है। अब तक चीन ने सीधे ताइवान पर आक्रमण नहीं किया है, लेकिन वो ये सब कुछ ग्रे जोन में करता है। ये चीन की सेना का एक पैंतरा है, जिससे वो सीधे युद्ध तो नहीं करती लेकिन ये शक्ति प्रदर्शन करती है। ग्रे जोन का मतलब है कि कोई देश सीधा हमला नहीं करता है लेकिन इस तरह का डर हमेशा बनाए रखता है। सीधे सैन्य कार्रवाई की जगह, ऐसी कई चीजें होती रहती हैं, जिनसे हमले का डर बना रहता है। ताइवान के साथ चीन यही कर रहा है। चीन सितंबर 2020 से 'ग्रे जोन' रणनीति का अधिक बार उपयोग कर रहा है। जानकारों का कहना है कि ग्रे जोन युद्ध रणनीति दरअसल, एक तरीका है, जिससे लंबी अवधि में धीरे-धीरे प्रतिद्वंद्वी को कमजोर कर दिया जाता है और चीन ताइवान के साथ ठीक यही करने की कोशिश कर रहा है।

सीएम भजनलाल शर्मा की मां की तबीयत बिगड़ी

आरबीएम अस्पताल में एडमिट

भरतपुर, 1 दिसंबर (एजेंसियां)। सीएम भजन लाल शर्मा की मां गोमती देवी की रविवार को अचानक तबीयत खराब हो गई। उन्हें सुबह करीब 10 बजे भरतपुर के आरबीएम अस्पताल लाया गया। उन्हें सास लेने में दिक्कत आ रही थी। इसके बाद तुरंत आईसीयू में एडमिट किया गया, जहां फिलहाल उनकी हालत ठीक है।

सीनियर फिजीशियन डॉक्टर विवेक भारद्वाज ने बताया- सीएम भजन लाल शर्मा की मां गोमती देवी की अचानक तबीयत खराब हो गई। उन्हें तुरंत एम्बुलेंस से आरबीएम अस्पताल लाया गया। उन्हें सांस लेने में परेशानी हो रही थी। वह थायराइड की भी पेशेंट हैं।

एहतियात के तौर पर उन्हें आईसीयू में भर्ती किया गया। डॉक्टरों की टीम ने उन्हें ऑब्जर्वेशन में रखा। फिलहाल उनकी हालत ठीक है।

सीएम की मां फिलहाल उनके जवाहर नगर वाले घर पर रहती है। अस्पताल में एक्सपर्ट डॉक्टरों की टीम उनके स्वास्थ्य पर नजर बनाए हुए है।

पीएमओ नगेंद्र भदौरिया ने बताया- सीएम भजन लाल शर्मा की मां गोमती देवी को सांस लेने में हुई परेशानी की वजह से एडमिट किया गया था। फिलहाल वह आईसीयू में भर्ती हैं। उनकी हालत में पहले से सुधार है।

दिल्ली-मुंबई एक्सप्रेस-वे पर सुरंग ढही, एक की मौत

कोटा, 1 दिसंबर (एजेंसियां)। कोटा में दिल्ली-मुंबई एक्सप्रेस-वे पर निर्माणाधीन सुरंग का हिस्सा शनिवार रात 12 बजे ढह गई। हादसे में मलबे में दबने से एक मजदूर की मौत हो गई और तीन गंभीर घायल हो गए। हादसा रामगंजमंडी के मोड़क इलाके में बन रही टनल में हुआ। नेशनल हाईवे अथॉरिटी ऑफ इंडिया ने जांच के लिए कमेटी का गठन किया है। एनएचएआई के प्रोजेक्ट डायरेक्टर संदीप अग्रवाल ने बताया कि हादसा टनल के बाहर के हिस्से में हुआ है। यह घटना टनल से करीब 200 मीटर पहले हुई, जहां आर्टिफिशियल टनल (कट एंड कवर) का निर्माण चल रहा था। यह टनल पूरी तरह से सीमेंट-कंक्रीट से बनाई जा रही है। मजदूर उस समय सीमेंट-कंक्रीट के लिए सरिया बांधने का काम कर रहे थे। इसी दौरान टनल का हिस्सा ढह गई। हादसे के बाद अफरा-तफरी मच गई। साथी मजदूरों ने दबे हुए मजदूरों को बाहर निकाला। घायलों को प्राथमिक उपचार के लिए मोड़क सीएचसी (सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र) ले जाया गया। जहां शमशेर सिंह रावत (33) पुत्र लछम सिंह निवासी कोथी, देहरादून (उत्तराखंड) को मृत घोषित कर दिया गया। मजदूरों ने बताया कि 10-15 लोग ड्रिलिंग का काम कर रहे थे, तभी अचानक ऊपर से पत्थर और मिट्टी ढह गई। इस घटना में चार मजदूर मलबे में दब गए, जबकि बाकी मजदूरों ने भागकर अपनी जान बचाई। मलबे का ढेर करीब पांच फीट ऊंचा था। तीन मजदूर पूरी तरह से दबे नहीं थे। उन्हें 15-20 मिनट में मलबे को हटाकर निकाल लिया गया। वहीं, शमशेर सिंह मलबे में पूरी तरह दब गया था। उसे निकालने में करीब आधे घंटे का समय लगा। जिससे उसकी मौत हो गई। हादसे में टनल ठेकेदार की लापरवाही सामने आई है। मजदूरों को बिना सुरक्षा उपकरणों के काम करवाया जा रहा था। एनएचएआई के प्रोजेक्ट डायरेक्टर संदीप अग्रवाल ने बताया- एनएचएआई मुख्यालय ने इस मामले की जांच के लिए एक कमेटी गठित कर दी है। यह कमेटी पूरी सेफ्टी ऑडिट करेगी, जिसमें टनल विशेषज्ञ शामिल होंगे। यह कमेटी टनल निर्माण में ठेकेदार की ओर से सेफ्टी के संबंध में हुई कमियों का भी आकलन करेगी।

निकाय चुनाव को लेकर आंदोलन करेगी कांग्रेस

2 से ज्यादा बच्चे होने पर भी चुनाव लड़ने की रखी मांग

जयपुर, 1 दिसंबर (एजेंसियां)। कांग्रेस के राजीव गांधी पंचायतीराज संगठन का प्रदेश स्तरीय स्वराज अधिवेशन पीसीसी कार्यालय में हुआ। इसमें स्थानीय निकायों के चुनाव स्थगित करने के मुद्दे को लेकर जन आंदोलन करने का निर्णय लिया गया। अधिवेशन में स्थानीय निकायों के 450 जनप्रतिनिधियों ने भाग लिया।

अधिवेशन को संगठन के राष्ट्रीय अध्यक्ष हर्षवर्धन सपकाल एआईसीसी सहप्रभारी पूमन पासवान, पूर्व मंत्री बीडी कल्ला, प्रताप सिंह खाचरियावास, सीताराम लांबा सहित संगठन के कई पदाधिकारियों ने संबोधित किया। संगठन के प्रदेश अध्यक्ष डॉ. सी.बी.यादव ने बताया कि अधिवेशन में स्वराज सारथी अभियान का भी आगाज किया गया।

दो से ज्यादा बच्चे होने पर भी चुनाव लड़ने की छूट मिले

अधिवेशन में स्थानीय निकायों में चुनाव में दो बच्चों के नियम को निरस्त करने और 73वां व 74वां संविधान संशोधन के विषयों को स्थानीय सरकारों को सौंपने की आवश्यकता जताई। ग्राम सभा को सशक्त करने एवं कांग्रेस कार्यकर्ताओं को सोशल ऑडिट तथा जनसुनवाई जैसे राजनीति के नए साधनों के इस्तेमाल पर जोर दिया।

वहीं, पंचायती राज संगठन से जुड़े हुए लोगों को आगामी लोकसभा एवं विधानसभा चुनाव में पार्टी में अधिक भागीदारी दिए की मांग भी रखी गई।

बेटे के आने की खुशी में गांव में न्योता था

अग्निवीर की पार्थिव देह लौटी; हाथ फेरकर मां ने किया दुलार; सैन्य सम्मान के साथ अंतिम संस्कार

बीकानेर, 1 दिसंबर (एजेंसियां)। बेटा अग्निवीर ट्रेनिंग के 7 माह बाद घर वापस आने वाला था। पिता ने पूरी तैयारी कर रखी थी। घर की रंगाई-पुताई करवाई थी, गांव के लोगों को कहा था बेटा आने वाला है। लेकिन, घर आने से 5 दिन पहले बेटे की मौत की खबर सुनकर कलेजा फट पड़ा। खुशियां मातम में बदल गई। रविवार को अग्निवीर शंकर (22) की पार्थिव देह बीकानेर के लूणकरणसर के करणीसर गांव लाई गई। शव उनके पैतृक गांव पहुंचते ही मां पार्थिव देह से लिपट कर रो पड़ी। अपने बच्चे के सिर पर हाथ फेर कर दुलार किया। उनका सैन्य सम्मान के साथ अंतिम संस्कार किया गया। पिता कानदास कहते हैं- बेटे शंकर की ट्रेनिंग की शुरुआत इसी साल 30 अप्रैल को शुरू हुई थी। इसके 7 महीने बाद उसकी ट्रेनिंग 2 दिसंबर को खत्म होनी थी और वह 3 दिसंबर को घर आने वाला था। इसी बीच शुक्रवार को सूचना मिली कि ब्रेन हैमरेज होने से उनकी मौत हो गई है। हमारी सारी तैयारियां धरी की धरी रह गई। पूरे गांव को न्योता था और सभी को बता दिया था कि बेटा घर आने वाला है। सबको उसके सम्मान में घर आना है। ट्रेनिंग के दौरान उसे एक भी छुट्टी नहीं मिली थी। लौटा तो ऐसे लौटा कि अब उससे बात भी नहीं कर पाएंगे। शंकर की शादी नहीं हुई थी। उनकी मां संतोष देवी रह-रह कर बेटे को पुकारती हैं। 1 छोटा भाई है जो अभी पढ़ रहा है। वे नासिक में ट्रेनिंग ले रहे थे। शंकर का शव सुबह लूणकरणसर पहुंचा। यहां पार्थिव देह ले जा रहे वाहन को रुकवा कर पंचायत समिति प्रधान सहित बड़ी संख्या में लोगों ने श्रद्धांजलि दी। युवाओं ने शंकर दास अमर रहे के नारे लगाए। फूल मालाओं से उनके वाहन को लाद दिया गया। लूणकरनसर कस्बे के राजपुरा फांटा पर सुबह करीब 9 बजे शंकर दास को श्रद्धांजलि दी गई। उसके परिजनों के अलावा मित्र और लूणकरनसर के प्रबुद्ध लोग श्रद्धांजलि देने पहुंचे। इसके बाद नाथवाना, किसनासर, राजपुरा गांव में भी शंकर दास की पार्थिव देह पर पुष्प अर्पित किए गए।

कांग्रेस का चाल चरित्र अब बेनकाब हो गया

जनता कभी अवसर नहीं देगीः केंद्रीय मंत्री शेखावत बोले

जोधपुर, 1 दिसंबर (एजेंसियां)। केंद्रीय पर्यटन एवं संस्कृति मंत्री गजेंद्र सिंह शेखावत आज जोधपुर प्रवास पर रहे। इस दौरान उन्होंने मीडिया से बात की और मीडिया से बात करते हुए महाराष्ट्र चुनाव में सीएम के सवाल पर कहा कि मुझे लगता है कि हो सकता मीडिया को जनता, कार्यकर्ताओं और पार्टी वर्कर से ज्यादा जल्दी है जानने की। थोड़ा इंतजार करें इंतजार का फल मीठा होता है। वहीं धर्मांतरण के मामले में शेखावत ने कहा कि किसी का भी प्रलोभन के आधार पर जबरन धर्मांतरण ना हो सके। राजस्थान सरकार के इस फैसले पर हम सब लोग साथ में हैं।

वहीं कांग्रेस के ठीकरा फोड़ने पर उन्होंने कहा कि जो लोग जीते हैं, पहले वह लोग अपना स्पष्टीकरण दे। खिसियानी बिल्ली खंबा नोचने वाली स्थिति बनी हुई है। प्रधानमंत्री, गृहमंत्री और मैंने भी कहा था कि महाराष्ट्र के चुनाव परिणाम के बाद शाम तक EVM बदनाम हो जाएगी। वहीं प्रयागराज में कुंभ के सवाल पर उन्होंने कहा कि भारत के वर्ल्ड हेरिटेज व विश्व धरोहर सूची में शामिल है। हमारी कुंभ को लेकर यूपी सरकार के साथ कई बार बातचीत हुई है। इस तरह की अपेक्षा की है कि लगभग 45 करोड़ लोग 45 दिन में आएंगे।

हर आने वाले व्यक्ति के कम्युनिकेशन, कॉम्प्यूटेशन व सेनिटेशन और इसका एक्सपीरियंस इन चारों चीजों को लेकर भारत सरकार व उत्तर प्रदेश सरकार निरंतर कम कर रही है, इसके साथ-साथ मैं कुंभ में आने वाले श्रद्धालुओं का और भारत को एक साथ एक ही जगह पर देखने आने वाले पर्यटकों का स्वागत करूंगा। केंद्रीय संस्कृति एवं पर्यटन मंत्री ने कहा मैंने आपको पहले भी कहा था उपचुनाव से पहले हम एक से अनेक होने वाले हैं। हम प्रचंड बहुमत के साथ अधिकतम विधानसभा के चुनाव जीतेंगे। कांग्रेस को देश और प्रदेश की जनता ने पूरी तरह से नकार दिया है।

'नहीं सुने अधिकारी तो ठोक दो'

कांग्रेस विधायक अभिमन्यु पूनिया ने दिया विवादित बयान

बाड़मेर, 1 दिसंबर (एजेंसियां)। राजस्थान यूथ कांग्रेस के प्रदेश अध्यक्ष और विधायक अभिमन्यु पूनिया ने अधिकारियों को लेकर विवादित बयान दिया है। बाड़मेर के सीमावर्ती क्षेत्र सेड़वा उपखंड मुख्यालय पर यूथ कांग्रेस के विरोध-प्रदर्शन 'नशा नहीं नौकरी दो' कार्यक्रम में अधिकारियों को लेकर विवादित टिप्पणी की। उन्होंने कहा कि 'अधिकारी आपकी नहीं सुने तो ठोक दिया करो, बाकी हम देख लेंगे।' जिसके प्रदेश की सियासत गरम हो गई है।

बता दें कि कांग्रेस के बागी नरेश मीना ने उपचुनाव में मतदान के दौरान एसडीएम को थप्पड़ मार दिया था। जिसका नागौर सांसद हनुमान बेनीवाल ने समर्थन किया था।

विधायक की अधिकारियों पर विवादित टिप्पणी

बाड़मेर जिले के सांगरिया विधायक अभिमन्यु पूनिया ने यूथ कांग्रेस के विरोध प्रदर्शन 'नशा नहीं नौकरी दो' कार्यक्रम में अधिकारियों पर विवादित बयान देते हुए कहा कि अगर कांग्रेस के कार्यकर्ताओं के साथ कोई अधिकारी मनमानी करता हैं, ज़्यादा परेशान करें तो बाड़मेर, जैसलमेर, मारवाड़ के नौजवान मजबूत है।

अधिकारियों को ठोक लिया करो, बाद में हम निपट लेंगे। इस दौरान मंच पर बाड़मेर के सांसद उम्मेदाराम बेनीवाल सहित कांग्रेस के कई पूर्व विधायक मौजूद थे।

नरेश मीना ने एसटीएम को मारा था थप्पड़

राजस्थान उपचुनाव में टोंक जिले की देवली-उनियारा से कांग्रेस के बागी होकर निर्दलीय चुनाव लड़े नरेश मीना ने समरावता में मतदान के दौरान एसडीएम को थप्पड़ मार दिया था।

जिसके बाद देर रात पुलिस और उनके समर्थकों के बीच पथराव और आगजनी हुई। हालांकि अगले दिन पुलिस ने नरेश मीना को गिरफ्तार कर लिया था। फिलहाल नरेश मीना जेल में बंद है।

राजकुमार रोत बोले- मेवाड़ राज परिवार के सदस्यों ने किया भीलों का अपमान

उदयपुर, 1 दिसंबर (एजेंसियां)। पिछले दिनों उदयपुर राजपरिवार में हुए विवाद और विश्वराज सिंह मेवाड़ के राजतिलक को लेकर बाप सांसद राजकुमार रोत ने बड़ा बयान दिया। रोत ने कहा कि भीलों को दरकिनार कर किया गया कार्यक्रम महाराणा प्रताप और उनका साथ देने वाले भील शहीदों का अपमान है। राजकुमार रोत बांसवाड़ा क्षेत्र में सांसद बनने के बाद किसी धन्यवाद कार्यक्रम में गए थे। इस दौरान उन्होंने यह बात कही। सांसद रोत ने कहा कि मेवाड़ का जो घटनाक्रम हुआ। जिस तरह से विधायक पद पर रहते हुए राजतिलक किया गया वह गलत है। लोकतंत्र में यह नहीं होना चाहिए। फिर भी पंपपरा निभाई गई तो ठिक है, हम भी सम्मान करते हैं। इसके बाद राजपरिवार में जो विवाद पथराव हुआ वह पूरे मेवाड़ को शर्मसार करने वाला है। इन लोगों ने महाराणा प्रताप के साथ चले भील और पठान शहीदों को शर्मसार करने वाला काम किया है।

भीलों ने हमेशा मेवाड़ राजपरिवार का साथ दिया है। भीलों को पूर्व महाराणाओं ने राजपरिवार के बराबरी का दर्जा दिया है। राज परिवार के राज चिह्न में भी जितना राजपूतों को बराबरी दी गई उतनी भीलों को भी दी गई है। हल्दी घाटी को युद्ध उठाकर देख लो जितना खून बहा है तो भीलों को बहा है और विश्वराज के कार्यक्रम से भीलों को नजरअंदाज रखा गया। कहीं न कहीं वर्तमान में शहीद हुए भीलों और महाराणा प्रताप की भावनाओं के खिलाफ काम हो रहा है। मेवाड़ राजपरिवार में पिछले दिनों विवाद हुआ था। विश्वराज सिंह मेवाड़ के प्रतिकात्मक राजतिलक के बाद जब वे सिटी पैलेस और एकलिंगजी दर्शन के लिए गए तो उनके चचेरे भाई और अरविंद सिंह मेवाड के बेटे लक्ष्यराज सिंह ने सिटी पैलेस के दरवाजे बंद कर दिए थे।

इसका विश्वराज सिंह मेवाड़ और उनके समर्थकों ने जोरदार विरोध कर दिया था। मामले ने इतना तूल पकड़ लिया था कि उस दौरान उदयपुर की सारी व्यवस्थाएं चरमरा गई थी।

एबीवीपी नेता नरेंद्र प्रजापत मर्डर का मुख्य आरोपी गिरफ्तार

सदर पुलिस ने मुंबई से पकड़ा

चूरू, 1 दिसंबर (एजेंसियां)। एबीवीपी के पूर्व नगर मंत्री नरेन्द्र प्रजापत के मर्डर मामले में मुख्य आरोपी को पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया है। सदर पुलिस ने शातिर आरोपी बूंटिया निवासी अमित कस्वां उर्फ मितला को मुंबई से गिरफ्तार किया है। अमित उर्फ मितला पर एसपी की ओर से 15 हजार रुपये का इनाम भी घोषित किया गया है।

डीएसपी सुनील झाझड़िया ने बताया कि एक नवंबर की रात सदर थाना क्षेत्र के गांव डाबला के पास 28 वर्षीय एबीवीपी के पूर्व नगर मंत्री नरेन्द्र प्रजापत की पुरानी रंजिश को लेकर अमित कस्वां उर्फ मितला, शुभम ढाका व हितेश कुमावत ने लाठी व सरियों से पीटकर मर्डर कर दिया था। पुलिस ने मृतक के चाचा की रिपोर्ट पर मर्डर का मामला दर्ज किया था। डीएसपी झाझड़िया ने बताया कि साइबर सेल और मुखबिर की सूचना पर लगातार पुलिस शातिर अमित कस्वां उर्फ मितला के पीछे लगी थी। जो महाराष्ट्र की भिवण्डी में छुपा हुआ था। जिसको पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया है। पुलिस आरोपी से मामले में फरार चल रहे शुभम ढाका के बारे में पूछताछ करेगी।

गौरतलब है कि पुलिस ने मामले में हितेष कुमावत को पहले ही गिरफ्तार कर लिया है। कार्रवाई करने वाली टीम में सदर थानाधिकारी बलवंत सिंह, कांस्टेबल नवीन कुमार सांगवान, कांस्टेबल सरजीत सिंह शेखावत, एजीटीएफ टीम के हैड कांस्टेबल सज्जन कुमार व साइबर सैल के कांस्टेबल रमाकांत की अहम भूमिका रही।

नारकोटिक्स टीम ने कोटा में ड्रग तस्करों को पकड़ा, 911 किलो डोडा चूरा बरामद

चित्तौड़गढ़, 1 दिसंबर (एजेंसियां)। नारकोटिक्स जावरा की टीम के कोटा जिले में चित्तौड़गढ़-बारां हाईवे स्थित टोल नाके पर जान हथेली पर रख कर तस्करों के वाहन को रोका। यहां नाकाबंदी के दौरान भागने का प्रयास कर रहे तस्करों ने नारकोटिक्स के अलावा यात्री वाहन को भी टक्कर मार दी, जिससे हड़कंप की स्थिति हो गई। मौके से दो तस्करों को गिरफ्तार इनके वाहन को जब्त किया है। वाहन में नो क्विंटल से ज्यादा डोडा चूरा भरा हुआ था। इस संबंध में एनडीपीएस एक्ट के तहत प्रकरण दर्ज कर जांच की जा रही है। मौके पर तस्करों के वाहनों को टक्कर मारने के वीडियो भी सामने आए हैं।

जानकारी के अनुसार मादक द्रव्य विरोधी अभियान के क्रम में सेंट्रल ब्यूरो ऑफ नारकोटिक्स (सीबीएन), जावरा सेल के अधिकारियों को एक गुप्त सूचना मिली थी। इस सूचना पर नारकोटिक्स की टीम ने कोटा हैंगिंग ब्रिज के पास चित्तौड़गढ़-बारां राजमार्ग पर नयागांव टोल प्लाजा पर पिकअप को उसके सवारों के साथ रोका। नारकोटिक्स को सूचना थी कि राजस्थान पंजीकरण वाली पिकअप में दो व्यक्ति मनासा (मध्यप्रदेश) क्षेत्र से बीकानेर क्षेत्र में डोडा चूरा ले जा रहे हैं। इस पर सीबीएन जावरा सेल के अधिकारियों की एक टीम का गठन किया गया और रात में भेजा गया। टीम ने संदिग्ध मार्ग पर 36 घंटे से अधिक समय तक कड़ी निगरानी रखी गई।

नयागांव टोल प्लाजा, कोटा, राजस्थान में वाहन की पहचान की गई। तड़के वाहन की सफल पहचान होने पर सीबीएन अधिकारियों ने वाहन को रुकने का इशारा किया। लेकिन मादक पदार्थ तस्कर विभागीय वाहन से टकरा गए। फिर तस्करों ने भागने के लिए वे पलटे और उसके पीछे एक यात्री वाहन को टक्कर मार दी। इससे वह पूरी तरह क्षतिग्रस्त हो गया। आगे बढ़ते हुए फिर से ड्रग तस्कर सीबीएन वाहन से टकरा गए, जो उनका रास्ता रोक रहा था और उन्हें भागने से रोक रहा था।

मादक पदार्थ तस्करों ने मौके से भागने की भी कोशिश की लेकिन सीबीएन अधिकारियों ने उनकी कोशिश नाकाम कर दी। वाहन की गहन तलाशी ली तो इसमें 911.540 किलोग्राम वजन की 45 बोरी डोडा चूरा की बरामद हुई। नारकोटिक्स के पिकअप सहित बरामद डोडा चूरा को जब्त कर लिया गया है और दो आरोपियों एनडीपीएस एक्ट के तहत गिरफ्तार किया गया है।

भालू ने किया महिला पर हमला

उपचार के दौरान महिला की मौत

पाली, 1 दिसंबर (एजेंसियां)। पाली जिले के सिरियारी के निकट जूनी फुलाद निवासी संतोष (35) पत्नी रामसिंह रावत रविवार सुबह पर्वत सिंह की धुनी के निकट जंगल में बकरियों के लिए पेड़ की टहनियां लेने गई थी। टहनियां तोड़ते वक्त अचानक इस महिला पर जंगली भालू ने हमला कर दिया। भालू के अचानक हुए इस हमले से महिला घबरा गई और जब वह चिल्लाई तो उसकी आवाज सुनकर पास के खेत में काम कर रहे स्थानीय निवासी महिला की मदद के लिए पहुंचे, लेकिन तब तक भालू वहां से भाग चुका था। हमले के दौरान जंगली भालू ने महिला का चेहरा बुरी तरह नोच लिया, जिसके चलते उसे गंभीर स्थिति में पाली के बांगड़ अस्पताल लाया गया। बांगड़ अस्पताल में उपचार के दौरान महिला की मौत हो गई। महिला के चिल्लाने की आवाज सुनकर आस-पास के खेत में काम कर रहे ग्रामीण मौके पर पहुंचे। घटना के वक्त मृतका का 8 वर्षीय पुत्र भी कुछ ही दूरी पर मौजूद था जो भालू की आवाज सुनकर वहां से भाग गया जिससे उसकी जान बच गई।

50 किलो सोना, 5 करोड़ कैश, ट्रांसपोर्ट कारोबारी के ठिकानों पर आईटी रेड में मिला और भी बहुत कुछ

उदयपुर, 1 दिसंबर (एजेंसियां)। आयकर विभाग की टीमों की ओर से उदयपुर के एक ट्रांसपोर्ट व्यवसायी के प्रतिष्ठानों और घरों पर कार्रवाई की जा रही है। टीमों ने तीसरे दिन विभिन्न बैंक के लॉकर की जांच की तो इनमें 28 किलो सोना मिला। इसके साथ ही दो करोड़ रुपए नकद भी बरामद किए गए। अब तक की कार्रवाई में 50 किलो सोना, 5 करोड़ से अधिक की नकदी और 100 करोड़ से अधिक आय के दस्तावेज मिले हैं। हालांकि इस संबंध में विभाग की ओर से आंकड़े जारी नहीं किए गए हैं।

आयकर विभाग की टीमों ने ट्रांसपोर्ट कंपनी के मालिक व परिवार के बैंक लॉकर खुलवाए। इनमें करीब 28 किलो सोना निकला। यह कार्रवाई आयकर विभाग के अन्वेषण शाखा के संयुक्त निदेशक जेएस राव के नेतृत्व में चल रही है। आयकर टीम द्वारा तीन दिन से लगातार कार्रवाई जारी है।

जिन ठिकानों पर ताले, वो जगह सील

इससे पहले आयकर विभाग की टीमों को शुक्रवार शाम तक 22 किलो सोना और 3 करोड़ की नकदी मिली थी। साथ ही 100 करोड़ से ज्यादा की आय के दस्तावेज भी मिले थे। कार्रवाई के दौरान कुछ स्थानों पर कारोबारी और उससे जुड़े अन्य व्यवसाइयों के ठिकानों पर ताले लगे मिले थे। उन स्थानों पर सील चस्पा की गई है।

अवैध संपत्ति का आंकड़ा और बढ़ने की संभावना

बता दें कि आयकर विभाग की विभिन्न टीमों ने ट्रांसपोर्ट व्यवसायी और उससे जुड़े अन्य लोगों पर गुरुवार तड़के कार्रवाई शुरू की थी। इसके तहत उदयपुर, जयपुर, बांसवाड़ा, गुजरात और मुंबई स्थित कार्यालयों, घरों सहित अन्य 20 से अधिक ठिकानों पर छापा मारा था। ऐसे में पिछले तीन से जारी कार्रवाई आज भी जारी रहेगी। टीम आज भी कई लॉकर खंगालेगी। ऐसे में माना जा रहा है कि अभी अवैध संपत्ति का आंकड़ा और बढ़ने की संभावना है।

राजस्थानी युवक को विदेशी मैम से हुआ प्यार

सरहद पार से लाकर गांव में रचाई शादी

नागौर, 1 दिसंबर (एजेंसियां)। कहते हैं कि प्यार सरहद की बेड़ियों को तोड़ देता है। कुछ ऐसी ही लव स्टोरी राजस्थान के डीडवाना जिले में सामने आई है। यहां सात समंदर पार से आई एक विदेशी युवती ने डीडवाना के मंडूकरा में हिंदू रीति रिवाज से अपने प्रेमी संग शादी रचाई है। यह शादी इन दिनों जिलेभर में चर्चा का विषय बनी हुई है। दोनों को अमेरिका के कैलिफोर्निया में प्यार हुआ और फिर दोनों ने शादी रचा ली है। इस शादी से दोनों के परिवार वाले भी काफी खुश हैं। दरअसल, डीडवाना जिले के मंडूकरा गांव का रहने वाले मुकेश गोदारा साल 2017 से अमेरिका की एक निजी कंपनी में इंजीनियर के रूप में काम कर रहे हैं। इस दौरान उनकी मुलाकात साल 2021 में कैलिफोर्निया की रहने वाली मैरियन गुईडरा से हुई, जो सरकारी टीचर भी है। धीरे—धीरे दोनों की ये मुलाकात प्यार में बदल गई और दोनों ने शादी का फैसला लिया।

इसके बाद मुकेश गोदारा ने इस बारे में अपने परिजनों को बताया। परिजन भी इस रिश्ते को तैयार हो गए। वहीं, लड़की के घरवालों ने भी इस रिश्ते के लिए हामी भर दी। करीब 6 महीने पहले ही मुकेश ने अमेरिका जाकर मैरियन व उनके परिजनों से मुलाकात की। इसके बाद अमेरिका में ही दोनों की सगाई हुई।

लंबित सिंचाई परियोजनाएं की जाएंगी पूरी : उत्तम

पेद्दापल्ली, 1 दिसंबर (स्वतंत्र वार्ता)। सिंचाई मंत्री एन उत्तम कुमार रेड्डी ने कहा कि पूर्ववर्ती करीमनगर जिले में सभी लंबित सिंचाई परियोजनाओं को युद्धस्तर पर पूरा करके प्रत्येक एकड़ तक सिंचाई के लिए पानी पहुंचाया जाएगा।

उत्तम कुमार रेड्डी ने अन्य मंत्रियों डी श्रीधर बाबू और पोन्नम प्रभाकर के साथ रविवार को यहां कलेक्टर कार्यालय में पुराने करीमनगर जिले में लंबित सिंचाई परियोजनाओं के निर्माण, धान खरीद और कस्टम मिलिंग के बारे में चर्चा करने के लिए कलेक्टरों और संबंधित विभागों के अधिकारियों के साथ समीक्षा बैठक की।

धान क्रय केंद्रों के माध्यम से बढ़िया किस्म का धान खरीदने के निर्देश देते हुए मंत्री ने अधिकारियों से कहा कि वे सुनिश्चित करें कि निजी व्यापारी 2800 रुपये से कम कीमत पर बढ़िया किस्म का धान न खरीदें। अगले साल से उचित मूल्य की दुकानों के माध्यम से बढ़िया किस्म का चावल उपलब्ध कराने की जानकारी देते हुए उन्होंने कहा कि इसके लिए 36 लाख मीट्रिक टन धान की खरीद की आवश्यकता है।

उज्जैन में चलती कार में नाबालिग लड़की से गैंगरेप

मेडिकल कॉलेज के बाहर छोड़कर भागे, दो आरोपी गिरफ्तार, एक फरार

उज्जैन, 1 दिसंबर (एजेंसियां)। उज्जैन में 16 साल की लड़की से चलती कार में गैंगरेप किया गया। घटना शुक्रवार शाम को चिमनगंज थाना क्षेत्र की है। जानकारी के मुताबिक, तीन युवक नाबालिग लड़की को बहला-फुसलाकर कार में ले गए थे। इनमें से एक ने चलती कार में दुष्कर्म किया। फिर मेडिकल कॉलेज के सामने छोड़कर भाग निकले।

चिमनगंज मंडी थाना क्षेत्र में रहने वाली नाबालिग ने बताया कि

अहमद नगर कॉलोनी निवासी साहिल बहला-फुसलाकर अपने साथ कार में आरडी गार्डी मेडिकल कॉलेज की ओर लेकर गया। कार में दो युवक और बैठ गए। इसके बाद साहिल ने मुंह दबाकर चलती कार में रेप किया।

पुलिस के मुताबिक, पीड़ित की दोस्ती मुख्य आरोपी से 4 महीने पहले घर के पास एक शादी में हुई थी। मुख्य आरोपी भी लड़की के ही एरिया में एक गली छोड़कर रहता है।

पहले अपहरण, फिर रेप का केस दर्ज :

पीड़ित नाबालिग शुक्रवार सुबह 11 बजे लापता हुई थी। परिजन ने दोपहर 3.30 बजे पुलिस में इसकी शिकायत की। चिमनगंज मंडी थाना पुलिस ने बताया कि नाबालिग की गुमशुदगी थाने में दर्ज थी। शुक्रवार शाम को लड़की के मिलने पर थाने लाकर जब पूछताछ की तो उसने अपने साथ हुई घटना के बारे में बताया। मामले में लड़की को अपने साथ कार में ले जाने वाले साहिल और उसके दो साथियों के खिलाफ शनिवार रात को केस दर्ज किया है।

एसपी प्रदीप शर्मा का कहना है कि लड़की का मेडिकल कराया गया है, रिपोर्ट आना बाकी है। हालांकि, वन स्टॉप सेंटर में लड़की ने बयान में कहा है कि उसके साथ एक ही आरोपी ने रेप किया है। साहिल समेत दो आरोपियों को पुलिस ने गिरफ्तार किया है, एक की तलाश की जा रही है। नाबालिग को बहला-फुसलाकर कार में बैठाया गया। इस बारे में अभी पूरी बात सामने नहीं आई है, जांच की जा रही है।

भाई बोला- दोस्तों के साथ घूमने का कहकर गई थी :

पीड़ित के भाई का कहना है, बहन दोस्तों के साथ घूमने का कहकर घर गई थी, इसके बाद लापता हो गई। उसने घटना के बारे में बताया कि दो लड़कियां भी उसके साथ थीं। दोनों रास्ते में उतर गईं। तीन लड़कों का नाम आ रहा है, दो और लड़के भी शामिल हैं। पीड़ित के मामा के मुताबिक, बच्ची स्कूल जाती है, 8वीं या 9वीं क्लास में है।

निकेश कुमार को न्यायिक हिरासत में भेजा गया

हैदराबाद, 1 दिसंबर (स्वतंत्र वार्ता)। गंडीपेट मंडल के पीरनचेरुवु में सिंचाई विभाग के सहायक कार्यकारी अभियंता निकेश कुमार के घर पर एसीबी की छापेमारी समाप्त हो गई है। उन्हें अधिकारियों ने हिरासत में लिया और 100 करोड़ रुपये से अधिक की संपत्ति रखने के लिए आय से अधिक संपत्ति (डीए) मामले में फिर से गिरफ्तार कर लिया। उन्हें नामपल्ली स्थित एसीबी कार्यालय में स्थानांतरित कर दिया गया। उन्हें सुबह 6 बजे न्यायाधीश के आवास पर पेश किया गया। न्यायाधीश ने कुमार को 14 दिन की न्यायिक हिरासत में भेज दिया। बाद में एसीबी अधिकारियों ने उन्हें चंचलगुडा जेल में स्थानांतरित कर दिया। उनके पास मोइनाबाद में 6.5 एकड़ कृषि भूमि, शमशाबाद और मियापुर क्षेत्रों में तीन फार्महाउस और दो वाणिज्यिक परिसर पाए गए। उनके पास उनके रिश्तेदारों के नाम पर भी बड़ी संपत्ति पाई गई। एसीबी के अधिकारी शनिवार सुबह निकेश कुमार के घर पहुंचे। एसीबी अधिकारियों ने मोइनाबाद मंडल के थोलकट्टा, सज्जनपल्ली और नक्कलपल्ली फार्महाउसों में कुमार के रिश्तेदारों के 19 ठिकानों पर तलाशी ली और अघोषित संपत्ति जब्त की। उनकी संपत्ति की कीमत 17,73,53,500 रुपये पाई गई। अनुमान है कि खुले बाजार में उक्त संपत्ति की कीमत करीब 100 करोड़ रुपये है। एसीबी अधिकारियों ने खुलासा किया कि निकेश कुमार को शनिवार रात को गिरफ्तार किया गया। छह महीने पहले एक व्यक्ति से रिश्वत की रकम लेते समय एसीबी के अधिकारियों ने उसे रंगे हाथों गिरफ्तार किया था।

महबूबाबाद में दिखी दुनिया की सबसे छोटी जंगली बिल्ली

संगारेड्डी, 1 दिसंबर (स्वतंत्र वार्ता)। दुनिया की सबसे छोटी जंगली बिल्ली मानी जाने वाली रस्टी स्पॉटेड बिल्ली शनिवार की सुबह महबूबाबाद जिले में देखी गई। अंतर्राष्ट्रीय प्रकृति संरक्षण संघ (आईयूसीएन) द्वारा खतरे की श्रेणी में रखी गई यह बिल्ली तेलंगाना में बहुत कम देखी जाती है। नरसिंहुलपेट मंडल के कौसल्यादेवीपल्ली में किसानों ने इस बिल्ली को देखा, जिसका आकार केवल काले पैरों वाली बिल्ली से ही मुकाबला करता है। ग्रामीणों की सूचना के बाद मौके पर पहुंचे वन अधिकारियों ने

इसे बचाया।

जिला वन अधिकारी विशाल ने बताया कि उन्होंने बिल्ली की चिकित्सीय जांच के बाद उसे आरक्षित वन क्षेत्र में छोड़ दिया, क्योंकि जांच में पता चला कि वह स्वस्थ है और उसमें कोई चोट नहीं है। विशाल ने कहा कि वे इस क्षेत्र में दुर्लभ बिल्ली को देखकर बहुत खुश हैं। यह बिल्ली केवल भारत, श्रीलंका और नेपाल में ही देखी जाती है, जबकि काले पैरों वाली बिल्ली, जिसे एक संवेदनशील प्रजाति के रूप में वर्गीकृत किया गया है, ज़्यादातर अफ्रीका में देखी जाती है।

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के युग में जनसंपर्क की महत्वपूर्ण भूमिका

हैदराबाद, 1 दिसबर (स्वतंत्र वार्ता)। हैदराबाद में डॉ. बीआर अंबेडकर कॉलेज, बाग लिंगमपल्ली के सहयोग से पब्लिक रिलेशंस सोसाइटी ऑफ इंडिया हैदराबाद चैप्टर द्वारा आयोजित एक विशेष बूट कैंप (दिन भर) को संबोधित करते हुए, मीडिया शिक्षाविदों और पीआर पेशेवरों ने कहा कि प्रौद्योगिकी ने संचार प्रवाह और सूचना के उपभोग के तरीके को बाधित कर दिया है। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि, महिंद्रा विश्वविद्यालय के डीन (स्कूल ऑफ मीडिया) प्रो. शशि नंजुंदिया ने कहा, सामाजिक अनुबंध विफल हो रहे हैं और प्रौद्योगिकियां आपके मूल्यों को परिभाषित कर रही हैं। इसलिए पीआर समय की मांग है। उन्होंने कहा कि सच्चाई और नैतिकता की पहले से कहीं अधिक आवश्यकता है। उन्होंने सुनने की आवश्यकता पर जोर दिया। वोक्सन विश्वविद्यालय के डीन (स्कूल ऑफ लॉ) प्रोफेसर जोश डेलरिम्पल ने छात्रों से अपने फायदे के लिए नेटवर्किंग पर ध्यान केंद्रित करने का आग्रह किया। एक छिपा हुआ जॉब मार्केट है। यदि आप अवसरों को प्राप्त करना चाहते हैं, तो आपको पेशेवर नेटवर्किंग में अच्छा होना चाहिए। अमेरिकी प्रोफेसर ने छात्रों से साथियों, नियोक्ताओं और पेशेवरों से जुड़ने के लिए सोशल मीडिया का लाभ उठाने का जोरदार आग्रह किया।

एनएमडीसी के कॉरपोरेट कम्युनिकेशन हेड जय प्रकाश ने एआई युग में जिम्मेदार संचार की आवश्यकता महसूस की। ऑल इंडिया रेडियो के कार्यक्रम प्रमुख एस.रमेश ने कहा कि सूचना की सुनामी के साथ शुद्ध सचार एक दुर्लभ वस्तु बन गया है। एआई और पीआर पर एक पैनल चर्चा में भाग लेते हुए, विशेषज्ञों, प्रो. किंग्स्टन जे, अनिंदिता मुखर्जी सिन्हा, मुक्ता कुमार और मृणाल के रे ने छात्रों को एआई को चुनौती के बजाय अवसर के रूप में देखने का सुझाव दिया। पैनल के मॉडरेटर, पीआरएसआई के राष्ट्रीय कानूनी सलाहकार, वाई.बाबजी ने कहा कि बूट कैंप ने छात्रों को एक दिशा दी। बूट कैंप के आर्किटेक्ट कृष्णा बाजी और राजेश्वरी अय्यर ने कहा कि हैदराबाद में पत्रकारिता और पीआर छात्रों के लाभ के लिए पहली बार बूट कैंप का आयोजन किया गया। यह कार्यक्रम डॉ.एम. शेखर, प्रिंसिपल और डॉ.जी. कृष्ण कुमार, एचओडी, पत्रकारिता विभाग, डॉ.बी.आर. अंबेडकर कॉलेज, बाग लिंगमपल्ली, हैदराबाद के सहयोग और कुशल मार्गदर्शन में आयोजित किया गया। प्रख्यात वक्ताओं- स्वाति राठौर (विषय: पत्रकारिता और कॉर्पोरेट संचार), ब्रांडिंग (फेनेला वाटर्स), रंगनाथ थोटा और ऐश्वर्या अय्यर (पीआर का विकसित परिदृश्य), रणदीप अरोड़ा (वॉयस आर्टिस्ट्री) ने प्रतिभागियों के साथ अपने ज्ञान को साझा किया। पीआरएसआई हैदराबाद के अध्यक्ष डॉ.एस. रामू और सचिव डॉ.के. यदागिरी ने भी बात की। पीआरएसआई की संयुक्त सचिव अपर्णा राजहंस ने दिन भर चले कार्यक्रम की अध्यक्षता की।

स्थानीय लोगों के लिए श्रीवारी दर्शन 3 दिसंबर को

तिरुमला, 1 दिसंबर (स्वतंत्र वार्ता)। स्थानीय लोगों को 3 दिसंबर को तिरुमला में श्रीवारी दर्शन प्रदान किए जाएंगे। टीटीडी द्वारा खराब मौसम के कारण पहले की घोषणा के अनुसार 1 दिसंबर के बजाय 2 दिसंबर को तिरुपति के महाथी ऑडिटोरियम और तिरुमला के सामुदायिक हॉल में सुबह 5 बजे टोकन जारी किए जाएंगे। टीटीडी बोर्ड ऑफ ट्रस्टीज ने 18 नवंबर को आयोजित अपनी पहली बैठक में हर महीने के पहले मंगलवार को स्थानीय लोगों को श्रीवारी दर्शन प्रदान करने का निर्णय लिया। इसके लिए, टीटीडी 3 दिसंबर (पहले मंगलवार) को स्थानीय लोगों को दर्शन प्रदान करने की व्यवस्था कर रहा है। तिरुपति शहरी, तिरुपति ग्रामीण, चंद्रगिरी, रेनिगुंटा मंडलों के साथ-साथ तिरुमाला के स्थानीय निवासियों से अनुरोध है कि वे तिथि में परिवर्तन को ध्यान में रखें और तिरुपति और तिरुमाला में उपरोक्त केंद्रों में अपना मूल आधार कार्ड दिखाकर टोकन प्राप्त करें।

टॉलीवुड हीरो श्रीकांत ने वेमुलावाड़ा मंदिर का किया दौरा

राजन्ना-सिरसिला, 1 दिसंबर (स्वतंत्र वार्ता)। टॉलीवुड के हीरो श्रीकांत ने रविवार को वेमुलावाड़ा स्थित श्री राजराजेश्वर स्वामी मंदिर में दर्शन किए। मंदिर में भगवान के दर्शन के अलावा हीरो ने विशेष पूजा भी की। मंदिर के पुजारियों ने श्रीकांत को आशीर्वाद दिया और प्रसाद भी दिया। श्रीकांत ने बताया कि कार्तिक मास के व्रत और विशेष पूजा संपन्न करने के बाद उन्हें भगवान शिव के दर्शन हुए। उन्होंने बताया कि वे पहली बार मंदिर आए हैं और राजराजेश्वर स्वामी के दर्शन पाकर उन्हें बहुत खुशी हुई।

अपनी आगामी फिल्मों के बारे में बात करते हुए उन्होंने बताया कि ग्लोबल स्टार रामचरण की फिल्म गेम चेंजर में उन्होंने अहम भूमिका निभाई है, जो 10 जनवरी को संक्रांति के अवसर पर रिलीज होने जा रही है। वह कल्याण राम, साई दुर्गा तेजा और अन्य अभिनीत कुछ अन्य फिल्मों में भी अभिनय कर रहे थे। वह एक फिल्म में सोलो हीरो के तौर पर भी काम कर रहे थे। उनके बेटे रोशन चैंपियन नामक एक फिल्म में हीरो के तौर पर काम कर रहे थे, जिसका निर्माण स्वप्ना दत्त कर रही हैं। बाद में श्रीकांत को कोंडागट्टू अंजनेय स्वामी के भी दर्शन हुए।

'बैगलेस डे' पर छात्रों का शानदार रचनात्मक प्रदर्शन

पीएम श्री केवी पिकेट के छात्रों ने पतंग, खिलौने, राखी बनाई

हैदराबाद, 1 दिसंबर (स्वतंत्र वार्ता)। रचनात्मकता और व्यावहारिक कौशल को बढ़ावा देने के लिए, पीएम श्री केवी पिकेट में कक्षा 6 से 8 के छात्रों के लिए शनिवार को बैगलेस डे का आयोजन किया गया। केवी पिकेट के प्रिंसिपल रूपिंदर सिंह की इस पहल ने छात्रों को पारंपरिक कक्षा की दिनचर्या से हटकर कागज का उपयोग करके व्यावहारिक गतिविधियों में शामिल होने के लिए प्रोत्साहित किया। इस कार्यक्रम का उद्देश्य रचनात्मकता को बढ़ावा देना, टीम वर्क को बढ़ावा देना और स्थायी प्रथाओं के महत्व पर जोर देना था। दिन की शुरूआत बैगलेस डे के उद्देश्यों पर प्रकाश डालने वाले एक संक्षिप्त सत्र से हुई। फिर छात्रों को समूहों में विभाजित किया गया और पतंग, खिलौने, राखी, टोपी पेंटिंग और सजावटी लैंप सहित विभिन्न कागज के शिल्प बनाने के लिए निर्देशित किया गया। अपने शिक्षकों की देखरेख में, छात्रों ने अपार उत्साह और रचनात्मकता का प्रदर्शन किया। इस दौरान छात्रों ने जीवंत पतंगों को डिजाइन करने

के लिए रंगीन कागज, बांस की छड़ियों और डोरियों का इस्तेमाल किया। कागज की नावों से लेकर ओरिगेमी जानवरों तक, छात्रों ने अपनी कल्पना को जीवंत किया, सिर्फ़ कागज से मजेदार खिलौने बनाए। राखी के महत्व पर चर्चा की गई और छात्रों ने भाई-बहन के बंधन के सार को व्यक्त करते हुए जटिल डिजाइन वाली सुंदर राखियां बनाईं। छात्रों ने सजावटी पेपर लैंप बनाने के लिए ओरिगेमी तकनीक का इस्तेमाल किया, जिसने टिकाऊ उत्सवों के महत्व पर प्रकाश डाला और छात्रों ने रचनात्मक कलाकृति बनाने के लिए रंगों, रेखाचित्रों का इस्तेमाल किया। शिक्षक और प्रशिक्षक छात्रों की रचनात्मकता और टीम वर्क से प्रभावित हुए। इस गतिविधि ने न केवल छात्रों को अपनी कलात्मक प्रतिभाओं को तलाशने का मौका दिया, बल्कि पुनर्चक्रणीय सामग्रियों के उपयोग पर जोर देकर स्थिरता के मूल्यों को भी स्थापित किया। दिन का समापन कृतियों की एक छोटी प्रदर्शनी के साथ हुआ, जहां छात्रों ने गर्व से अपने शिल्प प्रदर्शित किए। इस पहल को छात्रों और अभिभावकों दोनों से सकारात्मक प्रतिक्रिया मिली, जिससे भविष्य में इस तरह के और अधिक अनुभवात्मक शिक्षण दिवसों की आवश्यकता पर प्रकाश डाला गया। कार्यक्रम का समन्वय वर्जीनिया सुंदर राज, टीजीटी अंग्रेजी द्वारा किया गया।

सभी जिलों के दिव्यांग कर्मचारियों की बैठक हुई

हैदराबाद, 1 दिसंबर (स्वतंत्र वार्ता)। तेलंगाना राज्य सरकार विकलांग निगम के अध्यक्ष वीरैया मुथिनेनी का गांधी भवन प्रकाशम हॉल में अभिनंदन किया गया। आज गांधी भवन के प्रकाशम हॉल में प्रदेश भर के सभी जिलों के दिव्यांग कर्मचारियों की बैठक हुई। इस बैठक में लगभग 1200 दिव्यांग कर्मचारी शामिल हुए। इस अवसर पर वीरैया ने कहा कि पिछली केसीआर सरकार विकलांग कर्मचारियों के प्रति क्रूर थी और उन्हें याचिका तक देने का मौका नहीं देती थी। उन्होंने कर्मचारियों की पदोन्नति को 37 से बढ़ाकर 47 न करके अन्याय किया। उन्होंने कहा कि इसे सभी लाभों पर लागू किया जाना चाहिए, लेकिन पिछली सरकार ने कर्मचारियों द्वारा अदालतों में मामले दायर करके इसे मुश्किल बना दिया। लेकिन इसे मुख्यमंत्री के ध्यान में लाते हुए रेवंत रेड्डी और मंत्री सीताक्का ने कहा कि विकलांग व्यक्तियों के अधिकार अधिनियम 2016 के अनुसार, विकलांग कर्मचारियों के लिए पदोन्नति आरक्षण 37 से बढ़ाकर 47 कर दिया जाएगा। विश्व दिव्यांगजन दिवस पर दिव्यांग कर्मचारियों के लिए ऑन ड्यूटी सुविधा, एसोसिएशन की मान्यता, दिव्यांग कर्मचारियों की उच्च शिक्षा के लिए एससी, एसटी की तरह पूरे वेतन के साथ ऑन ड्यूटी सुविधा, दिव्यांगों को आवंटित रोस्टर प्वाइंट में आगे बढ़ाया जाए। कार्यक्रम में विकलांग कल्याण विभाग के निदेशक शैलजा, दिव्यांग कर्मचारी संघ के अध्यक्ष हबीब मिया, महासचिव चिरबोइना लक्ष्मैया, कोषाध्यक्ष वेंकट नरसैया, मानद् अध्यक्ष नुक्का नरसैया, बोलम महेंद्र, बिल्ला महेंद्र, मुन्ना नरसम्मा, बंदी नागेश्वर राव और 33 जिलों के अध्यक्ष और उनकी संबंधित समितियां उपस्थित थीं।

जियागुडा स्थित श्री समर्थ कामधेनु गोशाला में अमावस्या पर गौसेवा करते प्रभु दत्त महाराज, हरि किशन मायच्छ, सुरेश कोलारिया, जयकिशन उपाध्याय, पवन व्यास, पंकज वर्मा, शरद वर्मा, मनोज सोनी, महेश जवड़ा, नथमल सोनी, महावीर कड़ेल, प्रहलाद, प्रवीण नारनोली, गोपाल रोड़ा, संतोष शर्मा, लक्ष्य वर्मा, शुभम झींगा, सुरेश परवाल, श्रीनिवास परवाल एवं अन्य।

विश्व मंगल गौशाला में अमावस्या पर पधारे भक्तों ने अपनी सेवाएं कर गोदान किया। अवसर पर विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन किया गया, जिसमें गौ भक्तों ने अपनी सहभागिता निभाई।

अखिल भारतीय लॉन टेनिस प्रतियोगिता में आईजीपी एस. चंद्रशेखर रेड्डी की टीम को स्वर्ण पदक

हैदराबाद, 1 दिसंबर (स्वतंत्र वार्ता)। मल्टी जोन-I आईजीपी एस. चंद्रशेखर रेड्डी आईपीएस की टीम ने पुलिस विभाग और अर्धसैनिक बलों के लिए सीआईएसएफ द्वारा आयोजित अखिल भारतीय लॉन टेनिस प्रतियोगिता में स्वर्ण पदक जीता। यह प्रतियोगिता 26 से 30 नवंबर तक बैंगलोर के केएसएलटीए स्टेडियम में आयोजित की गई थी। इसी क्रम में, फाइनल मैच में आईजीपी एस. चंद्रशेखर रेड्डी, एडिशनल एसपी एमडी. रियाज (नारायणपेट एआर) की टीम ने आंध्र प्रदेश राज्य के डीएसपी राम कुमार और सत्यनारायण की टीम के खिलाफ 9-6 के स्कोर से जीत हासिल की। यह जीत 50 से अधिक आयु वर्ग में हासिल की गई।

नशे में वाहन चलाने के खिलाफ सघन अभियान

हैदराबाद, 1 दिसंबर (स्वतंत्र वार्ता)। इस सप्ताहांत नशे में वाहन चलाने के खिलाफ एक सशक्त अभियान चलाया गया, जिसके तहत साइबराबाद ट्रैफिक पुलिस (सीटीपी) ने 172 अपराधियों को पकड़ा। अभियान के दौरान कुल 123 दोपहिया वाहन, 11 तिपहिया वाहन, 37 चार पहिया वाहन और एक ट्रक ज़ब्त किया गया। अठारह अपराधियों को 200 मिलीग्राम/100 मिली से लेकर 550 मिलीग्राम/100 मिली के बीच रक्त अल्कोहल सांद्रता (बीएसी) के साथ पकड़ा गया। पकड़े गए सभी लोगों को अदालत में पेश किया जाएगा।

बाबा गंगाराम सेवा समिति द्वारा कंबल वितरण

हैदराबाद, 1 दिसंबर (स्वतंत्र वार्ता)। स्वर्ण जयंती वर्ष के चलते आज बाबा गंगाराम सेवा समिति, हैदराबाद द्वारा गगन पहाड़ी स्थित सत्यम शिवम सुन्दरम गौशाला में गौ सेवा की गई। इसमे गायों को चारा, केले, तथा गुड़ खिलाया गया।

जरूरतमंदों में कंबल तथा अन्य खाद्य सामग्री का भी वितरण किया। इस अवसर पर समिति द्वारा नव वर्ष 2025 के कैलेंडर का भी विमोचन किया गया।

वर्ष 2025 में झुंझुनूं में बाबा गंगाराम धाम, श्री पंचदेव मंदिर को 50 वर्ष पूरे होने जा रहे हैं जिस के चलते देशभर में भक्तों द्वारा इस वर्ष को स्वर्ण जयंती वर्ष के रूप में मनाया जा रहा है तथा विभिन्न प्रकार के सामाजिक एवं सेवा कार्य भक्तों द्वारा आयोजित किये जा रहे हैं।

आज के आयोजन में समिति के अध्यक्ष अशोक केजरीवाल के साथ विष्णु सराफ, पवन डिडवानिया, ओम प्रकाश अग्रवाल, अश्विनी कुमार मोदी, अनमोल गोयल, नीरज अग्रवाल, वरुण सराफ, विशाल सराफ, निखिल सराफ, विशाल डिडवानिया, अमित मोदी आदि उपस्थित रहे।

इटेला ने पुलिसकर्मी किष्टया की प्रतिमा स्थापित करने की मांग की

हैदराबाद, 1 दिसंबर (स्वतंत्र वार्ता)। मलकाजगिरी के सांसद इटेला राजेंद्र ने आज मांग की कि राज्य सरकार पुलिसकर्मी किष्टया की प्रतिमा स्थापित करे, जो तेलंगाना आंदोलन के अंतिम चरण में हैदराबाद के टैंक बंड पर शहीद हुए थे। किष्टया की 15वीं पुण्यतिथि के अवसर पर राजेंद्र ने तेलंगाना राज्य विधान परिषद के उपाध्यक्ष बंदा प्रकाश और एमएलसी प्रो. कोदंडाराम के साथ शहर के गन पार्क में शहीद स्मारक पर किष्टया को श्रद्धांजलि दी। इस अवसर पर बोलते हुए, इटेला राजेंद्र ने कहा कि किष्टया ने तेलंगाना राज्य की मुक्ति के लिए अपने प्राणों की आहुति दी। शहीदों के बलिदान को याद करने का मतलब है उनकी आकांक्षाओं को जारी रखना। सरकारों को उनकी आकांक्षाओं को प्राप्त करने की दिशा में काम करना चाहिए, उन्होंने सरकार से शहीदों के परिवारों की देखभाल करने और उनके परिवारों के लिए नौकरी देने और घर बनाने का आग्रह करते हुए कहा। उन्होंने सरकार से शहीदों के परिवार के सदस्यों को मासिक पेंशन प्रदान करने की अपील की। उन्होंने सरकार से यह याद रखने का आग्रह किया कि तेलंगाना राज्य का गठन उनके बलिदानों के आधार पर हुआ था। उन्होंने मांग की कि पुलिस की एक प्रतिमा स्थापित की जानी चाहिए और उनकी जयंती और पुण्यतिथि समारोह भव्य तरीके से आयोजित किए जाने चाहिए। एमएलसी कोडंडाराम ने कहा कि किश्तैया अलग राज्य के लिए शहीद हुए। उन्होंने कहा 1 दिसंबर 2009 को, उन्होंने कामारेड्डी शहर के बीचों-बीच अपनी सर्विस गन से खुद को गोली मार ली और तेलंगाना के लिए अपना जीवन बलिदान कर दिया।

आरटीसी इलेक्ट्रिक बसों में मेट्रो स्टाइल की सीटें

हैदराबाद, 1 दिसंबर (स्वतंत्र वार्ता)। मेट्रो ट्रेन की तरह अब सिटी बसों में यात्रा कर सकते हैं। अधिक यात्रियों को सुविधा प्रदान करने तथा निगम के राजस्व को बनाए रखने के लिए, तेलंगाना राज्य सड़क परिवहन निगम (टीजीएसआरटीसी) अब शहर की सीमा में चल रही कुछ नई गैर-वातानुकूलित इलेक्ट्रिक बसों की बैठने की व्यवस्था में मेट्रो ट्रेनों के समान बदलाव कर रहा है। जब से राज्य सरकार ने महिलाओं के लिए 'महालक्ष्मी' नि:शुल्क यात्रा सुविधा शुरू की है, तब से महिला यात्रियों की ओर से इसे बहुत ज़्यादा पसंद किया जा रहा है, जिसके कारण पूरे राज्य में बसें पूरी तरह से भरी हुई चल रही हैं। इसके परिणामस्वरूप बसों में ज़्यादा से ज़्यादा यात्रियों को बैठाने के लिए ज़्यादा जगह और सीटों की ज़रूरत पड़ रही है।

स्वतंत्र वार्ता
Email :
svaarttha2006@gmail.com
svaarttha@rediffmail.com
svaarttha2006@yahoo.com
Epaper :
epaper.swatantravaartha.com
For Advertisement :
swadds1@gmail.com

जय शाह ने आईसीसी चेयरमैन का पद संभाला

36 साल के शाह सबसे युवा चीफ

कहा- महिला क्रिकेट को बढ़ावा देने के लिए काम करेंगे

नई दिल्ली, 1 दिसंबर (एजेंसियां)। भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड के सचिव जय शाह ने इंटरनेशनल क्रिकेट काउंसिल यानी आईसीसी का चेयरमैन पद संभाल लिया है। न्यूजीलैंड के ग्रेग बार्कले की जगह लेने वाले 36 साल के जय शाह आईसीसी के सबसे कम उम्र के चेयरमैन बन गए हैं।

आईसीसी ने सोशल मीडिया पोस्ट में इस बात की जानकारी दी। संस्था ने रविवार को लिखा- आईसीसी चेयरमैन के तौर पर जय शाह का कार्यकाल शुरू होने के साथ ग्लोबल क्रिकेट का नया चैप्टर शुरू हुआ है। पद संभालने के बाद शाह ने अपने पहले बयान में कहा कि क्रिकेट के अलग-अलग फॉर्मेट्स को बढ़ावा मिले और महिला क्रिकेट में और तेजी लाना हमारी प्राथमिकता है।

शाह बोले- क्रिकेट को ज्यादा आकर्षक बनाने के लिए काम करेंगे

शाह ने कहा, आईसीसी अध्यक्ष की भूमिका के लिए चुने जाने पर डायरेक्टर्स और मेंबर बोर्ड्स के समर्थन और भरोसे के लिए आभारी हूं। ग्लोबल क्रिकेट में अपार संभावनाएं हैं और मैं हर मौके पर खेल को नई ऊंचाइयों पर ले जाने के लिए ICC टीम और सदस्य देशों के साथ काम करने के लिए उत्सुक हूं।

आईसीसी के चेयरमैन ग्रेग बार्कले का कार्यकाल 30 नवंबर को खत्म हुआ था। वे 2020 से इस पद पर थे। आईसीसी ने 20 अगस्त को बताया था कि बार्कले तीसरा कार्यकाल नहीं लेंगे। इसके बाद नए चेयरमैन के लिए आवेदन मांगे गए। नॉमिनेशन फाइल करने की आखिरी तारीख मंगलवार, 27 अगस्त तक जय के अलावा पद के लिए किसी और ने नॉमिनेशन नहीं भरा था। ऐसे में चुनाव नहीं हुआ और वे निर्विरोध चुन लिए गए।

जय शाह इसी साल 22 सितंबर को 36 साल के हुए हैं। वे आईसीसी के सबसे युवा चेयरमैन हैं। उनसे पहले बने सभी 15 चेयरमैन की उम्र 55 साल से ज्यादा रही है। 2006 में साउथ अफ्रीका के पर्सी सोन 56 साल की उम्र में सबसे युवा प्रेसिडेंट बने थे। जय शाह उनसे भी 20 साल छोटे हैं।

अहमदाबाद क्रिकेट बोर्ड से शुरुआत, 15 साल से सक्रिय

जय शाह ने 2009 में

अहमदाबाद के केंद्रीय क्रिकेट बोर्ड के कार्यकारी बोर्ड के सदस्य बने थे। सितंबर 2013 में वे गुजरात क्रिकेट एसोसिएशन के संयुक्त सचिव बने। 2015 में बीसीसीआई की वित्त समिति के सदस्य बने। 2019 में पहली बार बीसीसीआई के सेक्रेटरी बने। उसके बाद 2022 में दोबारा आईसीसी के सेक्रेटरी चुने गए।

शाह 2021 में एशियन क्रिकेट काउंसिल के प्रेसिडेंट बने। जनवरी 2024 में उन्हें दोबारा एससी प्रेसिडेंट चुना गया। 2022 में वह इंटरनेशनल क्रिकेट काउंसिल के फाइनेंस एंड कॉर्मशियल अफेयर्स कमेटी के चेयरमैन नियुक्त किए गए। उन्हें ओलिंपिक गेम्स के लिए आईसीसी ओलिंपिक वर्किंग ग्रुप का मेंबर भी बनाया गया।

चेयरमैन चुने जाने पर कहा था- क्रिकेट को ग्लोबल पहचान दिलाएंगे

जय शाह को 27 अगस्त को आईसीसी चीफ चुना गया था। तब उन्होंने कहा था, ₹मुझे ICC का चेयरमैन चुनने के लिए सभी का धन्यवाद। मैं क्रिकेट को ग्लोबली बढ़ाने के लिए काम करता रहूंगा। फिलहाल क्रिकेट के मल्टिपल फॉर्मेट को बढ़ावा देना जरूरी है। मैं खेल में नई टेक्नोलॉजी लाने की कोशिश करूंगा, साथ ही वर्ल्ड कप जैसे इवेंट्स को ग्लोबल मार्केट तक भी पहुंचाऊंगा।₹

शाह ने कहा था, ₹क्रिकेट का ओलिंपिक 2028 में शामिल होना बड़ी उपलब्धि है। इसे हम ओलिंपिक के जरिए ग्लोबल पहचान दिलाएंगे और ज्यादा देशों तक पहुंचाने की कोशिश करेंगे।

जय शाह आईसीसी चीफ का पद संभालने वाले 5वें भारतीय हैं। उनसे पहले जगमोहन डालमिया, शरद पवार, एन श्रीनिवासन और शशांक मनोहर ICC प्रमुख रह चुके हैं। ICC चीफ को 2015 से पहले तक प्रेसिडेंट कहा जाता था। इसके बाद से इसे चेयरमैन कहा जाने लगा।

पिछले चेयरमैन ग्रेग बार्कले न्यूजीलैंड के क्रिकेट एडमिनिस्ट्रेटर थे

आईसीसी के 15वें अध्यक्ष का कार्यकाल 30 नवंबर 2024 को खत्म हुआ है। वे 2016 से 2020 तक न्यूजीलैंड क्रिकेट बोर्ड के अध्यक्ष रहे थे। उस दौरान कीवी टीम वनडे वर्ल्ड कप के फाइनल तक पहुंची थी। हालांकि फाइनल में इंग्लैंड ने सुपर ओवर में उसे हराया था।

गुकेश ने पांचवीं बाजी में भी लिरेन से खेला ड्रॉ

फिलहाल बराबरी पर चल रहे हैं दोनों खिलाड़ी

सिंगापुर, 1 दिसंबर (एजेंसियां)। भारतीय ग्रैंडमास्टर डी गुकेश ने विश्व शतरंज चैंपियनशिप में गत चैंपियन चीन के डिंग लिरेन के खिलाफ लगातार दूसरी बार ड्रॉ खेला। सफेद मोहरों से खेलने वाले गुकेश को पांचवीं बाजी में अंक बांटने पड़े जिससे दोनों खिलाड़ियों के फिलहाल बराबर 2.5-2.5 अंक हैं। चैंपियनशिप जीतने के लिए उन्हें अभी भी पांच अंक हासिल करने होंगे।

सबसे कम उम्र के चैलेंजर हैं गुकेश

भारत के 18 वर्षीय गुकेश खिताब के लिए अब तक के सबसे कम उम्र के चैलेंजर हैं और उन्होंने बुधवार को तीसरी बाजी जीती थी। वहीं 32 वर्षीय लिरेन ने पहली बाजी जीती थी। दोनों ने दूसरी और चौथी बाजी में अंक बांटे थे।

तीसरी बाजी में गुकेश ने की थी वापसी

इससे पहले भारतीय ग्रैंडमास्टर की शुरुआत अच्छी नहीं रही थी। पहली बाजी में गुकेश को मैच को गैर जरूरी ढंग से जटिल बनाना भारी पड़ा था जिससे चीन के मौजूदा चैंपियन को जीत से आगाज करने का मौका दिया। गुकेश ने दूसरी बाजी में अच्छी वापसी करते हुए लिरेन को बराबरी पर रोका था।

हालांकि, गुकेश ने तीसरी बाजी में वापसी की थी और लिरेन को तीसरी बाजी में चालों की गणना करने में गलती का खामियाजा उठाना पड़ा था। उन्होंने इस दौरान बहुत अधिक समय लिया जिससे उनके लिए चीजें जटिल होती चली गई। खेल के पहले 120 मिनट में से 40 चालों तक समय में कोई इजाफा नहीं किया जाता। बीच में मुकाबला जटिल होने से लिरेन पर असर पड़ा और गुकेश ने सटीक चालों से उन पर दबाव बढ़ा दिया।

13वीं चाल तक गुकेश के पास एक घंटे की बढ़त थी और उन्होंने सिर्फ चार मिनट खर्च किए थे। लिरेन ने दूसरी तरफ एक घंटा और छह मिनट लगा दिए थे। यह मुकाबला केवल 23 चालों तक चला था। वहीं, इसके बाद चौथे और पांचवें दौर में दोनों खिलाड़ियों को अंक बांटने पर मजबूर होना पड़ा।

अंडर-19 एशिया कप 2024: पाकिस्तान से हारने के बाद भी बरकरार हैं उम्मीदें

ऐसे सेमीफाइनल में जगह बना सकता है भारत

दुबई, 1 दिसंबर (एजेंसियां)। शाहजैब खान की 159 रनों की शानदार पारी के दम पर पाकिस्तान ने एसीसी मेंस अंडर-19 एशिया कप के ग्रुप-ए मुकाबले में भारत को 43 रनों से हरा दिया। दुबई इंटरनेशनल क्रिकेट स्टेडियम में खेले गए इस मैच में पाकिस्तान ने पहले खेलते हुए 281 रनों का चुनौतीपूर्ण स्कोर बनाया। टीम ने इसके बाद भारत को 238 रनों पर समेटकर मैच को अपने नाम किया। मैच में पाकिस्तानी गेंदबाजों ने अपनी छाप छोड़ी और भारतीय बल्लेबाजों को बड़ी पारी नहीं खेलने दी।

भारत की ओर से निखिल कुमार ने सबसे ज्यादा 67 रन बनाए। पाकिस्तान के लिए सबसे ज्यादा तीन विकेट अली राजा ने लिए, जबकि अब्दुल सुभान और फहम उल हक को दो-दो विकेट मिले। इस मैच में हार के बाद भी भारत के सेमीफाइनल में पहुंचने के चांस बरकरार हैं। आइए आपको बताते हैं कि टीम अब भी

सेमीफाइनल के लिए कैसे क्वालीफाई कर सकता है।

ग्रुप ए में है टीम इंडिया

इस टूर्नामेंट में सभी टीमों को राउंड-रॉबिन फॉर्मेट में तीन मैच खेलने हैं। भारत को ग्रुप ए में पाकिस्तान, जापान और मेजबान देश संयुक्त अरब अमीरात के साथ रखा गया है। ग्रुप ए और ग्रुप बी से टॉप दो टीमें सेमीफाइनल में पहुंचेंगी। भारत को अभी जापान और यूएई के खिलाफ दो मैच खेलने हैं। ऐसे में भारत दोनों मैच जीतकर और मजबूत नेट रन रेट बनाए रखने से अगली स्टेज में पहुंचने की अपनी संभावनाएं मजबूत कर लेगा। यूएई अपने पहले मैच में जापान पर शानदार जीत के बाद फिलहाल टॉप पर है।

भारत को दर्ज करनी होगी बड़ी जीत

दूसरी ओर भारत जापान के खराब फॉर्म का फायदा उठाना चाहेगा, क्योंकि यूएई द्वारा निर्धारित 325 रनों के बड़े लक्ष्य का पीछा करते हुए वे सिर्फ 52 रन पर ऑलआउट हो गए थे। हालांकि, जापान और यूएई दोनों के खिलाफ जीतना भारत के लिए टॉप दो में जगह बनाने के लिए काफी नहीं होगा, खासकर तब जब यूएई वर्तमान में ग्रुप ए में सबसे आगे है और पाकिस्तान दूसरे नंबर पर है । फिलहाल भारत का नेट रन रेट -0.860 है, जबकि यूएई का +5.460 है। भारत को सेमीफाइनल में जगह पक्की करने के लिए 4 दिसंबर को यूएई और 2 दिसंबर को जापान पर बड़े अंतर से जीत दर्ज करनी होगी।

'अब तो कंफर्म हो गया' आरसीबी के नए कप्तान को लेकर पूर्व क्रिकेटर आकाश चोपड़ा का बड़ा बयान

मुंबई, 1 दिसंबर (एजेंसियां)। इन दिनों रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु के नए कप्तान को लेकर सोशल मीडिया पर काफी अटकलें लगाई जा रही है। पूर्व क्रिकेटर्स भी इसको लेकर अपनी राय रखते हुए दिखाई दे रहे हैं। आईपीएल 2024 में आरसीबी की कप्तानी करने वाले फाफ डु प्लेसिस को फ्रेंचाइजी पहले ही रिलीज कर चुकी थी, जिसके बाद मेगा ऑक्शन में दिल्ली केपिटल्स ने फाफ को खरीद लिया।

वहीं आरसीबी ने मेगा ऑक्शन में भी कोई बड़ा बल्लेबाज या ऐसा खिलाड़ी नहीं खरीदा है जिसको आईपीएल में कप्तानी का अनुभव हो।

ऐसे में फ्रेंचाइजी के पास आखिरी ऑप्शन विराट कोहली ही बचते हुए दिखाई दे रहे हैं। वहीं अब आरसीबी के नए कप्तान को लेकर टीम इंडिया के पूर्व क्रिकेटर आकाश चोपड़ा का बड़ा बयान सामने आया है।

मेगा ऑक्शन के बाद से ही अटकलें लगाई जा रही है कि विराट कोहली एक बार फिर से रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु की कप्तानी करते हुए दिखाई देंगे। वहीं इसको लेकर अब आकाश चोपड़ा ने अपने यूट्यूब पर बताया कि, अब तो लग रहा है कंफर्म

विराट कोहली ही आरसीबी के कप्तान होंगे।

क्योंकि कप्तानी के कैंडिडेट केएल राहुल और ऋषभ पंत को आरसीबी ने नहीं खरीदा, इसके अलावा फाफ डु प्लेसिस को भी नहीं लिया।

जब कोई नहीं लिया है तो लग रहा है आरसीबी ने फिर से विराट कोहली की तरफ जाने का मन बना लिया है। कोहली दोबरा आरसीबी के कप्तान बनेंगे। जिनको आरसीबी ने रिलीज किया उनको भी वापस लेना नहीं चाहा।

विल जैक्स के लिए भी आरसीबी ने आरटीएम का इस्तेमाल नहीं किया।

आगे आकाश चोपड़ा ने कहा कि, आरसीबी की पिछले 8-10 साल से यही कहानी रही है। विराट कोहली टीम में एक हाई प्रोफाइल इंडियन बल्लेबाज होते हैं और फिर फ्रेंचाइजी उस प्रोफाइल का कोई बल्लेबाजी टीम में नहीं रखती है।

हालांकि उस प्रोफाइल के बल्लेबाज ऑक्शन में कम ही आते हैं लेकिन इस बार टीम के पास मौका था लेकिन आरसीबी ने अपनी पुरानी कहानी को दोहराया। इस बार मेगा ऑक्शन में आरसीबी ने बल्लेबाजों पर 26.10 करोड़ रुपये खर्च किए हैं। जिसमें फ्रेंचाइजी ने 4 बल्लेबाजों को खरीदा, जिसमें सबसे महंगे फिल सॉल्ट रहे।

फिल को आरसीबी ने 11.50 करोड़ रुपये की कीमत पर खरीदा है। इसके अलावा जितेश शर्मा 11 करोड़, देवदत्त पड्डिकल 2 करोड़, स्वास्तिक चिकारा 30 लाख।

डोपिंग के आरोप पर आया स्वर्ण विजेता वीके विस्मया का बयान

बोलीं- चिकित्सक की सलाह पर ली थी दवा

नई दिल्ली, 1 दिसंबर (एजेंसियां)। एशियाई खेलों (जकार्ता 2018) की 4x400 मीटर रिले स्वर्ण विजेता धाविका वीके विस्मया ने डोपिंग के आरोपों को नकारते हुए कहा कि उन्होंने चिकित्सा कारणों से दवा का सेवन किया था और जांच के लिए नमूना देने से पहले इसकी पूरी जानकारी दी थी।

27 वर्षीय एथलीट के यूरिन का नमूना 15 अगस्त को कोच्चि के पास पेरंबूर में उनके घर पर एक प्रतियोगिता से इतर परीक्षण के लिए लिया गया था। राष्ट्रीय डोपिंग रोधी एजेंसी (नाडा) ने सितंबर में विस्मया को सूचित

किया था कि उनके यूरीन के नमूने में क्लोमीफीन था जो हार्मोन और मेटाबॉलिक मॉड्यूलेटर श्रेणी में आता है। यह डोपिंग मामले में प्रतिबंधित दवा है। क्लोमीफीन एक गैर-स्टेरायडल दवा है जिसका उपयोग चिकित्सकीय रूप से महिलाओं में ओव्युलेशन के लिए किया जाता है।

अब विस्मया ने इन आरोपों को नकारते हुए सोशल मीडिया पर एक लंबा चौड़ा पोस्ट किया है। विस्मया ने कहा कि उन्होंने चिकित्सा जरूरत के मुताबिक डॉक्टर की सलाह पर इस दवा का सेवन किया था। उन्होंने लिखा, मैं स्पष्ट करना चाहती हूं कि मुझे यह दवा मेरे डॉक्टर ने एक वैध चिकित्सा उद्देश्य (गर्भावस्था उपचार) के लिए दी थी। इसका खेल से जुड़े प्रदर्शन से कोई लेना-देना नहीं था।

क्राइस्टचर्च टेस्ट में न्यूजीलैंड की हार

इंग्लैंड ने 104 रन के टारगेट को 2 विकेट पर हासिल किया, डब्ल्यूटीसी में भारत को फायदा

क्राइस्टचर्च, 1 दिसंबर (एजेंसियां)। इंग्लैंड ने क्राइस्टचर्च में खेले जा रहे पहले टेस्ट में न्यूजीलैंड को 8 विकेट से हर दिया है। चौथे दिन इंग्लिश टीम ने मिले 104 रनों के टारगेट को 2 विकेट के नुकसान पर महज 12.4 ओवर में ही बना लिया। इसके साथ ही इंग्लैंड ने सबसे कम ओवरों में टेस्ट क्रिकेट में 100 से ज्यादा रनों के टारगेट चेज करने का वर्ल्ड रिकॉर्ड भी अपने नाम कर लिया। इससे पहले न्यूजीलैंड ने इसी ग्राउंड पर 18.4 ओवर में 109 रनों के टारगेट को हासिल किया था।

तीन टेस्ट मैचों की सीरीज में इंग्लिश टीम 1-0 से आगे हो गई है। इंग्लैंड ने इस मैच को जीतकर वर्ल्ड टेस्ट चैंपियनशिप में भारत का फायदा करा दिया है।

इंग्लैंड के जीत के हीरो हैरी ब्रूक और ब्रायडन कार्स रहे

इंग्लैंड के जीत के हीरो हैरी ब्रूक और ब्रायडन कार्स रहे। कार्स ने पूरे मैच में कुल 10 विकेट हासिल किया। उन्होंने पहले पारी में 19 ओवर गेंदबाजी की और 64 रन देकर 4 विकेट लिए। वहीं दूसरी पारी में उन्होंने 19.1 ओवर गेंदबाजी की और 42 रन देकर 6 विकेट लिए। इसके लिए उन्हें प्लेयर ऑफ द मैच भी चुना गया। वहीं हैरी ब्रूक ने पहली पारी में 197 गेंदों पर 171 रन की शानदार पारी खेली।

चौथे दिन कीवी टीम अपनी

पारी में 99 रन ही जोड़ पाई। इससे पहले तीसरे दिन का खेल समाप्त होने तक कीवियों ने 6 विकेट खोकर 155 रन बनाए थे। स्टंप्स तक डेरियल मिचेल 31 और नाथन स्मिथ 1 रन बना कर क्रीज पर थे। कीवी ने चौथे दिन 155/6 आगे खेलते हुए अपनी पारी में 35 रन ही जोड़ कर सातवां विकेट खो दिया। नाथन स्मिथ 190 के स्कोर पर आउट हो गए। वहीं आठवां विकेट भी 2 रन के बाद गिर गया। नौवां विकेट 209 और न्यूजीलैंड ने अपना आखिरी विकेट 254 रन पर खो दिया।

वहीं इंग्लिश टीम ने पहली पारी में 499 रन बनाए थे, जबकि न्यूजीलैंड ने 348 रन बनाए थे और दूसरी पारी में 254 रन बनाए थे। इस तरह इंग्लैंड को दूसरी पारी में 104 रन का टारगेट मिला। जिसे इंग्लैंड ने 2 विकेट खोकर बना लिए। जैकब बैथल ने नाबाद 50 और जो रूट 23 रन पर नॉटआउट रहे।

वर्ल्ड टेस्ट चैंपियनशिप 2023-25 के फाइनल की रेस फिलहाल 5 टीमों के बीच जंग है। भारत, ऑस्ट्रेलिया, साउथ अफ्रीका, श्रीलंका और न्यूजीलैंड WTC फाइनल के सबसे बड़े दावेदार हैं। इंग्लैंड के हाथों मिली हार से न्यूजीलैंड को टेबल में रैंकिंग पर कोई नुकसान नहीं हुआ, वे 4 नंबर पर ही बरकरार रहे, लेकिन उसका परसेंटेज पॉइंट घटकर 5 नंबर पर खड़ी श्रीलंका के बराबरी पर आ गया है। दोनों के 50-50 परसेंटेज पॉइंट रह गए हैं।कीवी टीम को सीधे फाइनल में जाने के लिए सीरीज के सभी मैच जीतने जरूरी थे, लेकिन अब उसे अगले दो मैच जीतकर भी दूसरी टीमों पर निर्भर रहना पड़ेगा।

ऑस्ट्रेलिया ने जिस खिलाड़ी को पर्थ में नहीं दिया मौका उसने जड़ा शतक

19 साल का बल्लेबाज अकेले टीम इंडिया पर पड़ा भारी

सिडनी, 1 दिसंबर (एजेंसियां)। टीम इंडिया और ऑस्ट्रेलिया की प्राइम मिनिस्टर्स XI के बीच पिंक बॉल से वॉर्म अप मैच खेला जा रहा है. कैनबरा में हुए इस मुकाबले में 19 साल के ऑस्ट्रेलियाई बल्लेबाज सैम कॉन्सटस ने महज 90 गेंद में शतक ठोक दिया. ओपनिंग करते हुए उन्होंने 97 गेंद में 107 रन की पारी खेली. बता दें पैट कमिंस की टीम फिलहाल ओपनिंग जोड़ी को लेकर परेशान है. इसके बावजूद कॉन्सटस को पर्थ टेस्ट में मौका नहीं दिया था. उन्होंने मिडिल ऑर्डर में बल्लेबाजी करने वाले नाथन मैकस्वीने को पहले टेस्ट में ओपन करने की जिम्मेदारी दी थी, जो भारत के सामने फेल रहे थे. भारत और ऑस्ट्रेलिया के बीच दूसरा टेस्ट एडिलेड में पिंक बॉल से खेला जाएगा. यह एक डे-नाइट टेस्ट होगा. इससे पहले ऑस्ट्रेलिया की प्राइम मिनिस्टर्स XI के खिलाफ टीम इंडिया पिंक बॉल से वॉर्म अप मैच खेल रही है. मुकाबला का पहला दिन बारिश के कारण रद्द होने के बाद दूसरे दिन कप्तान रोहित शर्मा ने टॉस जीतकर गेंदबाजी चुनी. प्राइम मिनिस्टर्स XI के लिए खेल रहे सैम कॉन्सटस अपने ओपनिंग मैट रेनशॉ के साथ बैटिंग करने आए.

22 रन पर उनकी टीम ने 2 विकेट गंवा दिए. इसके बाद कॉन्सटस ने पहले सिराज और आकाश दीप के कठिन स्पेल का सामना किया. फिर नजरें जमाने के बाद बड़े शॉट खेलने शुरू किए और 90 गेंद में शतक जड़ दिया. इस दौरान उन्होंने 14 चौके और 1 छक्का लगाया. हर्षित राणा के कहर के बावजूद वो टिके रहे. जहां उनकी टीम के 9 बल्लेबाजों ने मिलकर 126 रन बनाए, वहीं कॉन्टस ने अकेले 107 रन बना डाले.

फर्श से अर्श पर पहुंची ये टीम, पहली बार बनी चैंपियन

खेल डेस्क, 1 दिसंबर (एजेंसियां)। महिला बिग बैश लीग 2024 का खिताब मेलबर्न रेनेगेड्स ने जीत लिया है. पिछले सीजन में इस टीम का बेहद बुरा हाल था. तब यह टीम टूर्नामेंट में आखिरी स्थान पर रही थी. लेकिन इस बार मेलबर्न फर्श से सीधे अर्श पर पहुंच गई है. रविवार 1 दिसंबर को फाइनल मुकाबले में उसने ब्रिसबेन हीट को 7 रनों से हराया और पहली बार इस टूर्नामेंट की चैंपियन बनी. मेलबर्न क्रिकेट ग्राउंड में हुए WBBL के 10वें सीजन के फाइनल के दौरान मेलबर्न की टीम ने पहले बैटिंग करते हुए 142 रनों का लक्ष्य रखा था. लेकिन बारिश के कारण मुकाबले को घटाकर 12

ओवर का कर दिया गया, जबकि लक्ष्य 97 का कर दिया गया था. इसे चेज करते हुए ब्रिसबेन की टीम 90 रन बना सकी.

जीएचएमसी में जल्द ही डिवीजन स्तर पर बढ़ोतरी : पोन्नम प्रभाकर

हैदराबाद प्रभारी मंत्री ने पार्षदों के साथ बैठक की

हैदराबाद, 1 दिसंबर (स्वतंत्र वार्ता)। कांग्रेस सरकार के गठन के एक साल पूरे होने के मौके पर होने वाले कार्यक्रमों में मंत्री पोन्नम समेत जीएचएमसी के प्रमुख नेता, विधायक, नगरसेवक, डीसीसी के अध्यक्ष और विधानसभा के नेता हिस्सा लेंगे। इस महीने की 7, 8 और 9 तारीख को हैदराबाद में सरकार लोक प्रशासन प्रजा विजयोत्सवम-2024 के नाम से बड़े पैमाने पर कार्यक्रम चला रही है, जिसके तहत प्रभाकर ने एक समीक्षा बैठक आयोजित की। बैठक में मुख्य अतिथि के रूप में एआईसीसी प्रभारी दीपादास मुंशी, पीसीसी चीफ महेश कुमार गौड़, मुख्यमंत्री के सलाहकार वेन्नारेड्डी शामिल हुए। उन्होंने नेताओं को सार्वजनिक शासन वर्ष के अवसर पर हैदराबाद में की जाने वाली गतिविधियों पर निर्देश दिया। बैठक में कई महत्वपूर्ण निर्णय लिये गये। मंडलवार विशेष कार्यक्रम करने के साथ ही सरकार द्वारा चलायी जा रही योजनाओं के प्रति व्यापक जागरूकता लाने का सुझाव दिया गया। पार्षदों को सलाह दी गई कि वे लोगों के बीच रहें और उनकी समस्याओं के समाधान के लिए कदम उठायें। यह सुझाव दिया गया है कि सरकार को पार्टी के साथ समन्वय स्थापित करना चाहिए और जल्द ही जीएचएमसी डिवीजन में पदयात्रा आयोजित करके पार्टी को मजबूत करने की दिशा में कार्रवाई करनी चाहिए। जन शासन जन विजय उत्सव के तहत इस महीने की 7, 8 और 9 तारीख को हैदराबाद में बड़े पैमाने पर कार्यक्रम आयोजित किए जा रहे हैं, 7 तारीख को महिलाओं और योजनाओं के लाभार्थियों के साथ संभागों में कार्यक्रम किए जाने चाहिए, 8 तारीख को निर्वाचन क्षेत्रवार कार्यक्रम किए जाएं, 9 तारीख को तेलुगु तल्ली प्रतिमा का अनावरण होगा। मंत्री पोन्नम अधिकारियों की भागीदारी से हर घर को सरकारी योजनाओं के बारे में जागरूक करने के लिए कार्यक्रम चलाने का आदेश दिया। उन्होंने सुझाव दिया कि बीआरएस और भाजपा को आरोपों का सामना करना चाहिए। नेताओं को जीएचएमसी चुनावों के लिए समन्वय में काम करना चाहिए और सफलता का लक्ष्य रखना चाहिए। हैदराबाद में मुख्यमंत्री रेवंत रेड्डी अगले दो दिनों में करीब 20-30 हजार करोड़ रुपये से शहर के विकास को लेकर शिलान्यास और उद्घाटन करेंगे। समीक्षा बैठक को संबोधित करते हुए हैदराबाद के प्रभारी मंत्री पोन्नम प्रभाकर ने नेताओं को सार्वजनिक शासन की जीत में सभी को भागीदार बनाने का निर्देश दिया। सरकार द्वारा पहले से लागू 6 गारंटी योजनाओं, मुफ्त बस, 500 रुपये गैस, 200 यूनिट मुफ्त बिजली, आरोग्यश्री आदि की व्याख्या करने का सुझाव दिया गया है। उन्होंने कहा कि किसानों का 22 हजार करोड़ रुपये का कर्ज पहले ही माफ कर दिया गया है, जैसा कि देश में कहीं और नहीं किया गया है और कल महबूब नगर कार्यक्रम स्थल पर बाकी किसानों के लिए भी इसकी घोषणा की गई। मंत्री पोन्नम प्रभाकर ने आश्वासन दिया है कि वह जल्द ही संभागवार पदयात्रा करेंगे और पार्टी कार्यकर्ताओं से सीधे मुलाकात करेंगे। यह बात सामने आई है कि जिन लोगों ने पार्टी में मेहनत की है उन्हें पद मिलेंगे। एआईसीसी प्रभारी दीपादास मुंशी ने कहा कि कांग्रेस सरकार के सत्ता में आने के बाद महिलाओं को सशक्त बनाने के लिए कई कार्यक्रम चलाए गए हैं, मुंशी ने कहा कि देश में जितनी योजनाएं यहां लागू की जा रही हैं, उतनी कहीं नहीं।

जीएचएमसी में पार्टी कमजोर थी और नेताओं को चुनाव जीतने के लिए पार्टी को मजबूत करने के लिए विशेष गतिविधियों के साथ आगे बढ़ने का निर्देश दिया। पीसीसी प्रमुख महेश कुमार गौड़ ने ग्रेटर हैदराबाद नगरसेवकों के प्रमुख नेताओं को निर्देश दिया। उन्होंने कहा कि सरकार बनने के एक साल के अंदर कई कार्यक्रम लागू किये गये हैं और अगले 4 साल में सरकार और विकास करेगी। बैठक में मेयर गदवाल विजयलक्ष्मी, डिप्टी मेयर श्रीलता शोभन रेड्डी, राज्यसभा सदस्य अनिल कुमार यादव, विधायक दानम नागेंद्र, विधायक श्री गणेश, एमएलसी अमीर अली खान, निगम अध्यक्ष फहीम, नुथी श्रीकांत गौड़, मेट्टू साई कुमार, डीसीसी अध्यक्ष रोहिन रेड्डी, पार्टी के विधायक और 23 पार्षद शामिल हुए।

यूट्यूब चैनल के रिपोर्टर पर केस

मंचेरियल, 1 दिसंबर (स्वतंत्र वार्ता)। यूट्यूब चैनल पर काम करने वाले एक पत्रकार पर रविवार को नेन्नल मंडल के कोनमपेट गांव में एक सरकारी शिक्षक का कथित तौर पर अपमान करने का मामला दर्ज किया गया। नेन्नल के सब-इंस्पेक्टर के प्रसाद ने बताया कि कोनमपेट के रामतेनकी श्रीनिवास और एनके 24 यूट्यूब चैनल के रिपोर्टर के खिलाफ यूट्यूब पर टीचर के खिलाफ फर्जी स्टोरी प्रकाशित करने और उसे वॉट्सऐप ग्रुप पर शेयर करने का मामला दर्ज किया गया है। टीचर ने पुलिस में शिकायत दर्ज कराई है। मामले की जांच शुरू कर दी गई है।

प्रिज्म क्लब और किचन में लगी आग

हैदराबाद, 1 दिसंबर (स्वतंत्र वार्ता)। शनिवार देर रात गच्चीबोवली स्थित प्रिज्म क्लब और किचन में आग लग गई। आग क्लब स्थित इमारत की पहली मंजिल पर लगी। आग लगने के बाद तनाव की स्थिति पैदा हो गई। स्थानीय पुलिस मौके पर पहुंची और इलाके की घेराबंदी कर दी। सूचना मिलने पर दमकलकर्मी मौके पर पहुंचे और आग पर काबू पाया। आग लगने के कारण का पता लगाया जा रहा है।

एकीकृत विद्यालयों के निर्माण के पीछे नारायण गुरुमूर्ति की प्रेरणा : भट्टी

कोल्लम/हैदराबाद, 1 दिसंबर (स्वतंत्र वार्ता)। उपमुख्यमंत्री भट्टी विक्रमार्क ने कहा कि एकीकृत परिवार सर्वेक्षण और एकीकृत विद्यालयों के निर्माण जैसे कार्यक्रम श्री नारायण गुरु से प्रेरणा लेकर शुरू किए गए हैं, जिन्होंने पूरी मानवता के लिए एक जाति, एक धर्म और ईश्वर की वकालत की थी। नारायण गुरु का प्रभाव और प्रभाव केवल केरल पर ही नहीं, बल्कि पूरे देश पर है। भट्टी विक्रमार्क रविवार को केरल के कोल्लम में नारायण गुरु मुक्त विश्वविद्यालय के तत्वावधान में आयोजित नारायण गुरु अंतर्राष्ट्रीय पत्र सांस्कृतिक महोत्सव में विशेष अतिथि थे। सेमिनार में मुख्य अतिथि के रूप में बोलते हुए भट्टी ने कहा कि नारायण गुरु के जीवन और उनकी शिक्षाओं को याद करना उनके लिए एक मूल्यवान अवसर और सम्मान की बात है। समानता पर नारायण गुरु का दृढ़ विश्वास और राय, मानवतावाद और समानता पर उनके संदेश वर्तमान समय में महत्वपूर्ण हो गए हैं। नारायण गुरु एक आध्यात्मिक नेता और समाज सुधारक और दार्शनिक से कहीं बढ़कर थे। केरल समाज में विभिन्न जातियों में अत्याचारों को समाप्त करके, नारायण गुरु ने केरल समाज में सुधार किया। नारायण गुरु द्वारा अरुविप्पुरम श्री शिवालयम की स्थापना एक साधारण आध्यात्मिक कार्य नहीं था, बल्कि जातिगत भेदभाव के

खिलाफ एक साहसिक बयान था। उन्होंने कहा कि डॉ.बी.आर. अंबेडकर और नारायण गुरु के बीच समानताएं हैं और नारायण गुरु को याद करते हुए डॉ. अंबेडकर के बारे में बात करना उचित है। जहां नारायण गुरु ने समाज में बदलाव की प्रेरणा दी, वहीं बी आर अंबेडकर ने भारतीय संविधान के माध्यम से समानता की अवधारणा को स्थिर किया। भट्टी विक्रमार्क ने बताया कि नारायण गुरु और अंबेडकर दोनों की विरासत राष्ट्र के इतिहास में न्याय और समानता के स्तंभ बन गए। उन्होंने आगे कहा कि नारायण गुरु का नेतृत्व केरल राज्य की सामाजिक प्रगति में मुख्य योगदान देने वाला कारक था। भट्टी ने कहा कि उनका मानना था कि शिक्षा ही लोगों को स्वतंत्रता और राहत देगी और केरल को एक शिक्षित, स्वस्थ और लैंगिक समानता वाला राज्य बनाने में उनकी भूमिका महत्वपूर्ण है। तेलंगाना और केरल राज्यों के बीच विचार प्रक्रियाओं में समानता को देखते हुए उपमुख्यमंत्री ने कहा कि तेलंगाना में कोमुराम भीम और चकली इलम्मा ने नारायण गुरु की शिक्षाओं की तर्ज पर समानता के लिए विद्रोह का झंडा फहराया था और ये दोनों क्षेत्र समानता और न्याय के प्रतिनिधि हैं। आधुनिक भारत में विभाजन के संदर्भ में नारायण गुरु का एकता संदेश अधिक प्रासंगिक और महत्वपूर्ण हो गया है। हम सभी को उनके दिखाए मार्ग पर आगे बढ़ना चाहिए और सामाजिक और आर्थिक चुनौतियों का उचित तरीके से सामना करना चाहिए। उन्होंने कहा, नारायण गुरु ने केवल सपना नहीं देखा, बल्कि अपने सपने को साकार करने के लिए साहसिक कदम भी उठाए। अब हमारा कर्तव्य है कि हम उनकी विरासत को आगे ले जाएं और समाज में विभाजन को दूर करें तथा सभी को एक ऐसे समाज के निर्माण में अपनी भूमिका निभानी चाहिए, जहां सभी निष्पक्ष और सम्मानजनक तरीके से रह सकें। भट्टी ने लोगों से नारायण गुरु के जीवन इतिहास से प्रेरणा लेने और समानता, न्याय और मानवता के सिद्धांतों वाले समाज का निर्माण करने का आह्वान किया।

उपमुख्यमंत्री ने कहा कि इससे न केवल महान नेता के प्रति हमारा सम्मान प्रदर्शित होगा, बल्कि हम भारत की विशेषता को संरक्षित करने की जिम्मेदारी भी निभाएंगे।

मेजर जनरल अजय मिश्रा ने टीएएसए जीओसी का पदभार संभाला

हैदराबाद, 1 दिसंबर (स्वतंत्र वार्ता)। मेजर जनरल अजय मिश्रा ने रविवार को सिकंदराबाद में तेलंगाना और आंध्र सब एरिया (टीएएसए) के जनरल ऑफिसर कमांडिंग (जीओसी) का पदभार संभाला। जनरल ऑफिसर को 1992 में 'रेजिमेंट ऑफ आर्टिलरी' में कमीशन दिया गया था।

राष्ट्रीय रक्षा अकादमी, खड़कवासला और भारतीय सैन्य अकादमी, देहरादून के पूर्व छात्र, वे रक्षा सेवा स्टाफ कॉलेज, वेलिंगटन और आर्मी वॉर कॉलेज, महू के उच्च कमान पाठ्यक्रम के स्नातक हैं। जनरल ऑफिसर ने नई दिल्ली स्थित नेशनल डिफेंस कॉलेज में प्रतिष्ठित एनडीसी कोर्स में भी भाग लिया। मेजर जनरल अजय मिश्रा के पास स्टाफ और ऑपरेशन का बहुत बड़ा अनुभव है, साथ ही उत्तरी सीमाओं पर उनकी गहरी नजर है। उन्होंने वास्तविक नियंत्रण रेखा (एलएसी) पर अपनी रेजिमेंट और ब्रिगेड की कमान संभाली है। उन्हें दो बार चीफ ऑफ आर्मी स्टाफ कमेंडेशन कार्ड से सम्मानित किया जा चुका है।

कार्यभार संभालने के बाद जनरल ऑफिसर ने शपथ ली कि वह अपने शानदार पूर्ववर्तियों के अच्छे काम को जारी रखने, विभिन्न हितधारकों तक पहुंच को बढ़ावा देने और टीएएसए की ऑपरेशनल तैयारियों को बढ़ाने का प्रयास करेंगे।

बारिश के पूर्वानुमान से फसल कटाई पर असर

हैदराबाद, 1 दिसंबर (स्वतंत्र वार्ता)। मौसम पूर्वानुमान के अनुसार अगले 4 दिनों में बारिश और आसमान में बादल छाए रहने की संभावना है, जिससे तेलंगाना के किसानों की चिंता बढ़ती जा रही है। कई किसान धान की कटाई में व्यस्त हैं, उनकी अधिकांश फसल खुले में पड़ी है, या तो कटाई केंद्रों पर ले जाई जा रही है या फिर सूख रही है। चक्रवात फेंगल के प्रभाव के कारण नागरकर्नूल, नलगोंडा, सूर्यपेट, खम्मम और भद्राद्री कोत्तागुडेम सहित कई जिलों में मध्यम वर्षा होने की संभावना है। इससे किसानों में संभावित फसल नुकसान को लेकर चिंता बढ़ गई है।

निजामाबाद और नलगोंडा जैसे प्रमुख धान उत्पादक जिलों में खरीद प्रक्रिया अपने अंतिम चरण में पहुंच गई है। हालांकि, खम्मम, भद्राद्री, कोत्तागुडेम और भूपलपल्ली जैसे देर से रोपाई वाले जिलों में यह अभी भी जोरों पर है। खरीफ विपणन सत्र के लिए 91 लाख मीट्रिक टन के लक्ष्य के मुकाबले नागरिक आपूर्ति निगम ने अब तक करीब 32 लाख मीट्रिक टन की खरीद की है। इसका मतलब है कि लक्ष्य का करीब दो तिहाई हिस्सा अभी भी हासिल किया जाना बाकी है। औसतन 33 जिलों में से प्रत्येक से करीब एक लाख मीट्रिक टन की खरीद की गई है।नागरिक आपूर्ति विभाग ने किसानों को सचेत कर दिया है और खरीद केंद्रों से मिलों तक स्टॉक को तेजी से पहुंचाने के लिए आवश्यक संख्या में तिरपाल और परिवहन की व्यवस्था की है।

निवेशकों को धोखा देने के आरोप में जौहरी गिरफ्तार

हैदराबाद, 1 दिसंबर (स्वतंत्र वार्ता)। जुबली हिल्स पुलिस ने रविवार को शहर के एक जौहरी कांति दत्त को निवेशकों से धोखाधड़ी करने के आरोप में गिरफ्तार किया। जुबली हिल्स में एक प्रमुख आभूषण की दुकान चलाने वाले व्यक्ति ने कथित तौर पर टॉलीवुड और बॉलीवुड अभिनेताओं सहित कई लोगों से व्यापार में उनके निवेश पर भारी मुनाफा दिलाने का आश्वासन देकर भारी धनराशि एकत्र की थी।

जौहरी ने कथित तौर पर अपने व्यवसाय को बढ़ावा देने के लिए कई अभिनेताओं को काम पर रखा था। हालांकि, वह कथित तौर पर कोई लाभ देने में विफल रहा और निवेशकों को धोखा दिया। शिकायत पर जुबली हिल्स पुलिस ने मामला दर्ज कर कांति दत्त को गिरफ्तार कर लिया है। उसे अदालत में पेश किया जा रहा है।

वेश्यालय पर छापा, तीन गिरफ्तार

युगांडा के नागरिक हैं संचालक

हैदराबाद, 1 दिसंबर (स्वतंत्र वार्ता)। हैदराबाद कमिश्नर टास्क फोर्स ने शनिवार रात को तरनाका के एक फ्लैट में युगांडा के नागरिकों द्वारा संचालित एक वेश्यालय पर छापा मारा। पुलिस ने रैकेट चलाने वाली दो युगांडा की महिला नागरिकों और एक स्थानीय ग्राहक को पकड़ा। टास्क फोर्स के डीसीपी वाईवीएस सुधींद्र ने बताया कि सूचना के आधार पर पुलिस ने तरनाका के नागार्जुन नगर स्थित घर पर छापा मारा, जहां तरनाका की रहने वाली 42 वर्षीय महिला नयेबरे डोरेन युगांडा निवासी कोमुहांगी रीता (22) की मदद से पिछले चार महीने से वेश्यावृत्ति का धंधा चला रही थी।

महिलाओं ने 'लोकैंटो' पर फोन नंबर पोस्ट किए और ग्राहकों से संपर्क किया। गिरोह ने सेवा की व्यवस्था के लिए ग्राहकों से 4,000 रुपये से 10,000 रुपये तक की राशि एकत्र की। दोनों महिलाओं और ग्राहक को आगे की कार्रवाई के लिए उस्मानिया विश्वविद्यालय पुलिस स्टेशन को सौंप दिया गया है। मामला दर्ज कर लिया गया है।

संगारेड्डी में महिला का मिला जला हुआ शव

संगारेड्डी, 1 दिसंबर (स्वतंत्र वार्ता)। हथनूरा मंडल के नस्थीपुर के बाहरी इलाके में रविवार सुबह एक महिला का जला हुआ शव मिला। सूचना के बाद हथनूरा पुलिस मौके पर पहुंची और शव को पोस्टमार्टम के लिए संगारेड्डी के सरकारी अस्पताल में पहुंचाया। पुलिस को घटनास्थल पर महिला की पहचान के लिए कोई सबूत नहीं मिला। आशंका है कि उसकी हत्या कर शव को आग के हवाले कर दिया गया। इस बीच, पुलिस हत्यारों की पहचान के लिए सीसीटीवी कैमरे की फुटेज की जांच कर रही है। मामला दर्ज कर लिया गया है।

लंगर हाउस में सड़क दुर्घटना में दंपत्ति की मौत

हैदराबाद, 1 दिसंबर (स्वतंत्र वार्ता)। शनिवार देर रात सड़क दुर्घटना में एक दम्पति की मौत हो गई। रिपोर्ट के अनुसार, दंपत्ति दिनेश गोस्वामी (35) और मोना ठाकुर (33) बाइक पर जा रहे थे, तभी लंगर हाउस के पास एक तेज रफ्तार कार ने उनकी मोटरसाइकिल को टक्कर मार दी। दुर्घटना में लगी चोटों के कारण दो लोगों की मौके पर ही मौत हो गई। पुलिस ने मौके पर पहुंचकर शवों को पोस्टमार्टम के लिए उस्मानिया जनरल अस्पताल के शवगृह में रखवा दिया है। पुलिस ने मामला दर्ज कर लिया है।

बाघ के आने का इंतजार कर रहा चिड़ियाघर

2017 से हो रही कोशिश

वारंगल, 1 दिसंबर (स्वतंत्र वार्ता)। यहां काकतीय प्राणी उद्यान में बाघ के लिए लंबे इंतजार ने कई पशु प्रेमियों को निराश कर दिया है। चिड़ियाघर के अधिकारी 2017 से ही बाघ को लाने की कोशिश कर रहे हैं, लेकिन विभिन्न कारणों से वे इसे हासिल नहीं कर पाए और देरी से चिड़ियाघर के दर्शकों में काफी निराशा हो रही है। केंद्रीय चिड़ियाघर प्राधिकरण (सीजेडए) ने पहले ही चिड़ियाघर में बाघ के बाड़े को मंजूरी दे दी है और बाड़े का 90 प्रतिशत काम पूरा हो चुका है।

2018 में चिड़ियाघर के अधिकारियों ने दावा किया था कि बाघ के बाड़े पर काम तेजी से चल रहा है और एक या दो महीने में पूरा होने की उम्मीद है लेकिन वारंगल के लोगों के लिए निराशा की बात यह है कि बाघ लाने का प्रस्ताव ठंडे बस्ते में डाल दिया गया है। बाघों का एक जोड़ा लाने का प्रस्ताव मुख्य वन्यजीव वार्डन (सीडब्ल्यूडब्ल्यू) और केंद्रीय चिड़ियाघर प्राधिकरण (सीजेडए) को सौंपा गया था, लेकिन उसके बाद कुछ खास नहीं हुआ। काकतीय चिड़ियाघर के अधिकारी कथित तौर पर एक बाघ लाने के लिए नेहरू प्राणी उद्यान, हैदराबाद

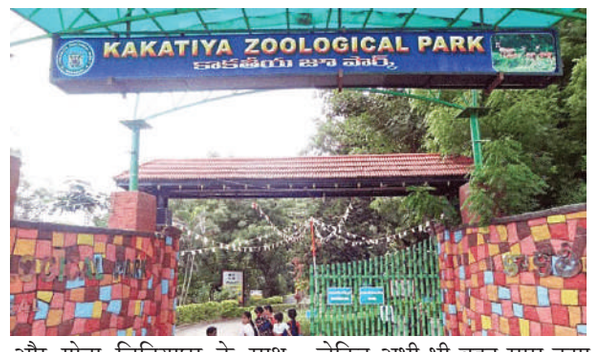

और गोवा चिड़ियाघर के साथ चर्चा कर रहे हैं। नियमों के अनुसार, सीजेडए की मंजूरी के बाद, चिड़ियाघर के अधिकारी अपनी जरूरतों के हिसाब से अपने समकक्षों के साथ जंगली जानवरों का आदान-प्रदान करते हैं।

चिड़ियाघर के अधिकारी दूसरे चिड़ियाघर की जरूरत के हिसाब से चिंकारा, सांभर और नीलगाय की अदला-बदली करने के लिए तैयार हैं, जो बाघ की अदला-बदली करेंगे। लेकिन अभी तक इस दिशा में कुछ ख़ास नहीं हुआ है। चिड़ियाघर में बाघों का एक बड़ा बाड़ा बनाने का काम पिछले कई महीनों से चल रहा है। इस साल अप्रैल में 70 लाख रुपये की लागत से निर्माण कार्य ठेकेदार को सौंपा गया था और अगस्त तक इसे पूरा कर लिया जाना था, लेकिन अभी भी बहुत सारा काम बाकी है। बाघ बाड़े का निर्माण 2,386 वर्ग मीटर क्षेत्र में किया जा रहा है और यह इतना विशाल होगा कि भविष्य में इसमें एक और बाघ रखा जा सकेगा।

अधिकारी बाड़े के निर्माण में देरी के लिए मानसून के दौरान हुई बारिश को जिम्मेदार ठहरा रहे हैं और दावा कर रहे हैं कि काम पूरा होने के बाद वे एक बार फिर राज्य सरकार के पास बाघ लाने का प्रस्ताव रखेंगे। चिड़ियाघर के अधिकारियों के अनुसार, फिलहाल एक बाघ लाने की योजना बनाई जा रही है और भविष्य में एक और बाघ भी जोड़ा जा सकता है। वर्तमान में काकतीय चिड़ियाघर में 18 बाड़े हैं और 42 विभिन्न प्रजातियों के 427 जंगली जानवर प्रदर्शन पर हैं।

साथी से हुई टाइगर की मुलाकात

आसिफाबाद में देखा गया बाघों का जोड़ा

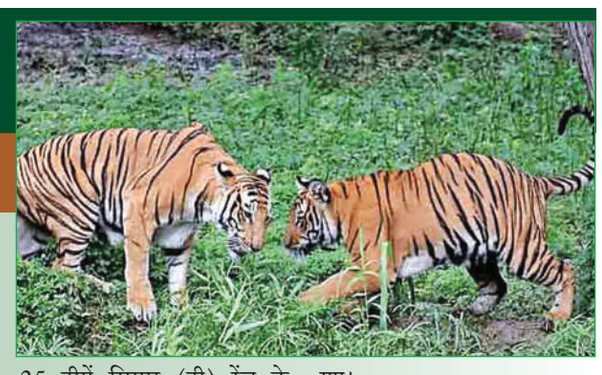

कुमराम भीम आसिफाबाद, 1 दिसंबर (स्वतंत्र वार्ता)। रविवार को सिरपुर (टी) मंडल के इटिकालापहाड़ गांव के पास एक नाले में बाघों के एक जोड़े को देखे जाने से वन अधिकारी खुश हैं, जो अब उम्मीद कर रहे हैं कि यह जोड़ा इस क्षेत्र में बाघ परिवार का पालन-पोषण कर सकता है। वन अधिकारियों ने बताया कि उनके कर्मचारियों ने एक बाघ के जोड़े को नदी के किनारे घूमते हुए देखा और उनकी दहाड़ भी सुनी। उन्होंने बताया कि पेड़ के तने पर बाघ द्वारा सीमा घोषित करने के लिए बनाए गए निशान भी पाए गए। उन्हें संदेह है कि एक नर बाघ किसी मादा बाघ के साथ मिल गया होगा और वे दोनों नदी के किनारे ही रह रहे होंगे। अधिकारियों का मानना है कि महाराष्ट्र के यवतमाल और नांदेड़ जिलों में पैनगंगा वन्यजीव अभयारण्य से जॉनी के रूप में लोकप्रिय नर बाघ, एक मादा बाघ से मिलने में कामयाब रहा, जो पड़ोसी राज्य के ताड़ोबा अंधारी टाइगर रिजर्व से सिरपुर (टी) में आ गई थी।

उन्हें उम्मीद है कि दोनों जल्द ही इस क्षेत्र में बाघों का एक परिवार विकसित करेंगे। जॉनी ने अक्टूबर में अपनी मैराथन यात्रा शुरू की थी और मादा साथी की तलाश में लगभग 400 किलोमीटर की यात्रा की थी। इस बीच, शनिवार को सिरपुर (टी) मंडल के डुब्बागुडा गांव में किसान राउथु सुरेश पर हमला करने वाले बाघ की गतिविधियों पर नजर रखने के लिए 10 विशेष टीमें बनाई गई हैं। इनके अलावा, 25 टीमें सिरपुर (टी) रेंज के जंगलों की जांच कर रही हैं, जबकि बाघों की तस्वीरें रिकॉर्ड करने के लिए 30 सीसीटीवी कैमरे लगाए गए हैं। शुक्रवार को कागजनगर मंडल के इसगांव गांव में एक महिला को मार डालने वाले बाघ का पता लगाने के लिए जंगलों में ड्रोन कैमरे भी उड़ाए गए।

दूसरी ओर, कवाल टाइगर रिजर्व के फील्ड डायरेक्टर एस संथाराम ने मंचेरियल के एक निजी अस्पताल में निगरानी में रह रहे सुरेश का हालचाल जाना। उन्होंने कहा कि बाघों की आवाजाही पर नज़र रखकर जनहानि को रोकने के लिए कदम उठाए जा रहे हैं।

Printed and published by Dr. Gireesh Sanghi on behalf of AGA Publications Ltd., at 396, Lower Tankbund, Hyderabad-500080 Editor: *Dhirendra Pratap Singh *responsible for selection of news under the PRB Act. Postal Licence H/SD/380/21-22, Phone:27644999. Fax:27642512, RNI No.69340/98, Regd.:No.AP/HIN/00196/01/1/97/TC.